श्रीजिनाय नमः ।

जिन ज्ञान दीपक ।

प्रकाशक—

चिमनीराम पूनमचन्द बैंद ।

मु० लाडनूं—(मारवाड़) ।

मुद्रक—

महालचन्द बयेद ।

ओसवाल प्रेस

१९, सीनागोग स्ट्रीट, (हमामगली)

कलकत्ता ।

वीर निर्वाणाब्द २४५८

प्रथम बार २०००] [अमूल्य ।

3)

पुस्तक मिलनें का पता :—

(१) चिमनीराम पूनमचंद बेद।

मु० लाडनूं (मारवाड़)

(२) चिमनीराम जशवन्तमल।

१६, वन्फिल्डस लेन, कलकत्ता।


विषय-सूची

नवकार ।

॥ दोहा ॥

नमूं देव अरिहन्त नित्य जिनाधिपति जिनराय ॥
द्वादश गुण सहित जे वंदू मन वच काय ॥ १ ॥
नमूं सिद्ध गुण अष्टयुत आचार्य मुनिराज ॥
गुण षट तीस संयुक्त जे प्रणमुं भव दधि पाज ॥ २ ॥
प्रणमूं फुन उवज्झाय प्रति गुण पणवीस उदार ॥
नमूँ सर्व साधु निमल सप्तबीस गुण धार ॥ ३ ॥
द्वादश अठ षट तीस फुन वली पणवीस प्रगट ॥
सप्तबीस ए सर्वही गुण वर इकसय अठ ॥ ४ ॥
नोकारवाली ना जिके मिणियां जगत् मझार ॥
एक २ जे गुण तणों एक २ मिणियों सार ॥ ५ ॥

॥ णमो अरिहन्ताणं ॥

नमस्कार थावो अरिहंत भगवंतने ।

ते अरिहंत भगवंत केहवा छे १२ बारे गुणे करी सहित छे ते कहे छे अनन्तो ज्ञान १ अनन्तो दर्शण २ अनन्तो बल ३ अनन्तो सुख ४ देव ध्वनि ५ भा मण्डल ६ फटिक सिंहासण ७ अशोकवृक्ष ८ पुष्प विष्टी ९ देव दुन्दुभि १० चमरवींजे ११ छत्र धारे १२

॥ णमो सिद्धाणं ॥

नमस्कार थावो सिद्ध भगवंतने ।

ते सिद्ध भगवंत केहवा छे । आठ गुणे करी सहित छै ते कहे छे । १ केवल ज्ञान केवलदर्शण २ आत्मीक सुख ३ चायक समकित ४ अटल अवगाहणा ५ अमु-त्तिभाव ६ अगुरलघुभाव ७ अन्तराय रहित ८

॥ णमो आयरियाणं ॥

नमस्कार थावो आचार्य महाराजने ।

ते आचार्य महाराज केहवा छे । ३६ षट तीस गुणे करी सहित छै ते कहे छे । आरज देश ना उपनां १ आरज कुल ना उपनां २ ज्ञानवंत ३ रूपवंत ४ थिर संघयण ५ धीरजवंत ६ आलोवणां दूसरा पासे कहे नहीं ७ पोतेरा गुण पोते वर्णन न करे ८ कपटी न होवे ९ शब्दादिक पांच इन्द्री जीते १० राग द्वेष रहित होवे ११ देश ना जाण होवे १२ काल नां जाण होवै १३ तीक्ष्ण बुद्धि होवै १४ घणा देशांरी भाषा जाणै १५ पंच आचार सहित १६ सूत्रांरा जाण होवै १७ अर्थरा जाण होवै १८ सूत्र अर्थ दोनां रा जाण होवै १९ कपटकारी पूछे तो छलावे नहीं २० हेतुना जाण होवै २१ कारण रा जाण होवै २२

दिष्टान्त ना जाण होवै २३ न्यायरा जाण होवै २४ सीखणे समर्थ २५ प्रायश्चितना जाण होवै २६ थिर परिवार २७ आदेज वचन बोलै २८ परीषह जीते २९ समय परसमय ना जाण ३० गम्भीर होवै ३१ तेजवन्त होवै ३२ पण्डित विचक्षण होवै ३३ सोम चन्द्रमाजिसा ३४ शूरवीर होवै ३५ बहु गुणी होवै ३६

पुनः

५ पांच इन्द्री जीतै ४ च्यार कषायटालै नववाड़ सहित ब्रह्मचर्य्य पालै ५ पंच महाव्रत पालैं ५ पंच आचार पालै ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ तप ४ वीर्य ५ ५ पंच समिति पालै इर्या १ भाषा २ एषणा ३ आदान भंड निक्षेपण ४ उच्चार पासवण ५ ३ तीन गुप्ती मन १ वचन २ कायगुप्ती ३

इति षट त्रीस गुण संपूर्ण ।

॥ णमो उवज्झायाणं ॥

नमस्कार थावो उपाध्याय महाराजने ।

ते उपाध्याय महाराज केहवा छे २५ पचवीस गुणे करी सहित छे ते कहे छे । १४ चवदे पूरब ११ इग्यारे अंग भणे भणावै ।

पुनः

११ इग्यारे अंग १२ बारे उपांग भणे भणावै ।

॥ णमो लोएसव्वसाहूणं ॥

नमस्कार थावो लोक ने विषे सर्व साधु मुनिराजों ने ।

ते साधु मुनिराज केहवा छे सत्तबीस गुणे करी सहित छे ते कहै छे। ५ पंच महाव्रत पाले ५ पंच इन्द्री जीते ४ च्यार कषाय टाले भाव संचेय १५ करण संचेय १६ जोग संचेय १७ क्षम्यावन्त १८ वेराग्यवन्त १९ मनसमाधारणीया २० बचन समाधारणीया २१ कायसमाधारणीया २२ नाणसंपना २३ दर्शनसंपना २४ चारित्र संपना २५ वेदनी आयां समो अहियासे २६ मरणआयां समो अहियासे २७ ॥

इति संपूर्णम् ।

सामायक लेणेकी पाटी ।

करेमिभन्ते सामायियं सावज्जं जोगं पच्चखामि जावनियम (मुहूर्त एक) पज्जवासामि दुविहिं तिविहेणं नकरेमि नकारवेमि मनसा वायसा कायसा तस्स भन्ते पड़िक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ।

सामायक पारणेकी पाटी ।

नवमा सामायक व्रतनें विषे ज्यो कोई अतिचार दोष लागोहुवे ते आलोउं १ सामायकमें सुमता

न कीधी विकथाकीधी हुवे अणपूरी पारी होय पारवो विसार्‍यो होय मन बचन कायाका जोग माठा परव-र्ताया होय सामायकमें राज कथा देशकथा स्त्रीकथा भत्तकथा करी होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

अथ तिख्खुताकी पाटी ।

तिक्खुतो अयाहिणं पयाहिणं वन्दामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवूयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वन्दामि ।

॥ २४ तीर्थंकरोंके नाम ॥

१	श्री	ऋषभनाथजी	१३	श्री	विमलनाथजी
२	,,	अजितनाथजी	१४	,,	अनन्तनाथजी
३	,,	सम्भवनाथजी	१५	,,	धर्म्मनाथजी
४	,,	अभिनन्दनजी	१६	,,	शान्तिनाथजी
५	,,	सुमतिनाथजी	१७	,,	कुन्थुनाथजी
६	,,	पद्म प्रभुजी	१८	,,	अरनाथजी
७	,,	सुपार्श्व नाथजी	१९	,,	मल्लिनाथजी
८	,,	चन्द्राप्रभुजी	२०	,,	मुनिसुव्रतजी
९	,,	सुविधनाथजी	२१	,,	नमिनाथजी
१०	,,	शीतलनाथजी	२२	,,	अरिष्टनेमिजी
११	,,	श्रेयांसनाथजी	२३	,,	पार्श्वनाथजी
१२	,,	वासुपूज्यजी	२४	,,	महावीर स्वामी

॥ अथ पंच पद वन्दणा ॥

पहले पदे श्री सीमंधर स्वामी आदि देई जघन्य २० (बीस) तीर्थंकर देवाधिदेवजी उत्कृष्टा १६० (एकसौ साठ) तीर्थंकर देवाधिदेवजी पंच महाविदेह क्षेत्रांके विषे विचरैछे अनन्त ज्ञानका धणी अनंत दर्शनका धणी अनंत चारित्रका धणी अनंत बल का धणी एक हजार आठ लक्षणाका धारणहार चौसठ इन्द्रांका पूजनीक चौतीस अतिशय पैंतीस वाणी द्वादश गुण सहित विराजमान छे ज्यां अरिहन्ता से मांहरी वन्दना तिक्खुत्ताका पाठसे मालूम होज्यो।

दूजे पदे अनंता सिद्ध पनरा भेदे अनंती चोबीसी आठ कर्म खपायनें सिद्ध भगवान मोक्ष पहुंचता तिहां जनम नहीं जरा नहीं रोग नहीं सोग नहीं मरण नहीं भय नहीं संयोग नहीं वियोग नहीं दुःख नहीं दारिद्र नहीं फिर पाछा गर्भावासमें आवै नहीं सदा काल शाश्वता सुखामें बिराजमान छे इसा उत्तम सिद्ध भगवंता से मांहरी वन्दना तिक्खुत्ताका पाठ से मालूम होज्यो।

तीजे पदे जघन्य दोय कोड़ केवली उत्कृष्टा नव कोड़ केवली पञ्चमाहविदेह क्षेत्रांमें विचरै छे केवल

ज्ञान केवल दर्शनका धारक लोकालोक प्रकाशक सर्व द्रव्य क्षेत्रकाल भाव जाणे देखे छै ज्यां केवलीजी से मांहरी वन्दना तिक्खुताका पाठसे मालूम होज्यो ।

चौथे पद गणधरजी आचार्य्यजी उपाध्यायजी स्थविरजी ते गणधरजी महाराज केहवा छै अनेक गुणे करी विराजमान छै आचार्यजी महाराज केहवा छै षटतीस गुणे करी विराजमान छै उपाध्यायजी महाराज केहवा छै पच्चवीस गुणे करी विराजमान छै स्थिविरजी महाराज केहवा छै धर्मसे डिगता हुआ प्राणीनें थिरकरी राखे शुद्ध आचार पाले पलावै ज्यां उत्तम पुरुषांसे मांहरी वन्दना तिक्खुताका पाठसे मालूम होज्यो ।

पञ्चमें पदे म्हांरा धर्म आचारर्य्य गुरु पूज्य श्री श्री श्री १००८ श्रीश्री कालूरामजी स्वामी (वर्त्तमान आचार्य्यको नांव लेणो) आदि जघन्य दोय हजार कोड़ साधु साध्वी जाभेरा उत्कृष्टा नव हजार कोड़ साधु साध्वी अढ़ाई द्वीप पन्दरै खेत्रांमें विचरै छै ते महा उत्तम पुरुष केहवा छै पञ्च महाव्रतका पालणहार छव कायाना पीयर पञ्च समिति सुमता तीन गुप्ती गुप्ता नववाड़ सहित ब्रह्मचर्य्यका पालक दशविधि यति धर्मका धारक बारै भेदे तपस्याका करणहार

सतरै भेदे संयमका पालणहार बावीस परीषहका जीतणहार सतावीस गुणे करी संयुक्त बयालीस दोष टाल आहार पाणीका लेवणहार बावन अणाचारका टालणहार निरलोभी निरलालची संसारना त्यागी मोक्षना अभिलाषी संसारसे पूठा मोक्षसे सहामा सचितका त्यागी अचितका भोगी अस्वादीत्यागी वैरागी तेड़िया आवै नहीं नोंतियाजीमै नहीं मोलकी वस्तु लेवै नहीं कनक कामणीसे न्यारा वायरानी परै अप्रतिबन्ध विहारी इसा महापुरुषांसे मांहरी वन्दना तिक्खुताका पाठसे मालूम होज्यो ।

॥ अथ पच्चीस बोल ॥

१ पहिले बोलै गति च्यार ४

नर्कगति १ तिर्यंचगति २ मनुष्यगति ३ देवगति ४

२ दूजे बोलै जाति पांच ५

एकेन्द्री १ बेइन्द्री २ तेइन्द्री ३ चोइन्द्री ४ पंचेंद्री ५

३ तीजे बोलै काया छव

पृथ्वीकाय १ अप्पकाय २ तेउकाय ३ बाउकाय ४ वनस्पतिकाय ५ त्रसकाय ६

४ चौथे बोलै इन्द्री पांच

श्रोतइन्द्री १ चक्षुइन्द्री २ घ्राणइन्द्री ३ रसइन्द्री स्पर्श इन्द्री ५

५ पांचमें बोलै पर्याय ६

आहारपर्याय १ शरीरपर्याय २ इन्द्रियपर्याय ३ श्वासोश्वासपर्याय ४ भाषापर्याय ५ मनपर्याय ६

६ छठे बोलै प्राण १०

श्रोतइन्द्री बलप्राण १ चक्षुइन्द्री बलप्राण २ घ्राण-इन्द्री बलप्राण३ रसेन्द्री बलप्राण ४ स्पर्श इन्द्रीबल प्राण ५ मनबलप्राण ६ बचनबलप्राण ७ कायाबल प्राण ८ श्वासोश्वासबलप्राण ९ आउषोबलप्राण १०

७ सातमें बोलै शरीर पांच ५

औदारिक शरीर १ वैक्रियशरीर २ आहारिक शरीर ३ तैजसशरीर कार्मणशरीर ५

८ आठवें बोलै जोग पंद्राह १५

४ च्यार मनका

सत्यमनजोग १ असत्यमनजोग २ मिश्रमनजोग ३ व्यवहारमन जोग ४

४ च्यारबचनका

सत्यभाषा १ असत्यभाषा २ मिश्रभाषा ३ व्यवहार भाषा ४

७ सातकायाका

औदारिक १ औदारिक मिश्र २ वैक्रिय ३ वैक्रिय मिश्र ४ आहारिक ५ आहारिक मिश्र ६ कार्मण जोग ७

९ नवमें बोले उपयोग बारह १२

५ पांच ज्ञान

मतिज्ञान १ श्रुतिज्ञान २ अवधिज्ञान ३ मन पर्यवज्ञान ४ केवलज्ञान ५

३ तीन अज्ञान

मतिअज्ञान १ श्रुतिअज्ञान २ विभंगअज्ञान ३

५

४ च्यारदर्शन

चक्षुदर्शन १ अचक्षुदर्शन २ अवधिदर्शन केवल दर्शन ४

१० दशमें बोले कर्म आठ ८

ज्ञानावर्णी कर्म १ दर्शणावर्णी कर्म २ वेदनी कर्म ३ मोहनी कर्म ४ आयुष्य कर्म ५ नामकर्म ६ गौत्रकर्म ७ अंतरायकर्म ८

११ ग्यारहमें बोले गुण स्थान चौदाह १४

१ पहिलो मिथ्याती गुणस्थान।

२ दूजो सास्वादान समदृष्टि गुणस्थान।

३ तीजो मिश्र गुणस्थान।

४ चौथो अव्रती समदृष्टि गुणस्थान ।

५ पांचमो देशविरती श्रावक गुणस्थान ।

६ छट्ठो प्रमादी साधु गुणस्थान ।

७ सातमों अप्रमादी साधु गुणस्थान ।

८ आठवों नियट बादर गुणस्थान ।

९ नवमोअनियट बादर गुणस्थान ।

१० दशमो सूक्ष्म संप्राय गुणस्थान ।

११ इग्यारमूं उपशान्ति मोह गुणस्थान ।

१२ बारमूं चीण मोहनी गुणस्थान ।

१३ तेरमूं संयोगी केवली गुणस्थान ।

१४ चौदमूं अयोगी केवली गुणस्थान ।

१२ बारमें बोले पांच इन्द्रियों की तेवीस विषय

श्रोतइन्द्री की तीन विषय—

जीव शब्द १ अजीव शब्द २ मिश्र शब्द ३

चक्षु इन्द्रीकी पांच विषय—

कालो १ पीलो २ धोलो ३ रातो ४ लीलो ५

घ्राण इन्द्री की दोय विषय—

सुगन्ध १ दुर्गन्ध २

रस इन्द्री की पांच विषय—

खट्टो १ मीठो २ कड़वो ३ कसायलो ४ तीखो ५

स्पर्श इन्द्रीकी आठ विषय—

हलको १ भारी २ खरदरो ३ सुहालो ४ लूखो ५
चोपड्यो ६ ठंढो ७ उन्हो ८

१३ तेरमें बोलै दश प्रकार का मिथ्याती।

१ जीवनें अजीव श्रद्धै ते मिथ्याती।
२ अजीवनें जीव श्रद्धै ते मिथ्याती।
३ धर्मनें अधर्म श्रद्धै ते मिथ्याती।
४ अधर्मनें धर्म श्रद्धै ते मिथ्याती।
५ साधुनें असाधु श्रद्धै ते मिथ्याती।
६ असाधुनें साधु श्रद्धै ते मिथ्याती।
७ मार्गनें कुमार्ग श्रद्धै ते मिथ्याती।
८ कुमार्गनें मार्ग श्रद्धै ते मिथ्याती।
९ मोक्षगयानें अमोक्षगया श्रद्धै ते मिथ्याती।
१० अमोक्षगयानें मोक्षगया श्रद्धै ते मिथ्याती।

१४ चौदमें बोलै नवतत्वको जाणपणो तीका।

११५ एकसौ पन्दराह बोल

१४ चौदाह जीवका—

सूक्ष्म एकेन्द्रीका दोय भेद—

१ पहिलो अपर्याप्तो २ दूसरो पर्याप्तो

बादर एकेन्द्री का दोय भेदः—

३ तीजो अपर्याप्तो ४ चौथो पर्याप्तो

बेइन्द्रीका दोय भेदः—

५ पांचमूं अपर्याप्तो ६ छट्ठो पर्याप्तो

तेइन्द्रीका दोय भेदः—

७ सातमूं अर्याप्तो ८ आठमूं पर्याप्तो

चौइन्द्रीका दोय भेदः—

९ नवमूं अर्याप्तो १० दशमुं पर्याप्तो

असन्नी पंचेन्द्रीका दोय भेदः—

११ इग्यारमूं अपर्याप्तो १२ बारमूं पर्याप्तो

सन्नी पंचेन्द्रीका दोय भेदः—

१३ तेरमूं अपर्याप्तो १४ चौदमूं पर्याप्तो

१४ चौदे अजीवका भेदः—

धर्मास्ति कायका ३ तीन भेदः—

खंध, देश, प्रदेश,

अधर्मास्ति कायका तीन भेदः—

खंध, देश, प्रदेश,

आकाशास्ति कायका ३ भेदः—

खंध; देश, प्रदेश,

कालको दशमूं भेद (ए दश भेद अरूपी छै)

पुद्गलास्ति कायका ४ भेदः—

खन्ध, देश, प्रदेश, प्रमाणु

९ पुन्य नव प्रकारेः—

अन्नपुन्य १ पाण पुन्य २ लैणपुन्य* ३ सयणपुन्य* ४ वत्थपुन्य ५ मनपुन्य ६ बचनपुन्य ७ काया-पुन्य ८ नमस्कारपुन्य ६

१८ पाप अठारे प्रकार:—

प्राणाति पात १ मृषावाद * २ अदत्तादान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ६ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ पैशुन्य * १४ परपरीवाद १५ रतिअरति १६ मायामृषा १७ मिथ्यादर्शन शल्य १८

२० बीस आस्रवका:—

मिथ्यात्व आस्रव १ अव्रत आस्रव २ प्रमाद आस्रव ३ कषाय आस्रव ४ जोग आस्रव ४ प्राणातिपात जीवकी हिंसा करैते आस्रव ६ मृषावाद झूठ बोले ते आस्रव ७ अदत्तादान चोरी करैते आस्रव ८ मैथुन सेवै ते आस्रव ६ परिग्रह राखै ते आस्रव १० श्रुत इन्द्री मोकली मेलै ते आस्रव ११ चक्षु इन्द्री मोकली मेलै ते आस्रव ११ घ्राण इन्द्री मोकली मेलै ते आस्रव १३ रस इन्द्री मोकली मेलै ते आस्रव १४ स्पर्श इन्द्री मोकली

* लेण जागाँ जमीनादिक

* सयण पाट बाजोटा दिक

* वाद बोलना

* पैशून्य चुगली

मेलै ते आस्रव १५ मनप्रवतावै ते आस्रव १६ वचनप्रवर्तावे ते आस्रव १७ कायाप्रवर्तावे ते आस्रव १८ भराडोपगरणमेलतांअजयणाकरै * ते आस्रव १९ सुई कूसाग्रमात्र सेवै ते आस्रव २०

२० बीस संबरका

सम्यक् ते संबर १ व्रत ते संबर २ अप्रमाद ते संबर ३ अकषाय संबर ४ अजोग संबर ५ प्राणातिपात न करै ते संबर ६ मृषावाद न बोलै ते संबर ७ चोरी न करै ते संबर ८ मैथुन न सेवैते संबर ९ परिग्रह न राखै ते संबर १० स्रुत इन्द्री वशकरै ते संबर ११ चक्षु इन्द्री वश-करै ते संबर १२ घ्राणइन्द्री वश करै ते संबर १३ रसेइन्द्री वशकरै ते संबर १४ स्पर्शइन्द्री वशकरै ते संबर १५ मन वशकरै ते संबर १६ वचन वशकरै ते संबर १७ काया वशकरै ते संबर १८ भराड उपगरण मेलतां अजयणा करै ते संबर सुई कुसाग्र न सेवै ते संबर २०

१२ निरजरा बारै प्रकारः—

अणसण * १ उणोदरी * २ भिक्षाचरी ३ रसपरि-

---

* अजयणा—विना यत्न

* उणोदरी—कमखानां

अणसण—उपवासादिक

त्याग ४ कायाक्लेश ५ प्रतिसंलेषना ६ प्रायश्चित्त ७ विनय ८ वेयावच्च ९ सिज्झाय १० ध्यान ११ विउसग्ग * १२

४ बंध च्यार प्रकारेः—

प्रकृतिबंध १ स्थितिबंध २ अनुभाग बन्ध ३ प्रदेशबंध ४

४ मोक्ष च्यार प्रकारेः—

ज्ञान १ दर्शण २ चारित्र ३ तप ४

१५ पंदरमें बोले आत्मा आठः—

द्रव्य आत्मा १ कषाय आत्मा २ योग आत्मा ३ उपयोग आत्मा ४ ज्ञान आत्मा ५ दर्शण आत्मा ६ चारित्र आत्मा ७ वीर्य आत्मा ८

१६ सोलमें बोले दण्डक २४:—

७ सात नारकियां को एक दण्डक

१० दश दण्डक भवनपतिकाः—

असुर कुमार १ नाग कुमार २ सोवन कुमार विद्युत कुमार ४ अग्नि कुमार ५ द्वीप कुमार ६ उदधिकुमार ७ दिसा कुमार ८ वायु कुमार ९ स्तनित कुमार १०

५ पांच थावरका पञ्च दण्डकः—

---

* विउसग्ग—निवर्तवो

पृथ्वीकाय १ अप्पकाय २ तेउकाय ३ वायुकाय ४ वनस्पतिकाय ५

१ बेइन्द्री को सतरमों

१ तेइन्द्री को अठारमों

१ चौइन्द्री को उगणीसमों

१ तिर्यञ्च पंचेन्द्री को बीसमों

१ मनुष्य पंचेंद्री को इकवीसमों

१ वाणव्यंतर देवतांको बावीसमों

१ ज्योतषी देवतांको तेबीसमों

१ वैमांनिक देवतांको चौबीसमों

१७ सतरवें बोले लेश्या छः :—

कृष्ण लेश्या १ नील लेश्या २ कापोत लेश्या ३ तैजु लेश्या ४ पद्म लेश्या ५ शुक्ल लेश्या ६

१८ अठारमें बोले दृष्टि ३ तीन :—

सम्यक् दृष्टि १ मिथ्या दृष्टि २ सममिथ्या दृष्टि ३

१९ उगणीसमें बोले ध्यान ४ च्यार :—

आर्तध्यान १ रौद्रध्यान२ धर्मध्यान३ शुक्लध्यान४

२० बीसमें बोले षट द्रव्यको जाणपणो

धर्मास्तिकायनें पांचा बोलां ओलखीजे :—

द्रव्यथकी एक द्रव्य खेतथी लोक प्रमाणे काल

थकी आदि अन्त रहित भावथी अरूपी गुणथकी जीव पुद्गल ने हालवा चालवा को साझ, अधर्मास्तिकाय ने पांचा बोलां ओलखीजे :— द्रव्यथी एक द्रव्य खेत्रथी लोक प्रमाणे काल थकी आदि अन्त रहित भाव थी अरूपी गुणथी थिररहवानों साझ, आकाशास्तिकायनें पांचां बोलांकरी ओलखीजे :— द्रव्यथी एक द्रव्य खेत्रथी लोक अलोक प्रमाणे कालथी आदि अन्त रहित भाव थी अरूपी गुणथी भाजन गुण कालनें पांचा बोलां करी ओलखीजे :—द्रव्यथी अनन्ता द्रव्य खेत्रथी अढ़ाई द्वीप प्रमाणे कालथी आदि अन्त रहित भावथी अरूपी गुणथी वर्त्तमान गुण पुद्गलास्तिकायनें पांच बोल करी ओलखीजे :—द्रव्यथी अनन्ता द्रव्य खेत्रथी लोक प्रमाणे कालथी आदि अन्त रहित भावथी रूपी गुणथी गले* मले, जीवास्तिकायनें पांच बोल करी ओलखीजे :— द्रव्यथी अनन्ता द्रव्य खेत्रथी लोक प्रमाणे कालथी आदि अन्त रहित भावथी अरूपी गुणथी चैतन्य गुण।

---

* गले मले = घटै वधै अथवा जुदा एकत्र होय।

२१ इकवीसमें बोले राशि २ होय :—

जीवराशि १ अजीवराशि २

२२ बावीसमें बोले श्रावक का १२ बारे व्रत :—

१ पहिला व्रतमें श्रावक स्थावर जीव हणवाको प्रमाण करै और त्रस जीव हालतो चालतो हणवाको सउपयोग त्याग करै।

२ दूजा व्रतमें मोटको झूठ बोलवाका सउपयोग त्याग करै।

३ तीजा व्रतमें श्रावक राजडण्डे लोकभण्डे इसी मोटकी चोरी करवाका त्याग करै।

४ चौथा व्रतमें श्रावक मर्याद उपरांत मैथुन सेवा का त्याग करै।

५ पांचमां व्रतमें श्रावक मर्यादा उपरांत परिग्रह राखवाका त्याग करै।

६ छट्ठा व्रतके विषे श्रावक दशों दिशिमें मर्यादा उपरान्त जावाका त्याग करै।

७ सातवां व्रतके विषे श्रावक उपभोग परिभोग का बोल २६ छबीस छे जिणारी मर्यादा उपरांत त्याग करै तथा पन्दराह कर्मादानको मर्यादा उपरान्त त्याग करै।

८ आठमा ब्रतके विषे श्रावक मर्यादा उपरान्त अनर्थ दण्डका त्याग करै।

९ नवमां ब्रतके विषे श्रावक सामायककी मर्याद करै।

१० दशमां बृतके विषै श्रावक देसावगासी संवरकी मर्याद करै।

११ इग्यारमूं ब्रत श्रावक पोषह करै।

१२ बारमूं बृत श्रावक शुद्ध साधु निर्गंथनें निर्दोष आहार पाणी आदि चउदे प्रकार दान देवे।

१३ तेवीसमें बोले साधुजीका पञ्च महाबृत :—

१ पहिला महाबृतमें साधुजी सर्वथा प्रकारे जीव हिंसा करै नहीं करावे नहीं करतानें भलो जाणे नहीं मनसे बचनसे कायासे।

२ दूसरा महाबृतमें साधुजी सर्वथा प्रकार झूठ बोले नहीं बोलावे नहीं बोलतां प्रते भलो जाणे नहीं मनसे बचनसे कायासे।

३ तीजा महाबृतमें साधुजी सर्वथा प्रकारे चोरी करै नहीं करावे नहीं करतां प्रते भलो जाणे नहीं मनसे बचनसे कायांसे।

४ चौथा महाबृतमें साधुजी सर्वथा प्रकारे मैथुन

सेवै नहीं सेवावे नहीं सेवतां प्रते भलो जाणै नहीं मनसे बचनसे कायासे ।

५ पंचमां महाव्रतमें साधुजी सर्वथा प्रकारे परिग्रह राखे नहीं रखावे नहीं राखतां प्रते भलो जाणै नहीं मनसे बचनसे कायासे ।

२४ चौबीसमें बोले भांगा ४९ गुणचास :—

करण ३ तीन जोग ३ तीनसे हुवे ।

करण ३ तीनका नाम—करू' नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं, जोग ३ तीनका नाम—मनसा, बायसा कायसा ।

आंक ११ इग्यारेको भांगा ९ :—

एक करण एक जोगसे कहणां, करू' नहीं मनसा, करू' नहीं वायसा, करू' नहीं कायसा । कराऊं नहीं मनसा, कराऊं नहीं बायसा, कराऊं नहीं कायसा। अनुमोदूं नहीं मनसा, अनुमोदूं नहीं बायसा, अनुमोदूं नहीं कायसा ९ :—

आंक १२ बाराको भांगा ९:—

एक करण दोय जोगसे, करू' नहीं मनसा बायसा, करू' नहीं मनसा कायसा, करू' नहीं बायसा कायसा। कराऊं नहीं मनसा बायसा, कराऊं नहीं मनसा कायसा, कराऊं नहीं

वायसा कायसा । अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा, अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा, अनुमोदूं नहीं वायसा कायसा ।

आंक १३ तेराको भांगा ३ तीन :—

एक करण तीन जोगसे, करूं नहीं मनसा वायसा कायसा, कराऊं नहीं मनसा वायसा कायसा, अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा कायसा ।

आंक २१ को भांगा ९ :—

दोय करण एक जोगसे, करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा, करूं नहीं कराऊं नहीं वायसा, करूं नहीं कराऊं नहीं कायसा । करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं वायसा, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा । कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं वायसा, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा ।

आंक २२ बाईसको भांगा ९ नव :—

दोय करण दोय जोगसे, करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा वायसा, करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा कायसा, करूं नहीं कराऊं नहीं वायसा कायसा, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा ।

करू नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा, करू नहीं अनुमोदूं नहीं बायसा कायसा। कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा बायसा, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा. कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं बायसा कायसा।

आंक २३ तेबीसको भांगा ३ तीन:

दोय करण तीन जोगसे, करू नहीं कराऊं नहीं मनसा, बायसा, कायसा, करू नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा कायसा, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा कायसा।

आंक ३१ इकतीसको भांगा ३ तीन:

तीन करण एक जोगसे, करू नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा, करू नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं बायसा, करू नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा।

आंक ३२ बत्तीसको भांगा ३ तीन:

तीन करण दोय जोगसे, करू नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा, करू नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा, करू नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं बायसा कायसा।

आंक ३३ तेतीसको भांगो १ एकः

तीन करण तीन जोगसे, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा कायसा ।

२५ पचीसमें बोलै चारित्र पांचः

सामायक चारित्र १ छेदोस्थापनीय चारित्र २ पडिहार विशुद्ध चारित्र ३ सूक्ष्म सम्पराय चारित्र ४ यथाख्यात चारित्र ५

॥ इति पच्चीस बोल सम्पूर्णम् ॥



॥ अथ पानाकी चरचा ॥



१ जीव रूपीकि अरूपी, अरूपी किणन्याय कालो पीलो नीलो रातो धोलो ए पांच वर्ण नहीं पावे इण न्याय।

२ अजीव रूपीकि अरूपी, रूपी अरूपी दोनूं ही छै किणन्याय धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय काल ए च्यारूं तो अरूपी और पुद्गलास्तिकाय रूपी।

३ पुन्य रूपीकि अरूपी, रूपी ते किणन्याय पुन्यते शुभ कर्म, कर्म ते पुद्गल पुद्गल ते रूपी ही छै।

४ पाप रूपीकि अरूपी, रूपी ते किणन्याय पापते अशुभ कर्म कर्मते पुद्गल पुद्गल ते रूपी ही छै।

५ आस्रव रूपीकि अरूपी, अरूपी ते किणन्याय आस्रव जीवका परिणाम छै, परिणामते जीव छै, जीव ते अरूपी छै, पांच वर्ण पावे नहीं इण न्याय।

६ संवर रूपीकि अरूपी अरूपी किणन्याय पांच वर्ण पावे नहीं।

७ निर्जरा रूपीकि अरूपी अरूपी छै ते किणन्याय निर्जरा जीवका परिणाम छै पांच वर्ण पावे नहीं दूणा न्याय।

८ बंध रूपीकि अरूपी, रूपी किणन्याय बंध ते शुभ अशुभकर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै पुद्गल ते रूपी छै।

९ मोक्ष रूपीकि अरूपी अरूपी छै ते किणन्याय समस्त कर्मासे मुकावे ते मोक्ष अरूपी ते जीव सिद्ध थया ते मां पांच वर्ण पावे नहीं दूणान्याय।

॥ लडी दूजी सावद्य निर्वद्यकी ॥

१ जीव सावद्यकि निर्वद्य दोनूं ही छै ते किणन्याय चोखा परिणामां निर्वद्य खोटा परिणामा सावद्य छै।

२ अजीव सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं अजीव छै।

३ पुन्य सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं अजीव छै।

४ पाप सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं अजीव छै।

५ आस्रव सावद्य निर्वद्य, दोनूं ही छै किणन्याय मिथ्यात्व आस्रव अव्रत आस्रव प्रमाद आस्रव, कषाय आस्रव, ए च्यार तो एकान्त, सावद्य, छै

शुभ जोगां से निर्जरा होय जिण आसरी निर्वद्य छै अशुभ जोग सावद्य छै।

६ संबर सावद्यकै निर्वद्य निर्वद्य छै ते किणन्याय कर्मा नें रोके ते निर्वद्य छै।

७ निरजरा सावद्यकै निर्वद्य निर्वद्य छै ते किणन्याय कर्म तोड़वारा परिणाम निर्वद्य छै।

८ बंध सावद्यकै निर्वद्य दोनूं नहीं ते किणन्याय अजीव छै इण न्याय।

९ मोक्ष सावद्यके निर्वद्य, निर्वद्य, सकल कर्म मूकाय सिद्ध भगवंत थया ते निर्वद्य छै।

॥ लडी तीजी आज्ञा मांहि बाहिरकी ॥

१ जीव आज्ञा मांहि कै बारे, दोनूं छै ते किणन्याय जीवका चोखा परिणाम आज्ञा मांहि छै, खोटा परिणाम आज्ञा बाहिर छै।

२ अजीव आज्ञा मांहिकै बाहिर, दोनूं नहीं अजीव छै।

३ पुन्य आज्ञा मांहि बाहिर दोनूं नहीं अजीव छै इणन्याय।

४ पाप आज्ञा मांहि बारे दोनूं नहीं अजीव छै।

५ आस्रव आज्ञा मांहिके बारे, दोनूंडू छै, ते किण न्याय, आस्रव नां पांच भेद छै तिणमें मिथ्यात्व अव्रत प्रमाद कषाय ए च्यार तो आज्ञा बाहिर छै अने जोग नां दोय भेद शुभ जोग तो आज्ञा. मांहि छै अशुभ जोग आज्ञा बाहिर छै ।

६ संवर आज्ञा मांहिकें बाहर, आज्ञा मांहि छै । ते किणन्याय कर्म रोकवारा परिणाम आज्ञा मांहि छै ।

७ निर्जरा आज्ञा मांहि कै बाहिर, आज्ञा मांहि छै ते किणन्याय कर्म तोड़वारा परिणाम आज्ञा मांहि छै ।

८ बंध आज्ञा मांहि कै बाहिर, दोनूं नहीं ते किण न्याय, आज्ञा मांहि बाहिर तो जीव हुवे ए बंध तो अजीव छै इणन्याय ।

९ मोक्ष आज्ञा मांहि कै बाहिर, आज्ञा मांहि छै ते किणन्याय, कर्म मुकाय सिद्ध थया ते आज्ञामें छै

॥ लडी चौथी जीव अजीवकी ॥

१ जीव ते जीव छै कै अजीव, जीव, ते किणन्याय सदाकाल जीवको जीव रहसी अजीव कदे हुवे नहीं ।

२ अजीव ते जीव छै के अजीव छै, अजीव छै अजीव को जीव किण ही कालमें हुवै नहीं ।

३ पुन्य जीव छै के अजीव छै, अजीव छै ते किण-न्याय पुन्य ते शुभकर्म शुभ कर्मते पुद्गल छै पुद्गल ते अजीव छै ।

४ पाप जीव छै के अजीव छै, अजीव छै किणन्याय पाप ते अशुभ कर्म पुद्गल छै पुद्गल ते अजीव छै ।

५ आस्रव जीव छै के अजीव छै जीव छै, ते किण-न्याय शुभ अशुभ कर्म ग्रहै ते आस्रव छै कर्म ग्रहै ते जीव ही छै ।

६ संवर जीवके अजीव, जीव छै ते किणन्याय कर्म रोके ते जीव ही छै ।

७ निर्जरा जीवके अजीव जीव छै ते किणन्याय कर्म तोड़े ते जीव छै ।

८ बंध जीवके अजीव छै, अजीव छै, ते किण न्याय शुभ अशुभ कर्मको बंध अजीव छै ।

६ मोक्ष जीव के अजीव, जीव छै, किणन्याय समस्त कर्म मूकावे ते मोक्ष जीव छै ।

॥ लडी पांचवीं जीव चोरके साहूकार ॥

१ जीव चोरके साहूकार, दोनूं छै किणन्याय चोखा परिणामा साहूकार छै माठा परिणामा चोर छै ।

२ अजीव चोरके साहूकार दोनूं नहीं किणन्याय चोर साहूकार तो जीव हुवे ये अजीव छे।

३ पुन्य चोरके साहूकार. दोनूं नहीं अजीव छे।

४ पाप चोरके साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छे।

५ आस्रव चोरके साहूकार दोनूं छे किणन्याय च्यार आस्रव तो चोर छे अने अशुभ जोग पण चोर छे शुभ जोग साहूकार छे।

६ संवर चोरके साहूकार साहूकार छे किणन्याय कर्म रोकवारा परिणाम साहूकार छे।

७ निर्जरा चोरके साहूकार, साहूकार छे किणन्याय कर्म तोड़वारा परिणाम साहूकार छे।

८ बंध चोरके साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छे।

९ मोक्ष चोरके साहूकार साहूकार किणन्याय कर्म मूंकायकर सिद्ध थया ते साहूकार छे।

लडी छठी जीव छांडवा जोगके आदरवा जोगकी।

१ जीव छांडवा जोगके आदरवा जोग छांडवा जोग छे किणन्याय पोते जीवनूं भाजन करे अनेरा जीव पर ममत्व भाव न करे।

२ अजीव छांडवा जोगके आदरवा जोग, छांडवा जोग छे किणन्याय अजीव छे।

३ पुन्य छांडवा जोगके आदरवा जोग, छांडवा जोग छे किणन्याय पुन्य ते शुभ कर्म पुद्गल छे कर्म ते छांडवा ही जोग छे।

४ पाप छांडवा जोगके आदरवा जोग, छांडवा जोग छे किणन्याय पाप ते अशुभ कर्म छे जीवनें दुख-दाई छे ते छांडवा जोग छे।

५ आस्रव छांडवा जोगके आदरवा जोग, छांडवा जोग छे किणन्याय आस्रव द्वारे जीवरे कर्म लागे छे आस्रव कर्म आवाना बारणा छे ते छांडवा जोग छे।

६ संवर छांडवा जोगके आदरवा जोग, आदरवा जोग छे किणन्याय कर्म रोके ते संवर छे ते आदरवा जोग छे।

७ निर्जरा छांडवा जोगके आदरवा जोग, आदरवा जोग छे किणन्याय देशथी कर्म तोड़े देशथी जीव उज्जल थाय ते निर्जरा छे ते आदरवा जोग छे।

८ बन्ध छांडवा जोगके आदरवा जोग, छांडवा जोग छे, ते किणन्याय शुभ अशुभ कर्म नो बन्ध छांडवा जोग ही छे।

९ मोक्ष छांडवा जोगके आदरवा जोग, आदरवा जोग ते किसान्याय सकल कर्म खपावे जीव निरमल थाय सिद्ध हुवे इसान्याय आदरवा जोग छै।

षटद्रव्यपर लड़ी सातमी रूपी अरूपीकी

१ धर्मास्तिकाय रूपीके अरूपी, अरूपी किसान्याय पांच वर्ण नहीं पावे इसान्याय।

२ अधर्मास्तिकाय रूपीके अरूपी, अरूपी किसान्याय पांच वर्ण नहीं पावे इसान्याय।

३ अकाशास्तिकाय रूपीके अरूपी, अरूपी किसान्याय पांच वर्ण नहीं पावे इसान्याय।

४ काल रूपीके अरूपी, अरूपी किसान्याय पांच वर्ण नहीं पावे इसान्याय।

५ पुद्गल रूपीके अरूपी, रूपी किसान्याय पांच वर्ण पावे इसान्याय।

६ जीव रूपीके अरूपी, अरूपी किसान्याय पांच वर्ण नहीं पावे इसान्याय।

छवद्रव्यपर लड़ी आठमी सावद्य निरवद्यकी

१ धर्मास्तिकाय सावद्यके निर्वद्य, दोन' नहीं अजीव छै

२ अधर्मास्तिकाय सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छै ।

३ आकाशास्तिकाय सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छै ।

४ काल सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छै ।

पुद्गलास्तिकाय सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं
५ अजीव छै ।

६ जीवास्तिकाय सावद्यके निर्वद्य, दोनूं छै खोटा परिणामा सावद्य छै चोखा परिणामा निर्वद्य छै ।

छवद्रव्यपर लडी नवमी आज्ञामांहिबाहिरकी

१ धर्मास्तिकाय आज्ञा मांहिके बाहिर दोनूं नहीं ते किणन्याय आज्ञा मांहि बाहिर तो जीव छै । अने ए अजीव छै ।

२ अधर्मास्तिकाय आज्ञा मांहिके बाहिर दोनूं नहीं किणन्याय अजीव छै ।

३ आकाशास्तिकाय आज्ञा मांहिके बाहिर दोनूं नहीं किणन्याय अजीव छै ।

४ काल आज्ञा मांहिके वाहिर दोनूं नहीं किणन्याय अजीव छै ।

५ पुद्गल आज्ञा मांहिकी बाहिर दोनूं नहीं किण-
न्याय अजीव छै ।

६ जीव आज्ञा मांहिकी बाहिर दोनूं छै किणन्याय
निर्वद्य करणी आज्ञा मांहि छै सावद्य करणी
आज्ञा बाहिर छै दूणन्याय ।

॥छवद्रव्यपर लडी दशमी चोर साहूकारकी ॥

१ धर्मास्तिकाय चोर कै साहूकार दोनूं नहीं किण-
न्याय चोर साहूकार तो जीव छै ए धर्मास्तिकाय
अजीव छै दूणन्याय ।

२ अधर्मास्तिकाय चोर कै साहूकार दोनूं नहीं
अजीव छै ।

३ आकाशस्तिकाय चोर कै साहूकार दोनूं नहीं
अजीव छै ।

४ काल चोरकै साहूकार दोनूं नहीं अजीव छै ।

५ पुद्गल चोरकै साहूकार दोनूं नहीं अजीव छै ।

६ जीव चोरकै साहूकार, दोनूं छै किणन्याय, माठा
परिणामा आसरी चोर छै चोखा परिणामा
आसरी साहूकार छै ।

॥ छवद्रव्यपर लडी इग्यारमी जीव अजीवकी

१ धर्मास्तिकाय जीवकै अजीव, अजीव छै ।

२ अधर्मास्तिकाय जीवकै अजीव, अजीव छै ।

३ आकाशास्तिकाय जीवकि अजीव, अजीव छै।

४ काल जीवकि अजीव, अजीव छै।

५ पुद्गलास्तिकाय जीवकि अजीव, अजीव छै।

६ जीवास्तिकाय जीवकि अजीव, जीव छै।

छव द्रव्यपर लडी बारमी एक अनेक की

१ धर्मास्ति काय एक छै कि अनेक छै, एक छै, किणन्याय, द्रव्यथकी एकही द्रव्य छै।

२ अधर्मास्तिकाय एक छै कि अनेक छै एक छै, द्रव्यथकी एकही द्रव्य छै।

३ आकाशास्तिकाय एककि अनेक, एक छै, लोक अलोक प्रमाणे एकही द्रव्य छै।

४ काल एक छै कि अनेक छै; अनेक छै द्रव्यथकी अनंता द्रव्य छै इणन्याय।

५ पुद्गल एक छै कि अनेक छै; अनेक छै द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य छै इणन्याय।

६ जीव एक छै कि अनेक छै; अनेक छै; अनन्ता द्रव्य छै इणन्याय।

॥ लडी तेरमी ॥

छवमें नवमेंकी चरचा।

१ कर्मांकोकर्त्ता छव द्रव्यमें कोण नव तत्वमें कोण

उत्तर छवमें जीव नवमें जीव आस्रव ।
२ कर्मांको उपावता छवमें कोण नवमें कोण उ० छवमें जीव नवमें जीव आस्रव ।
३ कर्मांको लगावता छवमें कोण नवमें कोण उ० छवमें जीव नवमें जीव आस्रव ।
४ कर्मांको रोकता छवमें कोण नवमें कोण उत्तर छवमें जीव नवमें जीव संवर ।
५ कर्मांको तोड़ता छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव निर्जरा ।
६ कर्मांको बांधता छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव आस्रव ।
७ कर्मांको मुकावता छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव मोक्ष ।

॥ लडी चौदमी ॥

१ अठारे पाप सेवे ते छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव आस्रव ।
२ अठारे पाप सेवाका त्याग करे ते छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव निर्जरा ।
३ सामायक छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव संवर ।

४ ब्रत छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव संबर।

५ अब्रत छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव आस्रव।

६ अठारे पापको बहरमण छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव संबर।

७ पंच महाव्रत छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव संबर।

८ पांच चारित्र छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव संबर।

९ पांच सुमति छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव निर्जरा।

१० तीन गुप्ति छवमें कोण नवमें कोण छव में जीव नवमें जीव, संबर।

११ बारे ब्रत छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव, संबर।

१२ धर्म छवमें कोण नवमें कोण छवमे जीव, नवमें, जीव संबर निर्जरा।

१३ अधर्म छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव, आस्रव।

१४ दया छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव

नवमें जीव, संवर, निर्जरा ।

१५ हिंसा छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव, आस्रव ।

॥ लडी १५ पन्द्रहमी ॥

१ जीव छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव. आस्रव, संवर, निर्जरा मोक्ष ।

२ अजीव छवमें कोण नवमें कोण छवमें पांच, नवमें अजीव पुन्य, पाप बंध ।

३ पुन्य छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल, नवमें अजीव, पुन्य बंध ।

४ पाप छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें पुद्गल, नवमें अजीव पाप बंध ।

५ आस्रव छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, आस्रव ।

६ संवर छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, संवर ।

७ निर्जरा छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, निर्जरा ।

८ वंध छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल, नवमें अजीव, पुन्य, पाप, बंध ।

९ मोक्ष छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, मोक्ष।

॥ लडी १६ सोलहवीं ॥

१ धर्मास्ति छवमें कोण नवमें कोण छवमें धर्मास्ति नवमें अजीव।

२ अधर्मास्ति छवमें कोण नवमें कोण छवमें अधर्मास्ति, नवमें अजीव।

३ आकाशास्ति, छवमें कोण नवमें कोण छवमें आकाशास्ति, नवसें अजीव।

४ काल छवमें कोण नवमें कोण छवमें काल, नवमें अजीव।

५ पुद्गल छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल, नवमें अजीव पुन्य, पाप बंध।

६ जीव, छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमे जीव, आस्रव संवर, निर्जरा मोक्ष।

लडी १७ सतरहवीं

१ लेखण (कलम) पूठो, कागदको पानों, लकड़ी की पाटी, छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल नवमें अजीव।

२ पात्रो, रजोहरण, चादर चोलपट्टो आदि भंड उपगरण, छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल, नवमें अजीव।

३ धानको दाणों, छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव।

४ रूंख (वृक्ष) छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव।

५ तावड़ो छायां छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल नवमें अजीव।

६ दिन रात छवमें कोण नवमें कोण छवमें काल, नवमें अजीव।

७ श्रीसिद्ध भगवान छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव मोक्ष।

लड़ी १८ अठारहवीं

१ पुन्य और धर्म एककि होय, होय किणन्याय, पुन्य तो अजीव छै, धर्म जीव छै।

२ पुन्य और धर्मास्ति एककि होय, होय किणन्याय पुन्य तो रूपी छै धर्मास्ति अरूपी छै।

३ धर्म और धर्मास्ति एककि होय होय, किणन्याय, धर्म तो जीव छै, धर्मास्ति अजीव छै।

४ अधर्म और अधर्मास्ति एकसी होय होय किण-न्याय अधर्म तो जीव छै, अधर्मास्ति अजीव छै।

५ पुन्य अनें पुन्यवान एकसी होय होय किणन्याय पुन्य तो अजीव छै पुन्यवान जीव छै।

६ पाप अने पापी एकसी होय होय, किणनयाय, पाप अजीव छै, पापी जीव छै।

७ कर्म अनें कर्मां को करता एक सी होय होय, किणनयाय, कर्म तो अजीव छै, कर्मांरो करता जीव छै।

लडी १९ उन्नीसमी

१ कर्म जीवके अजीव, अजीव।

२ कर्म रूपीके अरूपी रूपी छै।

३ कर्म सावद्यकी निर्वद्य दोनूं नहीं अजीव छै।

४ कर्म चोरकी साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छै।

५ कर्म आज्ञा मांहिकि बाहिर दोनूं नहीं अजीव छै।

६ कर्म छांडवां जोग की आदरवा जोग, छांडवा जोग छै।

७ आठ कर्मों में पुन्य कितना पाप कितना ज्ञाना-वर्णी, दर्शनावर्णी, मोहनीय, अन्तराय, ए च्यार

कर्म तो एकान्त पाप छे, वेदनी, नाम, गोत, आयु ए च्यार कर्म पुन्य पाप दोनूं ही छे।

लडी २० बीसमीं

१ धर्म जीव के अजीव जीव छे।

२ धर्म सावद्य के निर्वद्य निर्वद्य छे।

३ धर्म आज्ञा मांहि के बाहिर श्री वितराग देव की आज्ञा मांहि छे।

४ धर्म चोर के साहूकार साहूकार छे।

५ धर्म रूपी के अरूपी अरूपी छे।

६ धर्म छांडवा जोग के आदरवा जोग आदरवा जोग छे।

७ धर्म पुन्य के पाप दोनूं नहीं किणन्याय धर्म तो जीव छे पुन्य पाप अजीव छे।

लडी २१ इक्कीसवीं

१ अधर्म जीव के अजीव जीव छे।

२ अधर्म सावद्य के निर्वद्य सावद्य छे।

३ अधर्म चोर के साहूकार चोर छे।

४ अधर्म आज्ञा मांहि के बाहिर बाहिर छे।

५ अधर्म रूपी के अरूपी रूपी छे।

६ अधर्म छांडवा जोगकि आदरवा जोग छांडवा जोग छे।

लडी २२ बाइसवीं

१ सामायक जीवकि अजीव जीव छे।
२ सामायक सावद्य कि निरवद्य निरवद्य छे।
३ सामायक चोर कि साहूकार साहूकार छे।
४ सामायक आज्ञा मांहि कि बाहिर आज्ञा मांहि छे।
५ सामायक रूपी कि अरूपी अरूपी छे।
६ सामायक छांडवा जोग कि आदरवा जोग आद-रवा जोग छे।
७ सामायक पुन्य कि पाप दोनूं नहीं; किंयन्याय पुन्य पाप अजीव छे; सामायक जीव छे।

॥ लड़ी २३ तेवीसमी ॥

१ सावद्य जीव कि अजीव जीव छे।
२ सावद्य सावद्य छे कि निरवद्य सावद्य छे।
३ सावद्य आज्ञा मांहि कि बाहिर बाहिर छे।
४ सावद्य चोर कि साहूकार चोर छे।
५ सावद्य रूपी कि अरूपी अरूपी छे।

६ सावद्य छांडवा जोग के आदरवा जोग छांडवा जोग छै।

७ सावद्य पुन्य के पाप दोनूं नहीं; पुन्य पाप तो अजीव छै; सावद्य जीव छै।

॥ लडी २४ चोबीसमी ॥

१ निरवद्य जीव के अजीव जीव छै।

२ निरवद्य सावद्य के निरवद्य निरवद्य छै।

३ निरवद्य चोर के साहूकार; साहूकार छै।

४ निरवद्य आज्ञा मांहि के बाहिर मांहि छै।

५ निरवद्य रूपी के अरूपी अरूपी छै।

६ निरवद्य छांडवा जोग के आदरवा जोग आदरवा जोग छै।

७ निरवद्य धर्म के अधर्म धर्म छै।

८ निरवद्य पुन्य के पाप पुन्य पाप दोनूं नहीं; किणन्याय पुन्य पाप तो अजीव छै निरवद्य जीव छै।

॥ लड़ी २५ पचीसमी ॥

१ नव पदार्थ में जीव कितना पदार्थ अने अजीव कितना पदार्थ जीव; आस्रव; संवर, निर्जरा,

मोक्ष, ए पांच तो जीव छै, अनें अजीव; पुन्य, पाप, बंध, ए च्यार पदार्थ अजीव छै।

२ नव पदार्थ में सावद्य कितना निरवद्य कितना जीव अनें आस्रव ए दोय तो सावद्य निरवद्य दोनूं छै, अजीव, पुन्य पाप, बंध, ए सावद्य निरवद्य दोनूं नहीं। संवर, निर्जरा, मोक्ष, ए तीन पदार्थ निरवद्य छै।

३ नव पदार्थ में आज्ञा मांहि कितना आज्ञा बाहिर कितना जीव, आस्रव, ए दोय तो आज्ञा मांहि पण छै, अने आज्ञा बाहिर पण छै। अजीव, पुन्य, पाप, बंध, ए च्यार आज्ञा मांहि बाहिर दोनूं ही नहीं। संवर, निर्जरा मोक्ष, ए आज्ञा मांहि छै।

४ नव पदार्थ में चोर कितना साहूकार कितना जीव, आस्रव, तो चोर साहूकार दोनूं ही छै। अजीव, पुन्य, पाप, बंध ए चोर साहूकार दोनूं नहीं संवर, निर्जरा, मोक्ष, तीन साहूकार छै।

५ नव पदार्थ में छाडवां जोग कितना आदरवा जोग कितना जीव, अजीव, पुन्य, पाप, आस्रव, बंध, ए छव तो छांडवा जोग छै, संवर, निर्जरा,

मोक्ष ए तीन आदरवा जोग छै; अने जाणवा जोग नवहीं पदार्थ छै।

६ नव पदार्थ में रूपी कितना अरूपी कितना जीव आस्रव, संवर निर्जरा; मोक्ष; ए पांच तो अरूपी छै, अजीव रूपी अरूपी दोनू छै पुन्य; पाप; बंध; रूपी छै।

७ नव पदार्थ में एक कितना अनेक कितना उ० अजीव टाली आठ पदार्थ तो अनेक छै; अने अजीव एक अनेक दोनूं छै, किणन्याय धर्मास्ति अधर्मास्ति आकाशास्ति ये तीनूं द्रव्य थकी एक एक ही द्रव्य छै।

॥ लडी २६ छबीसमीं ॥

१ छव द्रव्य में जीव कितना अजीव कितना एक जीव पांच अजीव छै।

२. छव द्रव्य में रूपी कितना अरूपी कितना जीव, धर्मास्ति अधर्मास्ति आकाशास्ति, काल, ए पांच तो अरूपी छै, पुद्गल रूपी छै।

३ छव द्रव्य में आज्ञा मांहि कितना आज्ञा बाहिर कितना जीव तो आज्ञा मांहि बाहिर दोनूं छै, बाकी पांच आज्ञा मांहि बाहिर दोनूं नहीं।

४. छव द्रव्य में चोर कितना साहूकार कितना जीव तो चोर साहूकार दोनूं छै, बाकी पांच द्रव्य चोर साहूकार दोनूं नहीं अजीव छै।

५ छव द्रव्य में सावद्य कितना निरवद्य कितना एक जीव द्रव्य तो सावद्य निरवद्य दोनूं छै, बाकी पांच द्रव्य सावद्य निरवद्य दोनूं नहीं।

६ छव द्रव्य में एक कितना अनेक कितना धर्मास्ति अधर्मास्ति, आकाशास्ति, ए तीनों तो एक ही द्रव्य छै, काल, जीव पुद्गलास्ति, ए तीन अनेक छै, दूणका अनन्ता द्रव्य छै।

७. छव द्रव्य में सप्रदेशी कितना अप्रदेशी कितना एक काल तो अप्रदेशी छै, बाकी पांच सप्रदेशी छै।

॥ लडी २७ सत्ताइसमीं ॥

१ पुन्य धर्म कि अधर्म दोनूं नहीं, किणन्याय धर्म अधर्म जीव छै पुन्य अजीव छै।

२ पाप धर्म कि अधर्म दोनूं नहीं, किणन्याय धर्म अधर्म तो जीव छै पाप अजीव छै।

३ बंध धर्म कि अधर्म दोनूं नहीं, किणन्याय धर्म अधर्म तो जीव छै बंध अजीव छै।

४ कर्म अनें धर्म एक की दोय दोय छै, किणन्याय, कर्म तो अजीव छै, धर्म जीव छै।

५ पाप अने धर्म एक की दोय दोय छै, किणन्याय पाप तो अजीव छै, धर्म जीव छै।

६ अधर्म अने अधर्मास्ति एक की दोय दोय, किणन्याय अधर्म तो जीव छै, अधर्मास्ति अजीव छै।

७ धर्म अने धर्मास्ति एक की दोय दोय, किणन्याय धर्म तो जीव छै, धर्मास्ति अजीव छै।

८ धर्म अने अधर्मास्ति एक की दोय दोय, किणन्याय धर्म तो जीव छै, अधर्मास्ति अजीव छै।

९ अधर्म अने धर्मास्ति एक की दोय, दोय किणन्याय अधर्म तो जीव, धर्मास्ति अजीव छै।

१० धर्मास्ति अनें अधर्मास्ति एक की दोय, दोय किण-न्याय धर्मास्ति को तो चालवा नो सहाय छै, अनें अधर्मास्तिनो थिर रहवानों सहाय छै।

११ धर्म अनें धर्मी एक की दोय एक छै, किणन्याय धर्म जीव का चोखा परिणाम छै।

१२ अधर्म अने अधर्मी एक की दोय एक छै, किण-न्याय अधर्म जीव का खोटा परिणाम छै।





प्रश्नोत्तर

१ थारी गति कांई—मनुष्य गति ।

२ थारी जाति कांई—पंचेन्द्री ।

३ थारी काय कांई—त्रसकाय ।

४ इन्द्रियां कितनी पावे—५ पांच ।

५ पर्याय कितनी पावे—६ छव ।

६ प्राण कितना पावे—१० दश पावे ।

७ शरीर कितना पावे—३ तीन—औदारिक, तेजस कार्मण ।

८ जोग कितना पावे—९ नव पावै च्यार मन का, च्यार बचनका, एक काया को, औदारिक ।

९ उपयोग कितना पावे—४ च्यार पावै मतिज्ञान १ श्रुतिज्ञान २ चक्षु दर्शन ३ अचक्षु दर्शन ४

१० थारे कर्म कितना ८ आठ ।

११ गुणस्थान किसो पावे—व्यवहारथी पांचमूं, साधु नें पूछे तो छट्ठो ।

१२ विषय पावे—२३ तेवीस ।

१३ मिथ्यात्वनां दश बोल पावे के नहीं, व्यवहारथी नहीं पावे ।

१४ जीवका चौदाह भेदामें से किसो भेद पावे, १ एक चौदमूं पर्याप्ता सन्नी पंचेन्द्री को पावे ।

१५ आतमां कितनी पावे श्रावकमें तो ७ सात पावे; अनें साधु में आठ पावे ।

१६ दण्डक किसो पावे—एक इकवीसमूं ।

१७ लेश्या कितनी पावे—६ छव ।

१८ दृष्टि कितनी पावे—व्यवहारथी एक: सम्यक दृष्टि पावे ।

१९ ध्यान कितना पावे—३ तीन, शुक्ल ध्यान टालके ।

२० छवद्रव्यमें किसो द्रव्य पावे—१ एक जीव द्रव्य ।

२१ राशि किसी पावे—एक जीव राशि ।

२२ श्रावक का बारा व्रत श्रावक में पावे ।

२३ साधुका पञ्च महाव्रत पावे के नहीं—साधु में पावे श्रावक में पावे नहीं ।

२४ पांच चारित्र श्रावक में पावे के नहीं, नहीं पावे, एक देश चारित्र पावे ।

१ एकेन्द्री की गति कांई—तिर्यंच गति ।

२ एकेंद्री की जाति कांई—एकेन्द्री ।

३ एकेन्द्री में काया किसी पावे—पांच थावरकी ।

४ एकेन्द्री में इन्द्रियां कितनी पावे—एक स्पर्श इन्द्री ।

५ एकेन्द्री में पर्याय कितनी पावे—४ च्यार मन भाषा ए दोय टली ।

६ एकेन्द्री में प्राण कितना पावे—४ च्यार पावे स्पर्श इन्द्रीय बलप्राण १ काय बलप्राण २ श्वासोश्वास बलप्राण ४ ।

७ सूरड माटी मुलतानी पत्थर सोनो चांदी रतनादिक पृथ्वीकाय का प्रश्नोत्तरः—

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय किसी	पृथ्वीकाय
इन्द्रियां कितनी पावे	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी पावे	४ च्यार, मन भाषा टली
प्राण कितना	४ च्यार पावे, स्पर्श इन्द्री बल प्राण १ काय बल प्राण २ श्वासोश्वास बलप्राण ३ आयु बलप्राण ४

८ पाणी ओसादि अप्पकायनी—

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यञ्च गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय किसी	अप्पकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार, मन भाषा टली
प्राण कितना	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे

९ अग्नि तेउकायनी—

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यञ्च गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय किसी	तेउकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार, मन भाषा टली
प्राण कितना	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे

१० वायु कायकी—

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यञ्च गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय कांई	वायुकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे
प्राण कितना	४ च्यार ऊपर प्रमाणे

११ वृक्ष, लता, पान, फूल, फल, लीलण, फूलण आदि वनस्पतिकायनी—

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यञ्च गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय कांई	वनस्पतिकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	च्यार, ऊपर प्रमाणे
प्राण कितना	च्यार, ऊपर प्रमाणे

१२ लट गिंडोला आदि बेन्द्रीको—

प्रश्न	उत्तर	
गति कांई	तिर्यञ्च गति	
जाति कांई	बेइन्द्री	
काय कांई	त्रस काय	
इन्द्रियां कितनी	२ दोय, स्पर्श, रस, इन्द्री	
पर्याय कितनी	५ पांच मन पर्याय टली	
प्राण कितना	छव, रस इन्द्री बल प्राण	१
	स्पर्श इन्द्री बल प्राण	२
	काय बल प्राण	३
	श्वासोश्वास बल प्राण	४
	आऊखो बल प्राण	५
	भाषा बल प्राण	६

१३ कीड़ो मकोड़ा आदि तेइन्द्रीका—

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	तेइन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	३ तीन, स्पर्श १ रस २ घ्राण ३
पर्याय कितनी	५ पांच, मन टली
प्राण कितना	७ सात, छव तो ऊपर प्रमाणे प्राण इन्द्री बल प्राण बध्यो

१४ माखी मच्छर टीडी पतंगिया विच्छु आदि चौइन्द्री का—

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	चौ इन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	४ च्यार, श्रुत इन्द्री टली
पर्याय कितनी	५ पांच, मन टली
प्राण कितना	८ आठ, सात तो ऊपर प्रमाणे एक चक्षु इन्द्री बल प्राण और बध्यो

१५ पंचेन्द्री का—

प्रश्न	उत्तर
गति कितनी पावे	४ च्यारूं ही पावे

जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	पांचोंहीं
पर्याय कितनी	६ छवों ही पावे सन्नीमें, और असन्नीमें ५ पांच, मन टल्यो
प्राण कितना पावे	सन्नीमें तो १० दशूं ही पावे, असन्नीमें ६ पावे मन टल्यो

१६ नारकी की पूछा—

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	नरक गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	पांचोंही
पर्याय कितनी	५ पांच,मन भाषा भेली लेखवी
प्राण कितना	१० दशोंही

१७ देवताकी पूछा—

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	देव गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इंद्रियां कितनी	५ पांचोंही
पर्याय कितनी	५ मन भाषा भेली लेखवी
प्राण कितना	१० दशों ही

१८ मनुष्य की पूछा असन्नी की—

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यञ्च गति
जाति कांई	तेइन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	५ पांच
पर्याय कितनी	३॥ श्वासलेवे तो उश्वास नहीं
प्राण कितना	७॥ श्वासलेवे तो उश्वास नहीं

१९ सन्नी मनुष्य की पूछा—

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	मनुष्य गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इंद्रियां कितनी	५ पांच
पर्याय कितनी	६ छव
प्राण कितना	१०

१ तुमे सन्नीकि असन्नी ? सन्नी, किणन्याय मन छै।

२ तुमे सूक्ष्मकि बादर ? बादर किण० ? दीखूं छूं।

३ तुमे त्रसकि स्थावर ? त्रस. किण० हालूं चालूं छूं।

४ एकेन्द्री सन्नी कि असन्नी—असन्नी, किण० मन नहीं।

५ एकेन्द्री सूक्ष्म कि बादर—दोनूं ही छै किण०

एकेन्द्री दोय प्रकार की छे, दीखे ते बादर छे, नहीं दीखे ते सूक्ष्म छे।

६ एकेन्द्री त्रस के स्थावर—स्थावर छे, हाले चाले नहीं।

७ एकेन्द्री में इन्द्रियां कितनी—एक स्पर्श इन्द्री (शरीर)

८ पृथ्वीकाय अप्पकाय तेउका वायुकाय बनस्पतिकाय।

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छे मन नहीं
सूक्ष्म के बादर	दोनूं ही प्रकार की छे
त्रसके स्थावर	स्थावर छे

९ बेन्द्री तेन्द्री चौ इन्द्री की पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छे मन नहीं
सूक्ष्म के बादर	बादर छे
त्रस के स्थावर	त्रस छे

१० तिर्यञ्च पंचेन्द्री की पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	दोनूं ही छे
सूक्ष्म के बादर	बादर छे
त्रस के स्थावर	त्रस छे

११ असन्नी मनुष्य चौदह स्थानक में उपजै ।

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छे
सूक्ष्म के बादर	बादर छे
त्रस के स्थावर	त्रस छे

१२ सन्नी मनुष्य ते गर्भ में उपजे जिणारी पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छे
त्रस के स्थावर	त्रस छे
सूक्ष्म के बादर	बादर छे

१३ नारकी का नेरिया की पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छे
सूक्ष्म के बादर	बादर छे
त्रस के स्थावर	त्रस छे

१४ देवता की पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छे
सूक्ष्म के बादर	बादर छे
त्रस के स्थावर	त्रस छे

१५ गाय, भैंस, हाथी, घोड़ा, बलद, पची आदि पशु जानवर की पूछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	दोनूं ही प्रकार का छे छिमो छिमके मन नहीं, गर्भज के मन छे
सूक्ष्म के बादर	बादर छे, नेत्रसे देखवा में आवे छे
त्रस के स्थावर	त्रस छे हाले चाले छे

१ एकेन्द्री में वेद कितना पावै एक नपुंसक वेद पावै।

२ पृथ्वी पाणी बनस्पति अग्नि बायरो यां पांचां में वेद कितना पावै—१ नपुंसक ही छे।

३ बेइन्द्री तेइन्द्री चौइन्द्री में वेद कितना पावै—एक नपुंसक वेद ही पावै छे।

४ पंचेन्द्रीमें वेद कितना पावै—सन्नी में तो तीनों ही वेद पावै छे, असन्नीमें एक नपुंसक वेदही छे।

५ मनुष्यमें वेद कितना पावै—असन्नी मनुष्य चौदह थानकमें उपजे जिणां में तो वेद एक नपुंसक ही पावै छे, सन्नी मनुष्य गर्भमें उपजे जिणांमें वेद तीनों ही पावै छे।

६ नारकी में वेद कितना पावै—एक नपुंसक वेद ही पावै छे।

७ जलचर थलचर उरपर भुजपर खेचर या पांच प्रकारका तिर्यंचा में वेद कितना पावै—छिमो-

छिम उपजे ते असन्नी छै जिणांमें तो बेद नपुंसक ही पावे छै, अनें गर्भ में उपजे ते सन्नी छै जिणां में बेद तीनोंही पावे छै।

८ देवता में बेद कितना पावै—उत्तर—भवनपति वाणव्यन्तर, जोतिषी, पहिला दूजा देव लोक तांई तो बेद दोय स्त्री १ पुरुष २ पावे छै, और तीजा देव लोक से सर्वार्थ सिद्ध तांई बेद एक पुरुष ही छै।

९ चौबीस दण्डक का जीवां के कर्म कितना उगणीस दण्डकां का जीवांमें तो कर्म आठही पावे छै, अनें मनुष्य में सात आठ तथा च्यार पावे छै।

१ धर्म व्रत में के अव्रतमें—व्रत में।

२ धर्म आज्ञा मांहि के बाहिर श्रीवीतरागदेव की आज्ञा मांहि छै।

३ धर्म हिंसा में के दया में—दया में।

४ धर्म मोल मिलै के नहीं मिलै—नहीं मिलै, धर्म तो अमूल्य छै।

५ देव मोल मिलै के नहीं मिलै—नहीं मिलै, अमूल्य छै।

६ गुरु मोल लियां मिलै के नहीं मिलै—नहीं मिलै अमूल्य छै।

७ साधुजी तपस्या करै ते व्रत में के अव्रत में व्रत पुष्टको कारण छै अधिक निर्जरा धर्म छै।

८ साधुजी पारणो करै ते व्रत में के अव्रत में अव्रतमें नहीं; किणन्याय ? साधुकै कोई प्रकार अव्रत रही नहीं सब सावद्य जोगका त्याग छै। तिणसुं निरजरा थाय छै तथा व्रत पुष्टको कारण छै।

९ श्रावक उपवास आदि तप करै ते व्रतमें के अव्रत में—व्रत मे।

१० श्रावक पारणो करै ते व्रत में के अव्रत में—अव्रत में किणन्याय ? श्रावकको खाणों पीणों पहरणों ए सर्व अव्रत में छै श्रीउववाई तथा सूयगडांग सूत्र में विस्तार कर लिख्या छै।

११ साधुजी नें सूजतो निर्दोष आहार पाणी दियां कांई होवे, व्रतमें के अव्रतमें—अशुभ कर्म चय थाय तथा पुन्य बंधे छै, १२ सूं व्रत छै।

१२ साधुजी ने असूजतो दोषसहित आहार पाणी दिया कांई होवै तथा व्रत में के अव्रतमें—श्रीभगवती सूत्रमें कह्यो छै, तथा श्री ठाणांग सूत्र के तीजे

ठाणां में कह्यो छै अल्प आयुबन्धे अकल्याणकारी कर्म बन्धे तथा असूजतो दीधांते वृतमें नहीं। पाप कर्म बन्धे छै।

१३ अरिहंत देव देवता के मनुष्य—मनुष्य छै।

१४ साधु देवता के मनुष्य—मनुष्य छै।

१५ देवता साधुनों वंछा करे के नहीं करे—करे साधु तो सबका पूजनीक छै।

१६ साधु देवताको वंछा करेके नहीं करे—नहीं करे।

१७ सिद्ध भगवान देवता के मनुष्य—दोनूं नहीं।

१८ सिद्ध भगवान सूक्ष्म के बादर—दोनूं नहीं।

१९ सिद्ध भगवान त्रसके स्थावर—दोनूं नहीं।

२० सिद्ध भगवान सन्नी के असन्नी—दोनूं नहीं।

२१ सिद्ध भगवान पर्याप्ता के अपर्याप्ता—दोनूं नहीं।

॥ इति पानाकी चरचा ॥



अथः प्रतिक्रमण।

अर्थ सहित।

णमो अरिहन्ताणं णमो सिद्धाणं णमो
नमस्कार थावो श्री अरिहन्त नमस्कार थावो श्री नमस्कार
भगवन्त नें सिद्ध भगवान नें थावो
आयरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए
श्री आचारज नमस्कार थावो श्री नमस्कार थावो
महाराज नें उपाध्याय महाराज नें लोक के विषै
सव्व साहूणं।
सर्व साधु मुनिराजों नें।

॥ अथ तिक्खुता की पाटी ॥

॥ अर्थ सहित ॥

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वन्दामि नमं
तीनबार दाहिणा प्रदक्षिणा वंदना सत्कार नम
पासाथी . देई करूं स्कार

सामि सक्कारेमि समाणेमि कल्लाणं मङ्गलं
करूं सत्कार देऊं सनमान करूं कल्याणकारी मंगल कारी
देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वन्दामि
धर्म देव चित्त प्रसन्न कारी ज्ञान वंत सेवना करूं मस्तके करी वंदना नमस्कार करूं

अथ इच्छामि पडिक्कमिओ

इच्छामि पडिक्कमिओ इरिया वहियाए
इच्छूं, वाच्छूं प्रतिक्रमवोते निवर्त्तवो मार्ग नें विषे ज्यो
विराहणा ए गमणागमणे पाणक्कमणे
विराधना हुई होय जातां आतां प्राणी वेन्द्रियादि नो आक्रमण करणूं ते चम्पणूं
वीयक्कमणे हरिक्कमणे ओसा उत्तिंग पणग
बीजको दाणूं हरी लीलोनी ओस को कीड़ीका बिल लीलण फूलण
दग मट्टी मकड़ा संताणा संकमणे जे
पाणी को माट्टीका दावलो जीव मकड़ीका जाला मर्द्दवो जो तोड्या होय
मे जीवा विराहिया एगिंदिया वेइंदिया
मैं जीव विराध्यो होय एकेन्द्री जीव बेइन्द्री जीव
तेइंदिया चउरिंदिया पंचेंदिया अभी
तेइन्द्री जीव चौइन्द्री जीव पंचइन्द्री जीव सनमुख

इया वत्तिया लेसिया संघाइया संघ
आतांहण्यां धूलसे रगड्या यातन कला संग्रह
धरती करी ढक्यां

ट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया
किया परिताप्या कीलामना उपजाई उपद्रव किया

ठाणा उठाणं संकामिया जीवियाओ वव
एक स्थानसे दूसरे स्थान पटक्या जीवत से

रोविया तस्समिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥
नास किया तेहनो मिच्छामि दुकडं ।

अथ तस्सुत्तरी

तस्सउत्तरी करणेणं पायच्छित्त करणेणं
तेहनो उत्तर करवो प्रायश्चित्त करवो
प्रधान

विसोही करणेणं विसल्ली करणेणं
विशुद्धि करवो सल्य रहित करवो

पावाणं कम्माणं निग्घाय ट्ठाए
पाप कर्मका नास करवा निमित्त

ठामि करेमि काउसग्गं अन्नथ
स्थिर करूं छूं काय उत्सर्ग इण मुजब
हुई पतलो विशेष

ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं
ऊचाश्वास नीचाश्वास खांसी छींक

जंभाइएणं उड्डुएणं वाय निसग्गेणं भमलीए
उवासी डकार अधोवायु भंवल

पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अङ्गसंचालेहिं
पित्तकर मूर्च्छा सूक्ष्मपणे शरीरको हालवो

सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठीसंचालेहिं
सूक्ष्मपणे श्लेष्मको सञ्चार सूक्ष्म दृष्टि चलावो

एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहो
इत्यादिक यह आगार से ध्यान भांगे नहीं विराधना

ज हुज्ज मे काउस्सग्गं जाव अरिहं
नहीं होउयो मनें काउसग ते ध्यान जिहां तक अरि

ताणं भगवंताणं नमोक्कारेणं नपारेमि
हन्त भगवन्तने नमस्कार करीने नहीं पारुं

ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं
उठेताई शरीरसे स्थानसे मौनकरी ध्यानकरी

अप्पाणं वोसरामि ॥ इति ॥
आतमां नें पापथकी वोसराऊं ।

॥ अथ लोगस्स ॥

लोगस्स उज्जोयगरे धम्म तित्थयरेजिणे
लोक के विषैं उद्योतकारी धर्म्म तीर्थ करता जिन

अरिहंते कित्तइस्सं चउविसंपि केवली
अरिहन्ताको कीर्त्ति करुं चोवीस वे केवली

उसभ मजियं च वन्दे संभव मभिनंदणं च
ऋषभ अजित पुनः वंदूं संभवनाथ अभिनन्दनजी पुनः
सुमइं च पउमप्पहिं सुपासं जिण च चन्दप्पहं
सुमति पुनः पद्म प्रभु सुपार्श्व जिन पुनः चन्दा प्रभु
नाथजी

वन्दे सुविहं च पुप्फदन्तं सीयल सिज्जंस
वदूं सुविध पुनः दूसरो नाम शीतल श्रेयांस
पुष्पदंत

वासुपुज्जं च विमल मणंतं च जिणं धम्मं
वासुपूज्य पुन. विमलनाथ अनन्तनाथजिन धर्मनाथ
संतिं च वदामि २ कुंथुं अरिहं च मल्लिं
शान्ति पुनः वंदूं कुन्थु अर पुनः मल्लिनाथ
नाथ नाथ

वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च वंदामि
वंदूं मुनिसुव्रत नमि जिन पुनः वंदूं
रिट्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ४ एवं
अरिष्टनेम पार्श्वनाथ तथारूप वर्द्धमान पुन. वंदूं यह
मये अभिथुआ विहुयरयमला पहीण जर
मैं स्तुति करि दूर किया कर्म रूप क्षीणभया जनम
रजमैल

मरणा चउवीसंपि जिणवरा तित्थयरा मे
मर्ण जिणाका पहवा चौबीस जिनराज तीर्थंङ्कर म्हारे

सव्वदरिसीणं सिवमयल मरुय मणंत
सर्व दर्शण कल्याणकारी अरुज अनन्त
अचल

मक्खय मव्वाबाह मप्पुणरावंती सिद्धिगई
अक्षय अव्याव्याधि फेरूं आवे नहीं इसी सिद्धगति

नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं ॥इति॥
नामवाला स्थान प्राप्त हुआ ज्यां जिनेश्वरानें
नमस्कार थावो.

अथ आवस्सही इच्छामिणं भंते

आवस्सही इच्छामिणं भंते तुब्भेहिं अब्भणु
अवश्य इच्छूं छूं मैं हे भगवान तुम्हारी आज्ञासें

नायेसमाणे देवसी पडिक्कमणु ठाएमि देवसी
दिवस प्रति क्रमण करूं मैं दिवस
संबन्धी . संबन्धी

ज्ञान दर्शन चारित्र तप अतिचार चिंतवनार्थं
ज्ञान दर्शन चारित्र तप अतिचार चिन्तवना के
अरथे

करेमि काउसग्गं ॥
करुं छूं मैं काऊसग ते ध्यान

अथ इच्छामि ठामि काउसग्गं

इच्छामि ठामि काउसग्गं जो मे देवसिउ अइ
इच्छूं छूं ठाऊं काउसग ज्यो मैं दिवसमें अति

यार कम्रो काईम्रो वाईम्रो माणसिम्रो उस्सुतो
चार कीनों शरीरसे वचन से मनसे मूंडा सूत्र
उमग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाम्रो दुव्वि
उनमार्ग अकल्पनीक- नहीं करवा जोग दुर ध्यान खोटी
चिंतिम्रो अणायारो अणिच्छिअव्वो
चिन्तवणा अणाचार नहीं इच्छवा जोग
असावगपावग्गो नाणे तहदंसणे चरिताचरिते
श्रावकके नहीं कर ज्ञान दर्शन देश व्रत
वा जोग पाप ते
व्रत भंगादि
सुए समाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं
श्रुत सामायक तीन गुप्ति च्यार कषाय
पंचण्हं मणुव्वयाणं तिण्हं गुण वयाणं चउण्हं
पांच अणुव्रत तीन गुण व्रत च्यार
सिक्खावयाणं वारस्स विहस्स सावग धम्मस्स
सिखा व्रत वारे विधि श्रावक धर्म को
जं खंडियं जं विराहियं तस्समिच्छामि
ज्यो खंडना करी ज्यो विराधना करी तेहनो मिच्छामि
दुक्कड ॥
दुकडं

॥ अथ खमासमणो ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए
इच्छूं छूं क्षमावंत साधु वंदना सचितादिछांडी निपाप
शरीरपणें हुई निर्जरा अर्थे

निसीहियाए अणुजाणह मेमि उग्गहं निसीहि
शरीर करी आज्ञा देवो मुझे मर्यादा, अशुभ जोग
मांही निवर्ततो

अहो कायं कायसंफासं खमणिज्जो मे किलामो
चर्ण फर्शवाकी म्हांरी कायासे खमज्यो हे भगवान किलामना
आज्ञा देवो तुमारा चर्ण
फर्शतां

अप्पकिलंताणं बहुसुभेण मे दिवसोवइक्कंतो
थोड़ो किलामना बहुत समाधि भावकर, दिवस वीत्यो
हुई हुवेते तुम्हारो

जत्ता मे जवणिज्जंच मे खामेमि खमासमणो
संयम रूप इन्द्रीनोइन्द्रीना आपकुं खमाऊं हे क्षमावंत
यात्राथो तुमारा, उपशम थकी छूं साधु
निरोग शरीर

देवसियं वइक्कमं आवस्सिआए पडिक्कमामि
दिवस सम्बन्धी व्यतिक्रम अवश्य करणी नां पड़िक्कमूं छूं
अतिचार थकी

खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए
हे क्षमावंत श्रमण दिवस सम्बन्धी आसातना

तेतीसन्नराए जं किंचिमिच्छाए मणदुक्कडाए
तेतीस मांहिली ज्यो कोई किंचित् मिथ्या मनसे दुकृत
क्रिया करी किया

वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए
वचन से दुकृत काया से दुकृत क्रोधथी मानथी

मायाए लोभाए सवकालियाए सव्वमिच्छोवयराए
माया कपट लोभकरी सर्व कालमें सर्व मिथ्याउप-
चारकिया

सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो में देवसिओ
सर्व धर्म क्रियाका एहवी आसातनाज्यो में दिवस ने
उलंघन किया विषे

अइयार कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि
अतिचार किया तेहनों हे क्षमावंत श्रमण निवर्तूं छूं

निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥इति॥
निन्दूं छूं गरहूं छूं आतमांथी वोसराऊं छूं

अथ: आगमे तिविहे पन्नते।

आगमे तिविहे पन्नत्ते तंजहा सुत्तागमे
आगम तीन प्रकारे प्ररूप्या ते कहे छे सूत्र आगम

अत्थागमे तदुभयागमे ॥ एहवा श्रीज्ञान ने
अर्थ आगम सूत्र अर्थ दोनूं आगम

विषै अतिचार दोष लाग्यो होय ते आलोऊं—

जंवाइद्धं वच्चामेलियं हिनक्खरं अच्चक्खरं पयहीणं
जे कोई वचन मिलाया हीण अक्षर अधिक पदहीण
होय अक्षर

विणयहीणं जोगहीणं घोसहीणं सुट्ठुदिण्णं
विनय हिण ते अविनय | मन वचन कोया | उच्चारण हीण | चोखो सूत्र दीनूं अवनीतने

दुट्ठुपडिच्छियं अकालेकउ सिज्झाउ काले
खोटा सूत्रकी इच्छा करी | विनाकाले | सज्झाय करी | सज्झायनां

न कउसिज्झाउ असिज्झाए सिज्झाए सिज्झाए
कालमें सज्झाय न करी | असज्झाय में | सज्झाय करी | सज्झायमें

न सिज्झाए भणतां गुणतां चितारतां चोखतां ज्ञानकी
सज्झाय न करी

ज्ञानवंत की आसातनां करी होवै तस्समिच्छामिदुक्कडं ।
तेहनो मिच्छामि दुक्कडं

अथः दंसण श्रीसमकित .

दंसणश्रीसमकित अरिहंतो महदेवो जावजीवं
शुद्धश्रद्धनां ते समकित, दर्शन | तेह अरिहन्त | मांहिरे, देव | जावजीव लगा

सुसाहुणो गुरुणो जिणपन्नतं तत्तं इयसम्मत्तं
शुद्ध साधु | गुरु जिनं | परूप्यो ते धर्म | तत्व | यह समकित

मए गहियं
में | ग्रहण कियो

एहवा समकितने विषे जे कोई अतिचार लाग्या होय ते आलोऊं जिन वचन सांचा न सरध्या होय, न प्रतिल्या होय, न रूच्या होय, पर दर्शणरी आकांचा वंछा कीधी होय, फल प्रते संशय सदेह आण्यो होय; पर पाषण्डी की प्रशंसा करी हुवे साश्वतो परिचय कीधो होय। एहवा श्रीसमकित रूपी रत्न ऊपरे मित्थ्यात्व रूप रज्ज मैल खेह लागी होय तस्समिच्छामि दुक्कडं।

॥ अथ बारै व्रत ॥

पढमे	अणुव्वए	थूलाउ	पाणाइवायाउ
प्रथम	देशथी व्रत	मोटको	प्राणातिपात को

विरमणं, व्रत पांच बोले करी ओलखीजे, द्रव्यथकी	
निवर्तवो	व्रत

त्रस जीव बेइन्द्री तेइन्द्री चौइन्द्री पंचेन्द्री विन अपराधे आकुटी हणवानी विधि करीनें सउपयोग हणूं नहीं हणाऊं नहीं मनसा वायसा कायसा। द्रव्यथकी एहिज द्रव्य, क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्रां मांहि कालथकी जावजीवलग, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुणथकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारे पहला व्रत नें विषे जे कोई अतिचार दोष लागो होय ते आलोऊं।

जीवनें गाढे बन्धन बांध्या होय १ गाढा घाव घाल्या होय २ चामड़ी छेदन किया होय ३ अति भार घाल्या होय ४ भात पाणीनां विच्छोहा कीनां होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

बीए अणुव्वए थूलाउ मूसावायाउ विरमणं
बीजो अणुव्रत स्थूलथी झूंठ बोलवो निवर्तवो

मांचें बोलि करी ओलखीजे द्रव्यथकी कनालिक १
कन्याके तांई झूठ

गोवालिक २ भौमालिक ३ थापण मोसो ४
गाय भैंसादि कारण झूठ भूमि निमित्त झूठ लेकर नटवो

कूड़ीसाख ५
झूठी साखी

इत्यादिक मोटको झूठ मर्याद उपरान्त बोलूं नहीं बोलाऊं नहीं मनसा वायसा कायसा; द्रव्यथकी एहीज द्रव्य, क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्रामें कालथकी जाव जीव लग, भावथकी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारे दूजा व्रतने विषे जे कोई अतिचार दोष लागो होय ते आलोऊं ।

किणही प्रते कूड़ो आलदियो होय १
रहस्य छानी बात प्रगट करी होय २
स्त्री पुरुषनां मर्म प्रकाश्या होय ३

मृषा उपदेश दीधा होय ४

कूड़ो लेख लिख्यो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं

तइये अणुव्वय थूलाउ अदिन्ना दाणाउ विरमणं

तीजो अणुव्रत स्थूलथकी अणदियो लेवो ते चोरीको निवर्तवो

पांचे बोलि करी ओलखीजे द्रव्यथकी खात खणी गांठ खोली तालो पड़कूंची करी वाटपाड़ी पड़ीवस्तु मोटकी सधणियां सहित जाणी इत्यादिक मोटकी चोरी मर्याद उपरांत करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्यथकी एहिज द्रव्य, क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्रां में, कालथकी जावजीव लगे, भावथकी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा एहवा म्हारे तीजा व्रतमें ज्यो कोई अतिचार लागो होय ते आलोऊं ।

चोरकी चुराई वस्तु लीधी होय १ चोरने सहाय दीधी होय २ राज विरुद्ध व्योपार कीधी होय ३ कूड़ा तोला कूड़ामापा किया होय ४ वस्तु में भेल सभेल कीधो होय ५ सखरी दिखाय नखरी आपी होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति ॥

चउत्थे अणुव्वए थूलाउ मेहुणाउ विरमणं
चौथो अणूव्रत स्थूलथकी मैथुनथी निवर्तवो

पांचो बोलांकरी ओलखीजे द्रव्यथकी तो देवता देवांगना सम्बन्धिया मैथुन सेवूँ नहीं सेवावूँ नहीं, तिर्यंच तिर्यंचणी सम्बन्धी मैथुन सेवूँ नहीं सेवावूँ नहीं मनुष्य सम्बन्धी मैथुन सेवूं नहीं सेवावूं नहीं, मनुष्यणी सम्बन्धी मैथुन सेवाकी मर्याद कीधी छै तिण उपरान्त सेवूं नहीं सेवावूं नहीं, मनसा वायसा कायसा, द्रव्यथकी एहिज द्रव्य चेत्रथकी सर्व चेत्रांमें कालथकी जावजीव लगे, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा एहवा म्हांरे चौथा व्रत में ज्यो कोई अतिचार दोष लागो होय ते आलोऊं।

थोड़ा कालकी राखी परिग्रही सुं गमन कीधो होय १ अपरिग्रही सूं गमन कीधो होय २ अनङ्ग क्रीड़ा कीधी होय ३ परायनाता विवाह जोड़्या होय ४ काम भोग तीव्र अभिलाषा से सेव्या होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं

॥ इति ॥

पंचम अणुवए थूलाउ परिग्गहाउ विरमणं
पांचमूं अणुव्रत स्थूलथकी परिग्रह ते धनको निवर्तवो
मांचां बोलां करी ओलखीजै द्रव्य थकी खेतु
उघाड़ी जमीन
वत्थु यथा प्रमाण हिरण सुवन्न यथा प्रमाण
ढकी जमीन जेह प्रमाण कीधो चांदी सोनांको जे प्रमाण कीधो
धन धान यथा प्रमाण द्विपद चउप्पद यथा प्रमाण
द्रव्य धननों जेह प्रमाण कीधो दासदासी हाथी घोड़ा, जे प्रमाण
दिक चोपद
कुंभी धातु यथा प्रमाण
तांबो पीतल लोहादि नो जेह प्रमाण

द्रव्यथकी एहिज द्रव्य, क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्रामें कालथकी जावजीव लगे, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा एहवा म्हारा पांचवां अणुव्रत में ज्यो कोई अतिचार लागो होय ते आलोऊं, खेत्तु वत्थु रो प्रमाण अतिक्रम्यूं होय १ हिरण्य सुवर्णरो प्रमाण अतिक्रम्यूं होय २ धन धानरो प्रमाण अतिक्रम्युं होय ३ द्विपद चउपदरो प्रमाण अतिक्रम्युं होय ४ कुम्भी धातुरो प्रमाण अतिक्रम्युं होय तस्समिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति ॥

छट्ठो दिशि व्रत पांच बोलां ओलखीजै द्रव्य थकी तो ऊंची दिशारो यथा प्रमाण, नीची दिशारो यथा प्रमाण, तिरछी दिशारो यथा प्रमाण, यां दिशारो प्रमाण कीधो तेह उपरान्त जायकर पंच आस्रव द्वार सेऊं नहीं सेवाऊं मनसा वायसा कायसा द्रव्यथकी तो एहिज द्रव्य खेतथकी सर्व खेतां में कालथकी जावजीव लगे भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा एहवा—मांहरे छट्ठा व्रतके विषे जे कोई अतिचार दोषलागो हुवे तो आलोऊं।

ऊंची दिशारो प्रमाण अतिक्रम्यो होय १
नीची दिशारो प्रमाण अतिक्रम्यो होय २
तिरछी दिशारो प्रमाण अतिक्रम्यो होय ३
एक दिशा घटाई होय एक दिशा बधाई होय ४
पन्यमें आधो संदेह सहित चाल्यो चलायो होय ५
तस्समिच्छामि दुक्कडं।

॥ इति ॥

सातमूं उपभोग परिभोग व्रत पांचां बोलां करी ओलखीजै, द्रव्यथकी छब्बीस बोलांकी मर्याद ते कहे छे.

उलणीयां विहं १ दंतणविहं २ फलविहं ३
अंग पूछनादि विधि दांतन विधि फल विधि

अभिंगण विहं ४	उवट्टण विहं ५	मंजन विहं ६
तेलाभिंगादि तेल मालिस	उवटणादि की विधि	स्नानकी विधि
वत्थ विहं ७	विलेवण विहं ८	पुप्फ विहं ९
वस्त्र विधि	बिलेपन विधि	पुष्प विधि
आभरण विहं १०	धूप विहं ११	पेज विहं, १२
गहणां पहरवा विधि	धूपकी विधि	दूध आदि पीवाकी विधि
भक्खण विहं १३	उदन विहं १४	सूप विहं १५
सूंखड़ी आदि भक्षण की विधि	चावल की विधि	दालकी विधि
विगय विहं १६	साग विहं १७	महुर विहं १८
विगयकी विधि	सागकी विधि	मधुर तथा वेलादि फल
जीमण विहं १९	पाणी विहं २०	मुखबास विहं २१
जीमणकी विधि	पाणींकी विधि	मुखवास तांबूलादि की विधि
वांहण विहं २२	सयण विहं २३	पन्नी विहं २४
गाड़ी प्रमुखकी विधि	सोवाकि विधि पाटा कुरसी आदिपर	पगरखी की विधि
सचित्त विहं २५	द्रव्य विहं २६	
सचित्त की विधि	द्रव्यकी विधि	

ए छवीस बोलांकी मर्याद करी, जिण उपरान्त भोगवूं नहीं मनसा, वायसा, कायसा, द्रव्यथकी एहिज द्रव्य खेतथकी सर्व खेतांमें, कालथकी जाव

जीवलग, भावथकी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित गुणथकी संवर निर्जरा, एहवा मांहरा सातमां व्रत के विषै जे कोई अतिचार दोष लागो हुवे ते आलोऊं पच्चखाणां उपरान्त सचित्तरो आहार कीनो होय १ पच्चखाणां उपरान्त द्रव्यरो आहार कीनो होय २ पच्चखाणां उपरान्त गहिणां अधिका पहख्या होय ॥ ३ ॥ पच्चखाणां उपरान्त कपड़ा अधिका पहख्या होय ॥ ४ ॥ पच्चखाणां उपरान्त उपभोग परिभोग अधिका भोगव्या होय। तस्समिच्छामि दुक्कडं।

पंदरह करमादान जाणवा जोग छै पण आदरवा जोग नहीं ते कहै छै

इंगालकम्मे १ — अग्नि करि लूहारादि कर्म

वणकम्मे २ — वन कर्म ते बनमें घास, दरखतादि काटवो

साड़ीकम्मे ३ — सकट कर्म ते गाड़िप्रमुखनो कर्म

भाड़ी कम्मे ४ — भाड़ा कर्म

फोड़ी कम्मे ५ — लूपादि कर्म ते नारेल सुपारी पत्थर आदि फोड़वो

दन्तवाणिज्ये ६ — दांतको विणज ते व्योपार

लक्खवाणिज्ये ७ — लाखको वाणिज्य

रसवाणिज्ये ८ — रस व्यापार ते घी, तेल सहतादि

केसवाणिज्ये ९ — बाल चंमरादि व्योपार

विषवाणिज्ये १०   जन्तु पिलणयां कम्मे ११
जहरको व्यापार   कल घाणी प्रमुख व्यापार
निलच्छणियां कम्मे १२   दवगीदावणियां कम्मे १३
कसी बधियादि कर्म ते   दावानलदेवो कर्म
ज्यानवरांने बाधी कर्म

सर द्रह तलाव सोसणियां कम्मे १४   असइजण
सरोवर द्रह तलाव सोषाया ते कर्म   असंजतीनें
पोसणियां कम्मे १५ ॥ इति ॥
पोषवा नो कर्म

ए पन्दरे कर्मादान मर्याद उपरान्त सेव्या सेवाया होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥

आठमूं अनर्थ दण्ड विरमण व्रत पांचां बोलांकरी ओलखीजे, द्रव्यथको अवज्झाणाचरियं १
भूंडा ध्यान नो आचरवो

पम्माय चरियं २   हंसपयाणं ३   पावकम्मावएसं ४
प्रमाद करवो   प्राण हिंसा   पाप कर्मको उपदेश

ए च्यार प्रकारे अनरथ दंड आठ प्रकारका आगार उपरान्त सेऊं नहीं ते कहे छे।

आएहिउवा १   नाएहिउवा २   आघारिहिउवा ३
आपणे हित   न्यातिके हित   घरके हित
परिवारहिउवा ४   मित्तहिउवा ५   नागहिउवा ६
परिवार के हित   मित्र के हित   नाग देवता निमित्त

भूतहिउवा ७ जल्खहिउवा ८
भूत देवता निमित्त जक्ष देवता निमित्त

द्रव्यथकी एहिज द्रव्य चेत्रथकी सर्व चेत्रांमें कालथकी जाव जीव लग, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा, एहवा म्हांरा आठमां ब्रतकि विषे जे कोई अतिचार दोष लागोहुवे ते आलोऊं ।

कंदर्प्पनी कथा कीधी होय १ भंडकुचेष्टा कीधीहोय २
काम क्रीडाकी कथा करवो भांडनीपरे कुचेष्टाकरी होय
मुखसे अरि वचन बोल्या होय ३ अधिकरण
मुखसे खोटा वचन बोल्या होय नाताजोडकर
जोड़ मुकाया होय ४ उपभोग परिभोग
तुड़ाया तथा स्त्री भरतार नो विरह कियो एकबार भोग में आवे ते बारम्बार भोग में आवे ते
अधिक भोगव्या होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं
मर्याद उपरांत अधिक भोग्या होय ते तो मिच्छामि दुकडं

॥ इति ॥

नवमो सामायक ब्रत पांचां बोलांकरी ओलखीजे
करेमि भन्ते सामाईयं सावज्जं जोगं पच्चखामि
करूं छूं मैं हे भगवंत सामायक सावद्य जोग पच्चखाण

जाव नियम (मुहूर्त्त एक) पज्जवासामि दुविहिं
यावत नियम एक मुहूर्त्त ते सेऊं छूं दोय करण
दोय घड़ी

तिविहेणं नकरेमि नकारवेमि मनसा वायसा
तीन जोग नही करूं नही कराऊं मनसे बचन से

कायसा तस्स भंते पडिकमामि निन्दामि गरिहामि
शरीरसं तिणसूं हे पड़िकमूं निन्दूं छूं ग्रहण ते
भगवान निषेधूं छूं

अप्पाणं वोसिरामि ॥
पाप ते आतमांनेवोलराऊं छूं

द्रव्यथकी कने राख्या ते द्रव्य क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्रांमें कालथकी एक मुहूर्त तांई भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुणथकी संवर निर्जरा एहवा नवमां बृतके विषे जे कोई अतिचार दोष लागो हुवे ते आलोऊं ।

मन बचन कायाका माठा जोग प्रवर्ताया होय १ माठ़वा ध्यान प्रवर्ताया होय२ सामायकमें समता नहीं करी होय ३ अण पूगी पारी होय ४ पारवो विसार्यो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति ॥

दशमों देशाविगासी बृत पांचां बोलांकरी ओलखीजे द्रव्यथकी दिन प्रते प्रभातथी प्रारंभीनें पूर्वादि

छव दिशिरी मर्याद करी तिण उपरान्त जाई पांच आस्रव द्वार सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं तथा जेतली भूमिका आगार राख्या तिणमें द्रव्यादि करी मर्याद करी तिण उपरान्त सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्य थकी एहिज द्रव्य क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्रां में कालथकी जेतलो काल राख्यो भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुणथकी संवर निर्जरा एहवा म्हारै दशमा व्रतके विषे जे कोई अतिचार दोष लागो ते आलोऊं ।

नवीं भूमिका बारली वस्तु अणाई होवे १ मुक लाई होवे २ शब्दकरी आपो जणायो होय ३ रूप देखाई आपो जणायो होय ४ पुद्गल न्हाखी आपो जणायो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति ॥

इग्यारमूं पोषद व्रत पांचां बोलांकरी ओलखीजै द्रव्यथकी ।

असण पाण खादिम स्वादिमनां पच्चखाण
आहार पाणी मेवादिक पान सुपारीदिक को पच्चखाण
अवम्भनां पचखाण उमकमणी सुवन्ननां पचखाण
मैथुन सेवाका त्याग बोसरायो हुयो रत्न सोना का पच्चखाण
माला वणग विलेवन नां पचखाण
पुष्पमाला, गुलाल रंगादिक चन्दनादिक नो विलेपनका त्याग

संस्थ मुसलादि सावज्ज जोगरा पच्चखाण
शस्त्र मूसलादिक सावद्य जोग का पचखाण

इत्यादि पच्चखाण, कनै द्रव्यराख्या जिण उपरान्त पंच आस्रव द्वार सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्यथी एहिज द्रव्य क्षेत्रथी सर्व क्षेत्र में कालथकी (दिवस) अहो रात्रि प्रमाण भाव थकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुणथकी संवर निर्जरा एहवा म्हारे इग्यारमां व्रतके विषै जे कोई अतिचार दोष लागो होवे ते आलोऊं ।

सिज्जा संथारो अपड़िलेहाहोय दुपड़िलेहा
सोवाकी जगां विसतरो पडिलेहा नही होय अच्छी तरह नहीं

होय १ अप्रमार्ज्या होय दुप्रमार्ज्या होय २
पडलेहना नही प्रमार्ज्या आच्छी तरह नही प्रमार्ज्य
करी

उच्चारपासवणरी भूमिका अपड़िलेहीहोय दुपड़ि
छोटी वड़ी नीतकी जमीन नहीं पड़िलेही होय अथवा

लेही होय ३ अप्रमार्जी होय दुप्रमार्जी होय ४ पोषहमें निन्दा विकथा कषाय प्रमादकरी होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति ।

बारमूं अतिथी संविभाग व्रत पांचां बोलांकरी ओलखीजे द्रव्यथकी ।

समणे निगंथे फासू एसणीज्जेणं असणं १
श्रमण निग्रंथ वे फासुक निर्दोष आहार
अचित

पाणं २ खादिमं ३ स्वादिमं ४ वत्थ ५ पड़िग्गह ६
पाणी मेवो लोंग सुपारी आदि वस्त्र पात्रो
कांबलं ७ पाय पुंछणं पाड़ियारा ९ पीढ
कांबलो पग पुंछणो आचीनें पाछा पाटा
भोलावे ते

फलग १० सिज्या ११ संथारो १२ औषद १३
बाजोटादि जमीन जायगां त्रणादिक १ दवाई
भेषद १४ पड़िलाभमाणे विहरामि ॥
चूर्णादि घणीं मिली प्रतिलाभ तो थको विचरूं

इत्यादिक चवदे प्रकारनूं दान शुद्ध साधुने देऊं देवाऊं देवता प्रतेभलो जाणूं मनसा वायसा कायसा द्रव्यथकी एहिज कलपतो द्रव्य, क्षेत्रथकी कलपे तके क्षेत्रमें, कालथकी कलपे जिन कालमें, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुण थकी संवर निर्जरा, एहवा म्हांरा बारमा व्रतके विषै जे कोई अतिचार दोष लागो होवे ते आलोऊं सूजती वस्तु अचित पर मेली होय १ सचित्तथी ढांकी होय २ काल अतिक्रम्यो होय ३ आपणी वस्तु पारकी पारकी

वस्तु आपणी कीधी होय ४ भावीं बैठ साधु साध्वीयां-
की भावनां नहीं भावी होय तो मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति ॥

अथ संलेखणा की पाटी ।

इह लोगा संसह पउगो १ परलोगासंसह
इह लोककी यशकी तथा परलोक में सुखकी
द्रव्यादिक की इच्छा
पउगो २ जीविया संसह पउगो ३ मरणाउ संसह
बांछा जीवत की इच्छा मरण की
पउगो ४ काम भोगा संसह पउगो ५ मासु
इच्छा काम भोगकी इच्छा ए सुक्ने
जहुज्ज मरणान्तें ।
मर्णान्त तक मत होज्यो ॥ इति ॥

अथ अठारे पाप ।

प्राणातिपात १ मृषावाद २ अदत्तादान ३
मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९
राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ पैशुन्य
१२ पर परिवाद १५ रति अरति १६ माया मोसो १८
मिथ्या दर्शन शल्य ॥ इति ॥

अथ तस्स सव्वस ।

तस्स सव्वस देवसी यस्स आयारस्स दुचिन्तियं दुभासियं
ते सर्व दिवस में अतिचार खोटी चिन्तवनां खोटी भाषा

दूचिट्ठीयं आलोयंते पड़िक्कमामि निन्दामि
खोटी चेष्टा कायाकी आलोऊं तेह पडिकमेऊं निन्दूं
गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ॥
ग्रहणा करूं पाप कर्मथी आतमां नें वोसराऊं

॥ इति ॥

अथ तस्सधम्मस ।

तस्सं धम्मस्स केवली पन्नतस्स अब्भुट्ठि एमि
तेह धर्म केवली परूप्यो तेहने विषय उठ्यो छूं
आराहणाए विरउमि विराहणाए सव्वेतिविहेणं
आराधन निमित्त निवर्तू छूं वीराधनाथी अतिचार सर्व त्रिविध करी
पडिक्कंतो, वंदामि जिन चौवोसं ॥
पड़िकमूं छूं वांदूं छूं जिनराज चौवीस

॥ इति ॥

अथ मंगलिक ।

चत्तारि मंगलं अरिहन्ता मङ्गलं सिद्धा मङ्गलं
च्यार मंगलिक अरिहन्त मंगल छे सिद्ध मंगलकारी छे
साहु मङ्गलं केवली पन्नत्तो धमो मङ्गलं ॥
साधु मंगल केवली परूप्यो धर्म ते मंगल
चत्तारि लोगुत्तमा अरिहन्ता लोगुत्तमा
ए च्यार लोकमें उत्तम जाणवा अरिहन्त लोकमें उत्तम
सिद्धा लोगुत्तमा साहुलोगुत्तमा केवली
सिद्ध लोकमें उत्तम साधु लोकमें उत्तम केवली

पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमा चत्तारि सरणं
प्ररूप्यो धर्म ते लोक में उत्तम च्यार शरणां
पवज्जामि अरिहन्ता सरणं पवज्जामि सिद्धा
ग्रहण करूं अरिहन्तों का शरणां ग्रहण करता हूं सिद्धांका
सरणं पवज्जामि साहु सरणं पवज्जामि केवली
शरणा लेता हूं साधुका शरण है केवली
पन्नत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि।
प्ररूपित धर्मका शरण ग्रहण करता हूं
च्यारों सरणा एसगा अवर न सगो कोय जे भवप्राणी
आदरे अक्षय अमर पद होय।

॥ इति ॥

अथ देवसि प्रायश्चित।

देवसी प्रायश्चित विसोद्धनार्थं करेमि काउसग्गं
दिवसनों प्रायश्चित शुद्ध करवाने अर्थे करू छूं काउस्सग

॥ इति प्रतिक्रमणं ॥

अथ पडिक्कमणां करने की विधि।

प्रथम चौवीस्थो करणो जिणमें

१ इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी। २ तस्सुत्तरी की पाटी। ध्यानमें इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी मन में चितारकर एक नवकार गुणनों। ३ लोगस्स उज्जो-गरे की पाटी। ४ नमोत्थुणं की पाटी।

१ प्रथम आवसग्ग सामायक में ।

१ आवस्सई इच्छामिणं भंते ।

२ नवकार एक ।

३ करेमि भंते सामाइयं ।

४ इच्छामिठामि काउसग्गं ।

५ तस्सुत्तरी की पाटी ।

ध्यानमें ९९ नन्नाणवे अतिचार

आगमें तिविहे पन्नते की पाटी तिणमें ज्ञानका चवदे अतिचार ।

दंसण श्रीसमत्ते की पाटी तिणमें समकित का ५ अतिचार ।

बारे ब्रतांका अतिचार ६० साठ तथा १५ पंदरह कर्मादान ।

इह लोग संसह पउगोकी पाटी अतिचार ५ संलेखणांका ।

अठारे पाप स्थानक कहणा ।

इच्छामि ठामि आलोऊं जो मैं देवसी आयार-काउ ए पाटी कहणी ।

एक नवकार कह पारलेणी ।

॥ इति प्रथम आवसग्ग समाप्त ॥

दूसरा आवस्सग की आज्ञा ।

लोगस्स को पाटो ।

॥ दूजो आवस्सग समाप्त ॥

तीजा आवस्सग की आज्ञा ।

दोय खमासमणां कहणा ।

॥ तीजो आवस्सग समाप्त ॥

चौथा आवस्सग की आज्ञा ।

उभाथकां ध्यानमें कह्या सो प्रगट कहणा ।

८ आठ पाटी बैठा थकां कहणी जिणांकी विगत ।

१ तस्स सव्वस्सको पाटो ।

२ एक नवकार ।

३ करेमि भंते समाइयं को पाटो ।

४ चत्तारि मङ्गलं को पाटो ।

५ इच्छामि ठामि पडिक्कमेउ को पाटो ।

६ इच्छामि पडिक्कमेउ को पाटो ।

७ आगमें तिविहे को पाटो ।

दंसण श्री समकीत्त को पाटो ।

ए आठ पाटो कही, बारे व्रत अतिचार सहित कहणा ।

पांच संलेषणा का अतिचार कहणा ।

अठारे पाप स्थानक कहणा ।

इच्छामि ठामि पड़िक्कमेउ जो मैं देवसीकी पाटी कहणी तस्स धमस्स केवली पन्नतस्सकी पाटी, दोय खमासमणां कहणा ।

पांच पदांकी वंदणा कहणी ।

सातलाख पृथ्वीकाय सातलाख अप्पकाय इत्यादि खमत खामणाकी पाटी ।

॥ चौथो आवस्सग समाप्त ॥

पंचमा आवस्सग को आम्नाऌई कहै ।

१ देवसी प्रायश्चित् विसोधनार्थं करेमि काउसग्गं

२ एक नवकार ।

३ करेमिभंते सामाइयं की पाटी ।

४ इच्छामि ठामि काउसग्गं की पाटी ।

तस्सुत्तरी की पाटी ।

ध्यानमें लोगस्स कहणाकी परमपराय रीति से ।

प्रभाते तथा सांझ वक्त ४ च्यार लोगस्स को ध्यान ।

पखीनें १२ बारे लोगस्स को ध्यान ।

चौमासी पखी नें २० बीस लोगस्सको ध्यान सम्वत्सरी ४० चालीस लोगस्स को ध्यान ।

ध्यान पारी लोगस्सकी एक पाटी प्रगट कहणी ।

२ दोय खमासमणां कहणा ।

॥ इति पंचमूं आवस्सग समाप्त ॥

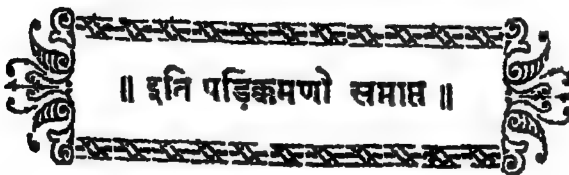
छट्ठा आवस्सगको आज्ञा लेई कहणा तेहनी विगत।

गये कालनूं पडिक्कमणो वर्तमान कालमें समता आगमें कालका पच्चखाण यथा शक्ति करणां।

समाई १ चौवीसत्थो २ वंदना ३ पड़िक्कमणो ४ काउसग्ग ५ पच्चखाण ६ यां छऊं आवसग्गां में ऊंची नीची हिणी अधिकी पाटी कही होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

दोय नमोत्थुणं कहणां जिणमें पहिला में तो सिद्धिगई नाम धेयं ठाणं संपताणं नमो जिणाणं।

दूजा नमोत्थुणं मे सिद्धिगई नाम धेयं ठाणं संपवे-कामो नमो जिणाणं।



❁ अथ तेरा द्वार ❁

प्रथम मूल द्वार।

१ मूल १ दृष्टान्त २ कुण ३ आत्मा ४ जीव ५ अरूपी ६ निरवद्य ७ भाव ८ द्रव्य गुण पर्याय ९ द्रव्यार्थिक १० आज्ञा ११ विनय १२ तलाव १३ ए तेरा द्वार जाणवा, प्रथम मूल द्वार कहे छे—जीव ते चेतना लक्षण, अजीव ते अचेतना लक्षण, पुन्य ते शुभ कर्म, पाप ते अशुभ कर्म कर्म ग्रहे ते आस्रव, कर्म रोके ते संवर, देशथकी कर्म तोड़ी देशथी जीव उज्वल थायं ते निर्जरा, जीव संघाते शुभाशुभ कर्म बंध्या ते बंध, समस्त कर्मां से मूकावे ते मोक्ष।

॥ इति प्रथम द्वार सम्पूर्ण ॥

दूसरो दृष्टान्त द्वार।

जीव चेतन का २ दोय भेदः—

एक सिद्ध, दूजो संसारी, सिद्ध कर्मां रहित छै, संसारी कर्मां सहित छै, तिणरा अनेक भेद छै—

सूक्ष्म अने बादर, त्रस नें स्थावर, सन्नी अनें असन्नी, तीन वेद, च्यार गति, पांच जाति छव काय. चौदे भेद जीवनां, चौबीस दंडक, इत्यादिक अनेक भेद जाणवा, ते चेतन गुण ओलखावानें सोनानों दृष्टान्त कहे छे, जिम सोनानों गहणों भांजी भांजी नें और और आकारे घड़ावे तो आकार नों बिनाश थाय पण सोनानों बिनाश नथी; तिम कर्मों ने उदय थी जीव की पर्याय लपटे पण मूल चेतन गुण को विनाश नहीं ।

अजीव अचेतन तिणरा पांच भेदः—

धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति, काल पुद्गलास्ति, तिणमें च्यारांकी पर्याय पलटे नहीं एक पुद्गलास्ति की पर्याय पलटे ते ओलखवा नें सोनानों दृष्टान्त कहे छे जिम सोनानों गहणो भांजी भांजी और और आकारे घड़ावे तो आकार नों विनाश होय सोनानों बिनाश नहीं, ज्यूं पुद्गल की पर्याय पलटे पण पुद्गल गुण को बिनाश नहीं ।

पुन्य ते शुभ कर्म, पाम ते अशुभ कर्म ते पुन्य पाप ओलखावाने पथ्य अपथ्य आहार नो दृष्टान्त

कहै छै कदेक जीवकै पथ्य आहार घटै और अपथ्य आहार बधै; तो जीव कै निरोगपणों घटै अनै सरोगपणों बधै, कदे जीवरै अपथ्य आहार घटै पथ्य बधै तब जीवरै सरोगपणो घटै अनै निरोगपणों बधै पथ्य अपथ्य दोनूं घट जाय तो प्राणी मरण पामें, ज्यों जीवकै पुन्य घटै अरु पाप बधै तो सुख घटै अनै दुःख बधै, कदे जीवरै पुन्य बधै, अरु पाप घटै, तो सुख बधै, अनै दुख घटै, पुन्य पाप दोनूं खय होय तो जीव मोक्ष पामें, कर्म ग्रह ते आस्रव ते ओलखावानैं तीन दृष्टान्त पांच कहण कहै छै।

१ प्रथम कहण।

१ तलाव रे नालो ज्यूं जीवरे आस्रव।

२ हवेली के बारणों ज्यों जीवरे आस्रव।

३ नाव के छिद्र ज्यों जीवरे आस्रव।

२ दूजो कहण कहै छै।

१ तलाव अनै नालो एक ज्यूं जीव आस्रव एक।

२ हवेली बारणों एक ज्यों जीव आस्रव एक।

३ नाव अनै छिद्र एक, ज्यूं जीव आस्रव एक।

३ कर्म आवे ते आस्रव ते ओलखावानें

३ तीजो कहण कहे छे ।

१ पाणी आवे ते नालो ज्यों कर्म आवे ते आस्रव ।

२ मनुष्य आवे ते बारणों ज्यों कर्म आवे ते आस्रव ।

३ पाणी आवे ते छेद्र ज्यों कर्म आवे ते आस्रव ।

४ इम कह्या थकां कोई कर्म अने आस्रव एक श्रद्धे तेहनें दोय श्रद्धावाने

चौथो कहण कहे छे ।

१ पाणी अने नालो दोय ज्यों कर्म अने आस्रव दोय ।

२ मनुष्य अने बारणों दोय ज्यों कर्म अने आस्रव दोय ।

३ पाणी छेद्र दोय ज्यों कर्म अने आस्रव दोय ।

५ विशेष ओलखावाने पांचमूं कहण कहे छे ।

१ पाणी आवे ते नालो पण पाणी नालो नहीं ज्यूं कर्म आवे ते आस्रव पण कर्म आस्रव नहीं ।

२ मनुष्य आवै ते बारणों पण मनुष्य बारणों नहीं, ज्यों कर्म आवै ते आस्रव पण कर्म आस्रव नहीं ।

३ पाणी आवै ते छेद्र पण पाणी छेद्र नहीं ज्यों कर्म आवै ते आस्रव पण कर्म आस्रव नहीं ।

कर्म रोके ते संबर ओलखावाने तीन दृष्टान्त कहे छे ।

१ तालाव रो नालो रूंधे ज्यूं जीवरे आस्रव रूंधे ते संबर ।

२ हवेली रो बारणों रूंधे ज्यूं जीवरे आस्रव रूंधे ते संबर ।

३ नावांरे छेद्र रूंधे ज्यूं जीवरे आस्रव रूंधे ते संबर ।

देशथकी कर्म तोड़ी जीव देशथी उज्ज्वल थाय ते निर्जरा ओलखावाने तीन दृष्टान्त कहे छे ।

१ तालावरो पाणी मोरीयांदिक करी ने काढे ज्यूं जीव भला भाव प्रवर्तावी ने जीव रूपीयो तलावरो कर्म रूपीयो पाणी काढै ते निर्जरा ।

२ हवेलीरो कचरो पूंजी पूंजी ने काढै ज्यूं भला

भाव प्रवर्तावी ने जीव रूपणी हवेली रो कर्म रूपीयो कचरो काढै ते निर्जरा ।

३ नावां को पाणी उलेची २ ने काढै ज्यूं जीव भला भाव प्रवर्तावी ने जीव रूपणी नावांको कर्म रूपीयो पाणी काढै ते निर्जरा ।

जीव संघाते कर्म बंधिया हुया ते बंध ते ओलखावाने छव बोल कहे छे ।

१ पहिले बोले कहो स्वामीजी जीव अने कर्म नी आदि छै ए बात मिले के न मिले । गुरु बोल्या न मिले (प्रश्न) क्यूं न मिले गुरु बोल्या ए उपनीं नहीं ।

२ दूजे बोले कहो स्वामीजी पहिली जीव और पाछे कर्म ए बात मिले । गुरु बोल्या नहीं मिले प्रश्न—क्यों न मिलेः—उ०—कर्म विनां जीव रह्यो किहां मोक्ष गयो पाछो आवे नहीं यों न मिले ।

३ तीजे बोल कहो स्वामीजी पहली कर्म और पाछे जीव ए मिले । गुरु कहे नहीं मिले ।

प्र०—क्यों न मिले । गुरु कहै कर्म कियां विना हुवे नहीं तो जीव बिना कर्म कुण किया ।

४ चौथे बोले कहो स्वामीजी जीव कर्म एक साथ उपना ए मिले गुरू कहे न मिले।

प्र०—किणन्याय। उ०—जीव कर्म या दोयां ने उपजावण वालो कुण।

५ पांचमें बोले जीव कर्म रहित छे ए बात मिले। गुरू कहे न मिले। प्र०—किणन्याय। उ०—ए जीव कर्म रहित होवे तो करणी करवारी खप (चूंप) कुण करे मुक्त गयो पाछो आवे नहीं।

६ छठे बोले कहो स्वामीजी जीव अने कर्म नों मिलाप किण विधि थाय छे गुरू कहे अपच्छाणु पूर्वं पणे अनादि कालसे जीव कर्म नो मिलाप चल्यो जाय छे।

तिण बंधरा ४ च्यार भेद छे।

प्रकृति बंध कर्म सभावरे न्याय १ स्थिति बन्ध काल व्यवहाररे न्याय २ अनुभाग बन्ध रस बिपाकरे न्याय ३ प्रदेश बन्ध जीव कर्म लोली भूतरे न्याय।

ते ओलखावाने तीन दृष्टान्त कहे छे।

१ तेल अने तिल लोली भूत ज्यों जीव कर्म लोली भूत।

२ घृत दूध लोली भूत ज्युं जीव कर्म लोली भूत।

३ धातू माटी लोली भूत ज्युं जीव कर्म लोली भूत।

समस्त कर्मांसे मूकावे ते मोक्ष ओलखावाने तीन दृष्टान्त कहे छै।

१ घांणियांदिकनूं उपाय करी तेल खल रहित होवे ज्युं तप संजमादि करी जीव कर्मां रहित होवे ते मोक्ष।

२ झेरणादिक को उपाय करी घृत छाछ रहित होवे ज्युं तप संजम करी जीव कर्मां रहित होवे ते मोक्ष।

३ अग्नियादिक नूं उपाय करी धातु माटी अलग होवे ज्यूं तप संजमकरी जीव कर्मां रहित होवे ते मोक्ष।

तीजो कोण द्वार।

जीव चेतन छव द्रव्यांमें कोण नव पदार्थों में कोण छवद्रव्यां मे तो एक जीव नव पदार्थों में पांच जीव १ आस्रव २ संबर ३ निर्जरा ४ मोक्ष ५।

अजीव अचेतन छवमें कोण नवमें कोण:— छव में ५ पांच, नव में ४ च्यार, छव द्रव्यां में तो

धर्मास्ति १ अधर्मास्ति २ आकाशास्ति ३ काल ४ पुद्गलास्ति ५, नव पदार्थों में अजीव १ पुन्य २ पाप ३ बन्ध ४ ।

पुन्य ते शुभ कर्म छवमें कोण नवमें कोण :—छवमें एक पुद्गल, नवमें तीन, अजीव १ पुन्य २ बंध ३ ।

पाप ते अशुभ कर्म छवमें कोण नवमें कोण छवमें एक पुद्गल, नवमें तीन अजीव १ पाप २ बंध ।

कर्म ग्रह ते आस्रव छवमें कोण नवमें कोण :—छवमें जीव, नवमें जीव १ आस्रव २

कर्म रोकै ते संवर छवमें कोण नवमें कोण :—छवमें जीव नवमें जीव संवर ।

देशथी कर्म तोड़ी देशथी जीव उज्जल थाय ते निर्जरा छवमें कोण नवमें कोण:—छवमें जीव, नवमें जीव १ निर्जरा २ ।

बंध छवमें कोण नवमें कोण :—छवमें पुद्गल नवमें अजीव १ पुन्य २ पाप ३ बंध ४ ।

मोक्ष छवमें कोण नवमें कोण:—छवमें जीव नवमें जीव मोक्ष ।

चालै ते कोण चालवानों साझ किणरो:—चालै ते जीव पुद्गल, अनें साझ धर्मास्तिकायनों ।

थिर रहे ते कोण थिर रहवानों साझ किणरो—थिर रहे जीव पुद्‌गल, साझ अधर्मास्तिकायनो।

वस्तु ते कोण भाजन किणरो:—वस्तु तो जीव पुद्‌गल, भाजन आकाशास्तिकायनो।

बरते ते कोण वर्तै किण ऊपरै:—बरते तो काल अने बरते जीव अजीव ऊपर।

भोगवे ते कोण अने भोग में आवे ते कोण:—भोगवे ते जीव, भोगमें आवे ते पुद्‌गल दोय प्रकारे एक तो शब्दादिक पणे दूजो कर्म पणे।

कर्मा रो करता कोण कीधा होवे ते कोण:—करता तो जीव कीधा हुवा कर्म।

कर्मां रो उपाय ते कोण उपनां ते कोण:—उपाय तो जीव उपना ते कर्म।

कर्मां ने लगावे ते कोण लाग्या हुआ ते कोण:—लगावे ते जीव, लागे ते कर्म।

कर्म रोके ते कोण रुक्या ते कोण:—रोके तो जीव, रुक्या ते कर्म।

कर्मां ने तोड़े ते कोण तूट्या ते कोण:—तोड़े ते जीव, अने तूट्या ते कर्म।

कर्मां ने वांधे ते कोण वंध्या ते कोण:—वांधें ते जीव, वंध्या ते कर्म।

कर्मां ने खपावे ते कोण अने चयथया ते कोण:—
खपावे ते जीव चयथया ते कर्म ।

॥ इति तृतीय द्वारम् ॥

॥ अथ चौथो आत्मा द्वार कहे छै ॥

जीव चेतन ते आत्तमा छै अनेरो नहीं ।
अजीव अचेतन आत्तमा नहीं अनेरो छै ।
आत्तमा रे काम आवे छै पण आत्तमा नहीं ।
कोण कोण काम आवे ते कहे छै:—
धर्मास्तिकाय अवलम्ब ने चाले छै।
अधर्मास्तिकाय अवलम्ब ने स्थिर रहे छै ।
आकाशास्तिकाय अवलम्ब ने बसे छै ।
काल अवलम्ब ने कार्य करे छै ।

पुद्गल खाय छै, पीवे छै, पहरे छै, ओढे छै इत्यादि अनेक प्रकारे आत्तमारे काम आवे छै पण आत्तमा नहीं । पुन्य ते शुभ कर्म आत्तमारे शुभ पणें उदय आवे छै पण आत्तमा नहीं ।

पाप ते अशुभ कर्म आत्तमारे अशुभ पणें उदय आवै छै पण आत्तमा नहीं ।

शुभाशुभ कर्म ग्रह ते आस्रव आत्तमा छै अनेरो नहीं ।

कर्म रोके ते संवर आत्तमा छे अनेरो नहीं देश थकी कर्म तोड़ी देशथकी जीव उज्जल थाय ते निर्जरा आत्तमा छे अनेरो नहीं ।

जीव संघाते कर्म बंधाणा ते बंध आत्तमा नहीं अनेरो छे आत्तमा ने बांध राखी छे पण आत्तमा नहीं ।

समस्त कर्मां से मूकावे तें मोक्ष आत्तमा छे अनेरो नहीं ।

॥ इति चतुर्थ द्वारम् ॥

॥ अथ पांचमूं जीव द्वार कहे छें ॥

जीव ते चेतन तिण जीवने जीव कहीजे जीवने आस्रव कहीजे जीवने संवर कहीजे जीवने निर्जरा कहीजे मोक्ष कहीजे ।

अजीव अचेतन ने अजीव कहीजे पुन्य कहीजे पाप कहीजे बंध कहीजे ।

पुन्य ते शुभ कर्म तेहने पुन्य कहीजे तेहने अजीव कहीजे तेहने बंध कहीजे ।

पाप ते अशुभ कर्म तेहने पाप कहीजे अजीव कहीजे बंध कहीजे ।

कर्म ग्रह ते आस्रव कहीजे तेहने जीव कहीजे ।

कर्म रोके ते संवर कहीजे जीव कहीजे ।

देशथकी कर्म तोड़ी देशथकी जीव उज्जलथाय तेहने निर्जरा कहीजे जीव कहीजे ।

जीव संघाते कर्म बंधाणा ते बंध कहीजे अजीव कहीजे पुन्य कहीजे पाप कहीजे ।

समस्त कर्म मूकावे ते मोक्ष कहीजे जीव कहीजे हिवे एहनी ओलखणा न्याय सहित कहे छे ।

जीव ने जीव किणन्याय कहीजे, गये काल जीव छो वर्तमान काले जीव छै आगमें काल जीव को जीव रहसी इणन्याय ।

अजीव ने अजीव किणन्याय कहीजे, गये काल अजीव छो वर्तमान काले अजीव छै आगमें काल अजीव को अजीव रहसी ।

पुन्य ने अजीव किणन्याय कहीजे, पुन्य ते शुभ कर्म छै कर्म ते पुद्गल छै पुद्गल ते अजीव छै ।

पाप ने अजीव किणन्याय कहीजे, पाप ते अशुभ कर्म छै कर्म ते पुद्गल छै पुद्गल ते अजीव छै ।

आस्रव ने जीव किणन्याय कहीजे:—आस्रव तो कर्म ग्रह छै कर्मां रो करता छै कर्मां रो उपाय छै उपाय ते जीव हो छै ।

१ मिथ्यात आस्रव ने जीव किणन्याय कहीजे विप-

रीत सरधान ते मित्थ्यात आस्त्रव विपरीत सरधान जीवरा परिणाम छै।

२ अव्रत आस्त्रव ने जीव किणन्याय कहीजे अत्याग भाव ते जीवरी आशा बांछा अव्रत आस्त्रव छै ते जीवरा परिणाम छै।

३ परमाद आस्त्रव ने जीव किणन्याय कहीजें अण उत्साह पणों ते प्रमाद आस्त्रव छै ते जीवरा परिणाम छै।

४ कषाय आस्त्रव ने जीव किणन्याय कहीजें जोग आत्तमा कही छै कषाय ते जीवरा परिणाम छै ते जीव छै।

जोग आस्त्रव ने जीव किणन्याय कहीजे जोग आत्तमा कही छै जोग ते जीवरा परिणाम छै जोग नाम व्यापार तीनूं ही जोगांरो व्यापार जीवरो छै।

संवर ने जीव किणन्याय कहीजे समाई पच्चखाण संयम संवर विवेक विउसग्ग ये छउं आत्तमा कही छै वलि चारित्र आतमां कही छै चारित्र जीवरा परिणाम छै इणन्याय।

निर्जरा ने जीव किणन्याय कहीजे भला भाव प्रवर्तावी ने जीव देशथी उजलो हुवे ते जीव छै।

बंधने अजीव किणन्याय कहीजे बंध तो शुभ अशुभ कर्म छे ते पुद्गल ते अजीव छे।

मोक्षने जीव किणन्याय कहीजे समस्त कर्म मूकावे ते मोक्ष कहीजे निर्वाण कहीजे सिद्धभगवान कहीजे सिद्ध भगवान ते जीव छे इणन्याय मोक्षने जीव कहीजे।

॥ इति पांचमूं द्वारम् ॥

॥ अथ छट्ठो रूपी अरूपी द्वार कहे छै ॥

जीव अरूपी छे अजीव रूपी अरूपी दोनूं छे पुन्य रूपी छे पाप रूपी छे आस्रव अरूपी छे संवर अरूपी छे निर्जरा अरूपी छे बंध रूपी छे मोक्ष अरूपी छे हिवे एहनी ओलखना कहे छे।

जीवने अरूपी किणन्याय कहीजे छव द्रव्यांमें जीव ने अरूपी कह्यो छे पांच वर्ण पावे नहीं।

अजीव ने अरूपी रूपी दोनूं किणन्याय कहीजे अजीवका पांच भेद धर्मास्ति अधर्मास्ति आकाशास्ति काल, पुद्गल इणमें च्यार तो अरूपी छे यामें पांच वर्ण पावे नहीं एक पुद्गल रूपी छे।

पुन्य ने रूपी किणन्याय कहीजे पुन्य तो शुभ कर्म छे कर्म ते पुद्गल छे पुद्गल ते रूपी छे।

पापने रूपी किणन्याय कहीजे पाप ते अशुभ कर्म छै कर्म ते पुद्गल छै पुद्गल ते रूपी छै ।

आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहीजे कृष्णादिक छऊं भाव लेश्या अरूपी कही छै ।

मिथ्यात आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहीजे मिथ्या दृष्टि अरूपी कही छै ।

अब्रत आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहीजे अत्याग भाव परिणाम जीवरा अरूपी कह्या छै ।

प्रमाद आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहीजे अण उत्साहपणों ते प्रमाद आस्रव छै जीवरा परिणाम छै ते जीव छै जीवते अरूपी छै ।

कषाय आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहीजे श्री ठाणांग दशमें ठाणे जीव परिणामोंरा दश भेदांमें कषाय परिणामी कह्यो छै अने ज्ञानदर्शन चारित्र परिणामी कह्या छै ए जीव छै तिम कषाय परिणामी जीव छै कषायपणों परिणमें ते कषाय परिणामी आस्रव छै जीव छै जीव ते अरूपी छै ।

जोग आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहीजे तीनों हीं जोगांरो उठाण कर्म बल वीर्य पुर्षाकार पराक्रम अरूपी छै ।

संवर ने अरूपी किणन्याय कहीजे अठारे पाप

ठाणांगे बिरमण अरूपी कह्यो छै।

निर्जरा ने अरूपी किणन्याय कहीजे कर्म तोड़-वारो उठांण कर्म बल वीर्य पुरुषाकार प्राक्रम अरूपी छै।

बंधने रूपी किणन्याय कहीजे बंध ते शुभाशुभ कर्म छै कर्म ते पुद्गल छै पुद्गल ते रूपी छै।

मोक्ष ने अरूपी किणन्याय कहीजे समस्त कर्मां से मूकावे ते जीव छै ते हने मोक्ष कहीजे सिद्ध भग-वान कहीजे सिद्ध भगवान ते अरूपी छै।

॥ इति छट्ठो द्वारम् ॥

॥ अथ सातमूं सावद्य निर्वद्य द्वार ॥

जीव तो सावद्य निर्वद्य दोनूं छै। अजीव सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं। पुन्य पाप सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं, अजीव छै। आस्रव का पांच भेद, मिथ्यात आस्रव, अव्रत आस्रव, प्रमाद आस्रव, कषाय आस्रव, ए च्यार तो सावद्य छै अशुभ जोग सावद्य छै शुभ जोग निर्वद्य छै। इणन्याय आस्रव सावद्य निर्वद्य दोनूं छै। संवर निर्वद्य छै। निर्जरा निर्वद्य छै बंध सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं अजीव छै। मोक्ष निर्वद्य छै।

॥ इति सप्तम द्वारम् ॥

॥ अथ आठमूं भाव द्वार कहै छै ॥

भाव ५ पांच—उदय भाव १ उपशम भाव २ चायक भाव ३ चयोपशम भाव ४ परिणामिक भाव ५।

उदय तो आठ कर्मनों अने उदय निपन्नरा दोय भेदः—जीव उदय निपन्न १ दूजो जीवरे अजीव उदय निपन्न २ तिणमें जीव उदय निपन्नरा ३३ तेतीस भेद ते कहै छै ४ च्यार गति ६ छव काय ६ छव लेश्या ४ च्यार कषाय ३ तीन वेद एवं २३ मिथ्याती २४ अव्रती २५ असन्नी २६ अनाणी २७ आहारता २८ संसारता २९ असिद्ध ३० अकेवली ३१ छद्मस्थ ३२ संजोगी ३३

हिवे जीवरे अजीव उदय निपन्नरा ३० भेद ते कहै छै ५ पांच शरीर ५ पांच शरीरका प्रयोग परणम्यां द्रव्य ५ पांच वर्ण २ दोय गन्ध ५ पांच रस ८ आठ स्पर्श एवं तीस।

उपशमरा दोय भेद एक तो उपशम १ दूजो उपशम निपन्न भाव २ उपशम तो एक मोहनी कर्मनों होय उपशम निपन्नरा दोय भेद, उपशम समकित १ उप-

शम चारित्र २।

क्षायकरा दोय भेद, एक तो क्षायक दूजो क्षायक निपन्न, क्षायक तो आठ कर्मा को क्षय अने क्षायक निपन्नरा १३ भेद ते कहै छै।

केवल ज्ञान १ केवल दर्शन २ आत्मिक सुख ३ क्षायक समकित ४ क्षायक चारित्र ५ अटल अवगाहना ६ अमूर्तिक पणों ७ अगुरु लघुपणों ८ दान लब्धि ९ लाभ लब्धि १० भोग लब्धि ११ उपभोग लब्धि १२ वीर्य लब्धि १३।

क्षयोपशमरा दोय भेद, एक तो क्षयोपशम १ दूजो क्षयोपशम निपन्न भाव २ क्षयोपशम तो च्यार कर्मको ज्ञानावर्णी दर्शणावर्णी मोहनी अंतराय, अने क्षयोपशम निपन्न भावरा ३२ वत्तीस बोल ते कहै छै।

ज्ञानावर्णी कर्मरो क्षयोपशम होय तो आठ बोल पामें, केवल वरजी ४ च्यार ज्ञान ३ तीन अज्ञान १ एक भणबो गुणबो।

दर्शणावर्णी कर्मरो क्षयोपशम होय तो आठ बोल पामें ५ पांच इन्द्री ३ तीन दर्शन केवल वरजी।

मोहनी कर्मरो क्षयोपशम होय तो आठ बोल पामें ४ च्यार चारित्र १ देशव्रत ३ दृष्टि।

अन्तराय.कर्मरो क्षयोपशम होवे तो आठ बोल पामें ५ पांच लब्धि ३ तीन वीर्य।

परिणामिकरा दोय भेद सादिया परिणामि १ अनादिया परिणामि २ अनादिया परिणामिकरा १० दश भेद, तिणमें ६ छव द्रव्य धर्मास्ति आदि ७ सातमूं लोक ८ आठमूं अलोक ९ नवमूं भवी १० दशमूं अभवी अने सादिया परिणमीरा अनेक भेद जाणवा। गाम नगर गढ़ा पहाड़ पर्वत पताल समुद्र द्वीप भुवन विमान इत्यादि अनेक भेद आदि सहित परिणामिकरा जाणवा।

जीव आश्री जीव परिणामिरा १० दश भेद ते कहे छे।

गति परिणामी १ इन्द्रीय परिणामी २ कषाय परिणामी ३ लेश्या परिणामी ४ जोग परिणामी ५ उपयोग परिणामी ६ ज्ञान परिणामी ७ दर्शण परिणामी ८ चारित्र परिणामी ९ वेद परिणामी १०

हिवे जीव आश्री अजीव परिणामीरा १० दश भेद कहे छे।

बन्धन परिणामी १ गई परिणामी २ संट्ठाण परिणामी ३ भेद परिणामी ४ वर्ण परिणामी ५ गन्ध परिणामी ६ रस परिणामी ७ स्पर्श परिणामी ८ अगुरु

लघु परिणामी ९ शब्द परिणामी १० । जीवमें भाव पावै ५ पांचूं ही, अजीव पुन्य पाप बन्धमें भाव एक परिणामिक ।

आस्रव भाव दोयः—उदय, परिमाणिक ।

संबर भाव ४ च्यार उदय बरजी ने ।

निर्जरा भाव ३ तीन क्षायक, क्षयोपशम, परिणामिक ।

मोक्ष भाव २ दोय क्षायक, परिणामिक ।

॥ इति अष्टम द्वारम् ॥

॥ अथ नवमूं द्रव्य गुण पर्याय द्वार ॥

द्रव्य तो जीव असंख्यात प्रदेशी गुण ८ आठ ज्ञान, दर्शण, चारित्र, तप, बीर्य, उपयोग, सुख, दुःख, एक एक गुणरी अनन्ती अनन्ती पर्याय ।

ज्ञान करी अनन्ता पदार्थ जाणैं तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

दर्शन करी अनन्ता पदार्थ श्रद्धै तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

चारित्र थी अनन्त कर्म प्रदेश रोकै तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

तपकरो अनन्त कर्म प्रदेश तोड़े तिणसं अनन्ती पर्याय।

वीर्यनों अनन्ती शक्ति तिणसूं अनन्ती पर्याय।

उपयोग थी अनन्त पदार्थ जाणें देखे तिणसं अनन्ती पर्याय।

सुख अनन्त पुन्य प्रदेशसूँ अनन्त पुद्गलिक सुख वेदे तिणसूं अनन्ती पर्याय वलि अनन्त कर्म प्रदेश अलग हुयां थी अनन्त आत्मिक सुख प्रगटे तिणसं अनन्ती पर्याय।

दुःख अनन्त पाप प्रदेश सूं अनन्त दुःख वेदे तिणसूं अनन्ती पर्याय।

अजीव नां पांच भेद :—धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति, काल, पुद्गलास्ति, यांको द्रव्य गुण पर्याय कहै छै।

द्रव्य तो एक धर्मास्ति, गुण चालवानों साझ पर्याय अनन्त पदार्थ ने चालवानों साझ तिणसूं अनन्तो पर्याय।

द्रव्य तो एक अधर्मास्ति गुण स्थिर रहवानो साझ पर्याय अनन्त पदार्थ ने थिर रहवानो साझ तिणसूं अनन्तो पर्याय।

द्रव्य तो एक आकाशास्ति गुण भाजन पर्याय अनन्त पदार्थां नों भाजन तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

द्रव्य तो काल, गुण वर्तमान, पर्याय अनन्ता पदार्थां पर वर्ते तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

द्रव्य तो पुद्गल, गुण अनन्त गले अनन्त मिले, तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

द्रव्य तो पुन्य, गुण जीवके शुभ पणे उदय आवे पर्याय अनन्त प्रदेश शुभ पणे उदय आवे सुख करे तिणसूं अनन्तो पर्याय ।

द्रव्य तो पाप, गुण जीवरे अनन्त प्रदेश अशुभ पणे उदय आवे, अनन्त दुःख करे तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

द्रव्य तो आस्रव गुण कर्म ग्रहवानों पर्याय अनन्ता कर्म प्रदेश ग्रहे तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

द्रव्य तो संवर गुण कर्म रोकवारो, पर्याय अनन्ता कर्म प्रदेश रोके तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

द्रव्य तो निर्जरा, गुण देशथको कर्म प्रदेश तोड़ी देशथी जीव उज्ज्वलो थाय, पर्याय अनन्त कर्म प्रदेश तोड़े तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

द्रव्य तो बंध, गुण जीवने बांध राखवारो, पर्याय अनन्ता कर्म प्रदेश करी बांधे तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

द्रव्य तो मोक्ष, गुण आत्मिक सुख, पर्याय अनन्त कर्म प्रदेश चयक्षुयां अनन्त सुख प्रगटे तिणसूं अनन्तीं पर्याय।

॥ इति नवमूं द्वारम् ॥

॥ अथ दशमूं द्रव्यादिकरो ओलखना द्वार ॥

जीवने पांचां बोलां करी ओलखीजै।

द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य, खेतथी लोक प्रमाण कालथकी आदि अन्त रहित, भावथी अरूपी गुणथी चेतन गुण।

अजीवने पांचां बोलांकरी ओलखीजै:—

द्रव्य कथी अनन्ता द्रव्य खेतथी लोकालोक प्रमाण, कालथकी आदि अंत रहित, भावथी रूपी अरूपी दोनूं, गुणथकी अचेतन गुण।

पुन्य ने पांचां बोलांकरी ओलखीजै:—

द्रव्यथकी अनंता द्रव्य, खेत्रथको जीवांकने, कालथकी आदि अंत रहित, भावथको रूपी गुणथकी जीव के शुभ पणें उदय आवे।

पाप ने पांचां बोलांकरी ओलखीजै:—

द्रव्यथकी अनंता द्रव्य खेत्रथी जीवांकने काल-थकी आदि अंत रहित, भावथकी रूपी, गुणथकी जीवरै अशुभ पणै उदय आवै।

आस्रव ने पांचां बोलांकरी ओलखीजे:—

द्रव्यथकी अनंता द्रव्य खेतथी जीवांकने, काल-थकीरा ३ तीन भेद:—एकेक आस्रवरी आदि नहीं अंत नहीं ते अभवी आसरी एकेक आस्रवरी आदि नहीं पण अंत छै ते भवि आसरी, एकेक आस्रवरी आदि छै अंत छै ते पड़वाई समदृष्टि आसरी तेहनो स्थिति जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्टी देश उणो अर्द्ध पुद्गल प्रावर्तन, भावथकी अरूपी, गुणथकी कर्म ग्रहवानो गुण।

संवर ने पांचां बोलांकरी ओलखीजै:—

द्रव्यथकी तो असख्याता द्रव्य, खेतथी जीवांकने कालथकी आदि अंत सहित, भावथी अरूपी, गुण-थकी कर्म रोकवारो गुण।

निर्जरा ने पांचा बोलां ओलखीजे:—

द्रव्यथकी अकाम निर्जराका तो अनंता द्रव्य सकाम निर्जराका असख्याता द्रव्य, खेतथी जीवांकने, कालथकी आदि अंत सहित, भावथकी अरूपी, गुणथकी कर्म तोड़वारो गुण।

बंधने पांचां बोलांकरी ओलखीजे:—

द्रव्यथी अनंता द्रव्य। खेत्रथी जीवकांने काल-थकी आदि अंत सहित भावथकी रूपी। गुणथकी कर्म बंध रखवारो।

मोक्षने पांचां बोलांकरी ओलखीजे:—

द्रव्यथकी अनंता द्रव्य। खेत्रथी जीवकांने। कालथकी एकेक सिद्धारी आदि अंत नहीं ते घणा काल सिद्धारे न्याय एकेक सिद्धारी आदि छै पण अंत नहीं। ते थोड़ाकाल सिद्धांरे न्याय भावथकी अरूपी। गुणथकी आत्मिक सुख।

धर्मास्तिकायने पांचां बोलांकरी ओलखीजे:—

द्रव्यथकी एक द्रव्य। खेत्रथी लोक प्रमाणे। कालथकी आदि अंत रहित। भावथकी अरूपी। गुणथकी जीव पुद्गलने चालवारो साझ।

अधर्मास्तिकाय ने पांचां बोलांकरी ओलखीजे:—

द्रव्यथकी एक द्रव्य। खेत्रथी लोक प्रमाणे। कालथकी आदि अंत रहित। भावथकी अरूपी। गुणथकी जीव पुद्गलने थिर रहवानों साझ।

आकाशास्तिकायने पांचां बोलांकरी ओलखीजे:—

द्रव्यथकी एक द्रव्य। खेत्रथी लोक अलोक प्रमाणे। कालथकी आदि अंत रहित। भावथकी

अरूपी गुणथकी भाजनगुण ।

कालने पांचां बोलांकरी ओलखोजे:—

द्रव्यथकी अनंता द्रव्य । खेतथी अढ़ाई द्वीप प्रमाणे । कालथकी आदि अंत रहित । भावथकी अरूपी । गुणथकी वर्तमान गुण ।

पुद्गलास्तिकाय ने पांचां बोलांकरी ओलखोजे:—

द्रव्यथकी अनंता द्रव्य । खेतथी लोक प्रमाणे । कालथकी आदि अंत रहित । भावथकी रूपी गुणथकी गलै मलै ।

॥ इति दशम द्वारम् ॥

॥ अथ एकादशमूं आज्ञा द्वार कहे छै ॥

जीव आज्ञा मांहो बाहर दोनूं छै, ते किणन्याय सावद्य कर्तव्य आसरी आज्ञा बाहर छै । अने निर्वद्य कर्तव्य आसरी आज्ञा मांहि छै । अजीव आज्ञा मांहि के बाहर, अजीव आज्ञा मांहि बाहर दोनूं नहीं, ते किणन्याय अजीव छै अचेतन छै जड़ छै ।

पुन्य पाप बंध ए तीनूं आज्ञा मांहि बाहर नहीं अजीव छै ।

आस्रव आज्ञा मांहि बाहर दोनूं छै, किणन्याय आस्रवना पांच भेद मिथ्यात्व १ अव्रत २ प्रमाद ३

कषाय ४ ए च्यार तो आज्ञा बाहर छै जोग आस्रव का दोय भेद शुभ जोग वर्त्ततां निर्जरा हुवे तिण अपे-क्षाय आज्ञा मांहि छै। अशुभ जोग आज्ञा बाहर।

संवर आज्ञा मांहि छै, ते किणन्याय संवरथी कर्म रुके ते श्री वीतराग की आज्ञा मांहि छै।

निर्जरा आज्ञा मांहि छै ते किणन्याय कर्म तोड़-वारो उपाय श्री वीतराग की आज्ञा में छै।

मोक्ष आज्ञा मांहि छै ते किणन्याय सकल कर्म खपावारो करणी श्रीवीतरागकी आज्ञा मांहि छै।

॥ इति एकादशम द्वारम् ॥

॥ अथ बारमूं ज्ञिनय द्वार कहे छै ॥

जीवने जीव जाणवो। अजीवने अजीव जाणवो। पुन्यने पुन्य जाणवो। पापने पाप जाणवो। आस्रव ने आस्रव जाणवो। संवर ने संवर जाणवो। निर्जरा ने निर्जरा जाणवो। बंधने बंध जाणवो। मोक्ष ने मोक्ष जाणवो। ए नव पदार्थ जाणवा योग कह्या छै। इणां में आदरवा जोग ३, तीन, संवर १ निर्जरा २ मोक्ष ३ बाकी छव छांडवा जोग छै।

जीवने छांडवा जोग किणन्याय कहीजे:—आपरा जीव को भाजन करी किणी जीव ऊपर ममत्व भाव न करवो।

अजीव छांडवा जोग किणन्याय कहीजे, किणी अजीव पर ममत्व भाव न करवो।

पुन्य पाप छांडवा जोग किणन्याय कहीजे शुभ अशुभ कर्म छांडवा जोग छै।

आस्रव ने छांडवा जोग किणन्याय कहीजे आस्रव कर्म ग्रहे छै। कर्मां रो उपाय छै। शुभाशुभ कर्म आवानां बारणा छै ते छांडवा जोग छै।

कर्म रोके ते संवर आदरवा जोग छै।

देशथकी कर्म तोड़ी देशथकी जीव उज्जल थायते निर्जरा आदरवा जोग छै।

बंधने छांडवा जोग किणन्याय कहीजे। शुभाशुभ कर्म जीव के बंध रह्या छै ते बंध तो छोड़वा जोग छै।

मोक्ष ने आदरवा जोग किणन्याय कहीजे समस्त कर्म मूकावे ते मोक्ष आदरवा जोग छै।

॥ इति द्वादश द्वारम् ॥

॥ अथ तेरमूं तलाव द्वार कहै छै ॥

तलावरूपी जीव जाणवो। अतलाव ते तलावरूपी अजीव जाणवो। निकलता पाणी रूप पुन्य पाप जाणवो। नालारूप आस्रव जाणवो। नाला बंध रूप

संबर जाणवो। मांहिला पाणी रूप बंध जाणवो। खाली तलाव रूप मोक्ष जाणवो।

यह तेरा द्वारतंत किया श्रीभीखणजी संत

॥ इति तेराद्वार सम्पूर्णम् ॥

अथ लघुदंडक लिख्यते .

पहिलो शरीर द्वार।

शरीर ५—औदारिक १ वैक्रिय २ आहारक ३ तैजस ४ कार्मण ५

सातों ही नारकी और सर्व देवता में शरीर पावे। तीनः—वैक्रिय १ तैजस २ कार्मण ३

च्यार थावर, तीन विकलेन्द्रीमें, तथा असन्नी तिर्यंच, असन्नी मनुष्य, सर्वयुगलियामें शरीर पावे। ३—औदारिक १ तैजस २ कार्मण ३

बाउकाय, सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रीमें शरीर पावे ४ औदारिक १ वैक्रिय २ तैजस ३ कार्मण ४।

गर्भेज मनुष्यामें शरीर पावे पांचूं ही।

सिद्धामें शरीर पावे नहीं।

॥ इति प्रथम शरीर द्वारम् ॥

दूसरो अवगाहनां द्वार।

जघन्य अवगाहनां आंगुल को असंख्यातवों भाग उत्कृष्टी हजार जोजन जाजेरी।

उत्तर वैक्रिय करै तो जघन्य तो आंगुल को संख्यातवों भाग उत्कृष्टी लाख जोजन आजेरी।

पहली नरक के नेरियां की अवगाहनां उत्कृष्टी ७॥। धनुष्य ६ आंगुल की।

दूजी नरक के नेरियां की अवगाहनां साढ़ी पंदरा १५॥ धनुष और १२ आंगुल की।

तीजी नरक के नेरियां की अवगाहनां ३१। धनुष की।

चौथी नरक के नेरियां की अवगाहनां ६२॥ धनुष की।

पांचवीं नरक के नेरियां की अवगाहनां १२५ धनुष की।

छट्ठी नरक के नेरियां की अवगाहनां २५० धनुष की।

सातवीं नरक के नेरियां की अवगाहनां ५०० धनुष की।

जघन्य सातूं ही नारकी की आंगुल को असंख्यातवों भाग, उत्तर वैक्रिय करै तो जघन्य तो आंगुल को संख्यातवों भाग उत्कृष्टी आप आप सूं दूणी।

देवतां की अवगाहनां।

१५ परमाधामी १० भुवनपती, वानव्यन्तर,

विभूमखा, ज्योतिषी, पहला तथा दूजा देवलोक की अवगाहनां ७ हाथ की।

तीसरा तथा चौथा देवलोक की ६ छव हायकी।

पांचवां तथा छठा देवलोक की अवगाहनां ५ पांच हाथकी।

सातवां तथा आठवां देवलोक का देवतां की अवगाहनां ४ च्यार हाथकी। नवमां, दशमां ग्यारवां तथा बारवां की ३ तीन हाथ की अवगाहनां होय।

९ नवग्रै वेग का देवां की २ दोय हाथकी।

पांच अनुत्तर विमानका देवां की अवगा० १ एक हाथकी।

देवता उत्तर वैक्रिय करै तो जघन्य तो आंगुल को संख्यातवों भाग, उत्कृष्टी लाख जोजन अवगाहनां जाणो।

बारवां देवलोकके ऊपरका देव वैक्रिय करै नहीं।

च्यार थावर तथा असन्नी मनुष्यकी जघन्य उत्कृष्टी आंगुल को असंख्यातवों भाग।

वनस्पतिकाय की अव० जघन्य तो आंगुल को असंख्यातवों भाग, उत्कृष्टी हजार जोजन जाजेरी ते कमल फूल की अपेक्षाय।

बेइन्द्री की अव० १२ जोजन की उत्कृष्टी।

तेइन्द्री की अवगा० ३ कोसकी उत्कृष्टी।

चोइन्द्री की अवगा० ४ कोसकी, उत्कृष्टी।

अने जघन्य सगले आंगुल के असंख्यातवें भाग कह्यो। तिर्यंच पंचेन्द्री की अवगाहनां जघन्य तो आंगुलनों असंख्यातवों भाग उत्कृष्टी।

१ जलचर सन्नी असन्नी की १००० जोजन की।

२ थलचर सन्नी की ६ कोसकी, असन्नी की पृथक कोसकी।

३ उरपर सन्नी की १००० जोजन की असन्नी पृथक् जोजन की।

४ भुजपर सन्नी की पृथक कोसकी; असन्नी की पृथक धनुष की।

५ खेचर सन्नी असन्नी की पृथक धनुषकी तिर्यंच पंचेन्द्री उत्तर वैक्रिय करे तो जघन्य आंगुलके संख्यातमें भाग उत्कृष्टी ६०० जोजनकी करे, मोटी अवगाहनां वालो उत्तर वैक्रिय करे नहीं।

असन्नी मनुष्यनों आवगाहनां जघन्य उत्कृष्टी आंगुलके असख्यातमें भाग।

॥ सन्नी मनुष्य की अवगाहनां ॥

५ भरत ५ ऐरवत के मनुष्यां की, अवसर्पिणी के पहिले आरे लागतां ३ कोसकी उतरतां २ कोसकी,

दूजे आरै लागतां २ कोसकी उतरतां १ कोसकी ३ तीजे आरै लागतां १ कोसकी उतरतां ५०० धनुषकी चौथे आरै लागतां ५०० धनुषकी उतरतां ७ हाथकी पांचवें आरै लागतां ७ हाथकी उतरतां १ हाथकी छट्ठे आरै लागतां १ हाथकी उतरतां १ हाथ मठेरी जाणवी।

इसी तरे उत्सर्पिणी में चढ़ती कहणी। वैक्रिय लाख जोजन जाझेरी करे। ५ हेमवय ५ अरुणवय का युगलियां की १ कोसकी, ५ हरिवास ५ रम्यक वासकां की २ कोसकी, ५ देवकुरु ५ उत्तर कुरुकां की ३ कोसकी, महा विदेह खेतका मनुष्यांकी ५०० धनुष की छप्पन अन्तरधिपा युगलियांकी ८०० धनुष की।

सिद्धांकी जघन्य १ हाथ ८ आंगुलकी उत्कृष्टी ३३३ धनुष १ हाथ ८ आंगुलकी।

॥ इति अवगाहणा द्वारम् ॥

३ तीसरो संघयण द्वार।

संघयण ६ तेहनां नांव वज्र ऋषभनाराच १ ऋषभ नाराच २ नाराच ३ अर्द्ध नाराच ४ कीलको ५ छेवटो ६ एवं।

नारकी सर्व देवता में संघयण पावै नहीं, ५ थावर ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य, असन्नी तिर्यंच मे संघ-

यथा १ छेवटो गर्भेज मनुष्य, तिर्यंच में संघयण पावै, ६ छउंहीं ।

युगलिया तिर्यञ्च मनुष्यमें संघयण १ वज्र ऋषभ नाराच सिद्धा में संघयण पावै नहीं ।

॥ इति संघयण द्वारम् ॥

चौथो संठाण द्वार ।

संस्थान ६ तेहनां नाम समचोरंस १, निगव परिमंडल २ सादिज ३ वावन्य ४ कुब्ज ५ हुण्डक ६ ७ सात नारकी, ५ थावर, ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य असन्नी तिर्यञ्च में संठाण हुण्डक । तिणमें पांच थावर की विगत । पृथ्वीकाय को चंद मसूरकी दाल अप्प-कायको बुदबुदो, तेउकाय को सूई को करनालो । वाउकाय को ध्वजा पताका, वनस्पतिका नाना प्रकार का ।

सर्व देवता सर्व युगलिया तथा तेसठ श्लाघा पुरुषा में समचौरसं संस्थान ।

गर्भेज मनुष्य तिर्यंच में ६ छउंही, सिद्धामें पावै नहीं ।

॥ इति संठाण द्वारम् ॥

५ पांचमूं कषाय द्वार ।

कषाय ४ क्रोध, मान, माया, लोभ । २४ दंडक में कषाय ४ पावे, मनुष्य अकषाईपण होय सिद्धा में कषाय नहीं ।

॥ इति कषाय द्वारम् ॥

६ छट्ठो संज्ञा द्वार ।

संज्ञा ४ आहार संज्ञा १ भय संज्ञा २ मैथुन संज्ञा ३ परिग्रह संज्ञा ४।२४ दंडका मे संज्ञा ४ पावे मनुष्य असंज्ञी बहुता पण होय, सिद्धा में सज्ञा नहीं ।

॥ इति संज्ञा द्वारम् ॥

७ सातमूं लेश्या द्वार ।

सात नारकी में पावे ३ माठी (द्रव्य लेश्या लेखवी) तेहनी विगत ।

पहली दूसरी में पावे १ कापोत । तीजी में कापोत वाला घणा नील वाला थोड़ा । चौथी में पावे १ नील । पांचमीं में नील वाला घणां कृष्ण वाला थोड़ा, छठी में पावे १ कृष्ण । सातमीं में पावे १

महाकृष्ण, भुवनपति, वानव्यन्तर, देवतां में लेश्या पावै ४ पद्म शुक्ल टली (द्रव्य लेखवो)

पृथ्वी अप्प वनस्पतिकाय में तथा सर्व युगलिया में लेश्या पावै ४ प्रथम।

तेऊ वाऊकाय, ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य तिर्यंच, में लेश्या पावै ३ माठी।

जोतषी, पहला दूजा देवलोक तथा पहिला किल्विषी में लेश्या पावै १ तेजू।

तीजा चौथा पांचवां देवलोक तथा दूजा किल्विषी में पावै १ पद्म।

तीजा किल्विषी तथा छट्ठा देवलोक से सर्वार्थ सिद्धतांई पावै १ शुक्ल। कितलाइक मनुष्य अलेशी पण होय सिद्धा में लेश्या नहीं।

सन्नी मनुष्य तिर्यञ्च में लेश्या पावै ६ कजंही।

॥ इति लेश्या द्वारम् ॥

८ आठमूं इन्द्रिय द्वार।

इन्द्री ५ श्रोत, चक्षु, घ्राण, रस, स्पर्श एवं ५। ७ नारकी—सर्व देवता, गर्भज मनुष्य गर्भज तिर्यञ्च असन्नी मनुष्य में इन्द्री ५ पावै। ५ थावर में इन्द्री

१ स्पर्श पावै, बेइन्द्री में २ इन्द्री होय, स्पर्श—रस, तेइन्द्री में ३ इन्द्री होय—स्पर्श, रस. घ्राण, चोइन्द्री में ४ होय श्रोतेन्द्री बिना। मनुष्य नो इन्द्रियां पण होय सिद्धांके इन्द्री होय ही नहीं।

॥ इति इन्द्रिय द्वारम् ॥

९ नवमूं समुद्घात द्वार।

समुद्घात ७ वेदनी १ कषाय २ मरणान्त ३ वैक्रिय ४ तेजस ५ आहारक ६ केवल ७।

७ सात नारकी वाउकाय में ४ पहली समुद्घात पावै, भवनपति वानव्यन्तर जोतषी बारमां देवलोकतांई का देवता गर्भज तिर्यञ्च में समुद्घात ५ आहारक केवल टली, ४ थावर ३ विकलेन्द्री असन्नी मनुष्य असन्नी तिर्यञ्च सर्व युगलिया बारवां से ऊपर का देवता में समुद्घात ३ पावै पहली। गर्भज मनुष्यां में समुद्घात ७ सातों ही पावै। केवल्यां में १ केवल समुद्घात पावै तीर्थङ्कर समुद्घात करै नहीं सिद्धां के समुद्घात नहीं।

॥ इति समुद्घात द्वारम् ॥

१० दशमूं सन्नी असन्नी द्वार।

सन्नी के मन असन्नी के मन नहीं होय।

७ नारकी सर्व देवता गर्भज मनुष्य, गर्भज तिर्यञ्च

युगलिया सन्नी होय। ५ थावर ३ विकलेन्द्री असन्नी मनुष्य समूर्छिम तिर्यञ्च ए असन्नी होय। मनुष्य नोसन्नी, नोअसन्नी पण होय, सिद्धसन्नी असन्नी नहीं होय।

॥ इति सन्नी असन्नी द्वारम् ॥

११ एकादशमूं वेद द्वार।

३—वेद स्त्री १ पुरुष२ नपुंसक ३।

७ नारकी—५ थावर ३ विकलेन्द्री असन्नी मनुष्य असन्नी तिर्यञ्च में वेद १ नपुंसक होय। भवनपति बानव्यन्तर जोतषी पहलो दूजो देवलोक पहला किल्विषी, सर्व युगलिया में वेद २ स्त्री तथा पुरुष होय। तीजा देवलोक सूं सर्वार्थ सिद्धतांई वेद १ पुरुष होय। गर्भज मनुष्य, गर्भज तिर्यञ्च में वेद ३ तीनूं होय। मनुष्य अवेदी पण होय सिद्धां के वेद नहीं।

॥ इति वेद द्वारम् ॥

१२ बारमूं पर्याय द्वार

पर्याय ६। आहार १ शरीर २ इन्द्रिय ३ श्वासोश्वास ४ भाषा ५ मनपर्याय एवं ६।

७ नारकी देवतां में पावे ५ पर्याय। मन भाषा भेली लिखवी। ५ थावर में पर्याय ४ होय पहली, असन्नी मनुष्य में पर्याय ३॥, तीन तो पहली आधी में श्वास लेवै तो उश्वास नहीं, उश्वास लेवै तो श्वास नहीं ३ विकलेन्द्री—समुर्छिम तिर्यञ्च पंचेन्द्री में पर्याय ५ पावे मन टल्यो, सिद्धामें पर्याय पावे नहीं। सन्नी मनुष्य तिर्यञ्च में पर्याय पावे ६।

॥ इति पर्याय द्वारम् ॥

१३ तेरहमूं दृष्टि द्वार।

दृष्टि ३ सम्यक्दृष्टि १ मिथ्यादृष्टि २ सममिथ्या दृष्टि ३ एवं ३ होय।

७ नारकी १२ बारमां देवलोक तांई देवता गर्भेज मनुष्य गर्भेज तिर्यञ्च में दृष्टि ३ तीनूं ही होय, ५ थावर में असन्नी मनुष्य में, ५६ अन्तरद्वीप का युगलियां में दृष्टि १ मिथ्या दृष्टि पावे, ९ ग्रैवेयक का देवतां में ३ विकलेन्द्री में, असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्री में ३० अकर्म भूमि का युगलिया में दृष्टि २ सम्यक् १ मिथ्या २ पावे। ५ अनुत्तर विमान का देवता, सिद्धां में दृष्टि १ सम्यक् पावे।

॥ इति दृष्टि द्वारम् ॥

१४ चौदमूं दर्शन द्वार ।

दर्शन ४ चक्षु १ अचक्षु २ अवधि ३ और केवल एवं दर्शन ४ जाणो ।

७ नारकी सर्व देवता गर्भज तिर्यंच में दर्शन ३ पावे चक्षु १ अचक्षु २ अवधि ३ । गर्भज मनुष्यमें दर्शन ४ होय, ५ थावर बेइन्द्री, तेइन्द्री, समुच्छिम मनुष्य सर्व युगलिया में दर्शन २ चक्षु १ अचक्षु २ । सिद्धा में १ केवल दर्शन ही पावे ।

॥ इति दर्शन द्वारम् ॥

१५ पन्द्रहमूं ज्ञान द्वार ।

ज्ञान ५ मति १ श्रुति २ अवधि ३ मनपर्यव ४ केवल ज्ञान एवं ५ ।

७ नारकी सर्व देवता गर्भज तिर्यंच में ज्ञान ३ पावे पहला । गर्भज मनुष्यां में ज्ञान ५ पावे । ५ थावर असन्नी मनुष्य ५६ अन्तरद्वीप का युगलिया में ज्ञान नहीं पावे । ३ विकलेन्द्री असन्नी पंचेन्द्री तिर्यंच में, ३० अकर्म भूमिका युगलिया में ज्ञान २ पावे । मति श्रुति । सिद्धा में १ केवल ज्ञान ही पावे ।

॥ इति ज्ञान द्वारम् ॥

१६ सोलमूं अज्ञान द्वार ।

अज्ञान ३ मति अज्ञान १ श्रुति अज्ञान २ विभंग अज्ञान एवं ३ ।

७ नारकी ६ ग्रैवेकतांई का देवता गर्भेज तिर्यंच गर्भेज मनुष्य में अज्ञान ३ ही पावे । ५ थावर ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य, असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्री, सर्वं युगलिया में अज्ञान २ पावे मति अ० १ श्रुत अ० २ । ५ अनुत्तर का देवता में सिद्धा में अज्ञान पावे नहीं ।

॥ इति अज्ञान द्वारम् ॥

१७ सतरमूं योग द्वार ।

योग १५ मनका ४ सत्य मन १ असत्य मन २ मिश्र मन ३ व्यवहार मन एवं ४ । वचनका जोग ४ सत्य वचन १ असत्य वचन २ मिश्र वचन ३ व्यवहार वचन एवं ४ । कायाका जोग ७ औदारिक १ औदारिक को मिश्र २ वैक्रिय ३ वैक्रिय को मिश्र ४ आहारिक ५ आहारिक को मिश्र ६ कार्मण ७ एवं १५ ।

७ नारकी सर्वं देवता में योग पावे ११ मनका ४ वचनका ४ वैक्रिय ९ वैक्रिय को मिश्र १० कार्मण सर्वं युगलिया में योग पावे ११ मन का ४ वचन का

४ औदारिक ६ औदारिक को मिश्र १० कार्मण ११ । वाउकाय वरजीने, ४ स्थावर असन्नी मनुष्य में योग पावै ३ औदारिक औदारिकको मिश्र कार्मण। वाउकाय में जोग पावे ५ औदारिक १ औदारिक को मिश्र २ वैक्रिय ३ वैक्रिय को मिश्र ४ कार्मण ५ । ३ विकलेन्द्री असन्नी तिर्यँच पंचेन्द्री में पावे ४ औदारिक १ औदारिक मिश्र २ व्यवहार भाषा ३ कार्मण ४ । गर्भँज तिर्यँच में पावे १३ आहारक आहारक को मिश्र टल्यो, गर्भँज मनुषां में पावे १५ ही, चौदमें गुणठाणें अजोगी होय । सिद्धां में जोग पावे नहीं ।

॥ इति योग द्वारम् ॥

१८ अठारमूं उपयोग द्वार ।

७ नारकी ६ नवग्रैवेयक तांई का देवता गर्भँज तिर्यँच में उपयोग पावे ६ ज्ञान तो ३ मति श्रुत अवधि, अज्ञान ३ मति अज्ञान श्रुत अज्ञान विभंग अज्ञान, दर्शन ३ चक्षु अचक्षु अवधि ।

५ थावर में पावे ३ मति, श्रुत, अज्ञान तथा अचक्षु दर्शन ।

असन्नी मनुषा तथा ५६ अन्तरद्वीप का युगलिया

में उपयोग पावे ४ मति, श्रुत, अज्ञान तथा चक्षु अचक्षु दर्शन।

बेइन्द्री तेइन्द्री में उपयोग पावे ५ मति श्रुत ज्ञान मति श्रुत अज्ञान तथा अचक्षु दर्शन।

चौइन्द्री—असन्नी तिर्यंच पंचेंद्री ३० अकर्म भूमि का युगलिया में उपयोग पावे ६ मति श्रुत ज्ञान मति श्रुत अज्ञान चक्षु अचक्षु दर्शन एवं ६। पांच अणुत्तर विमाण में पावे ६ तीन ज्ञान तीन दर्शन।

गर्भेज मनुष्यां में उपयोग पावे १२ सिद्धां में उपयोग पावे २ केवल ज्ञान १ केवल दर्शन २।

॥ इति उपयोग द्वारम् ॥

१९ उगणीसमूं आहार द्वार।

उगणीस दंडक का जीव तो छऊंही दिशा को आहार लेवे।

पांच थावर तीन च्यार पांच छव दिशि को आहार लेवे।

केतला मनुष्य अणआहारिक पण होय सिद्ध भगवन्त आहार लेवे नहीं।

॥ इति आहार द्वारम् ॥

२० बीसमूं उत्पत्ति द्वार।

७ नारकी, आठवां देवलोक तांई का देवता तेउ, वाउकाय ३ विकलेन्द्री असन्नी मनुष्य तिर्यंच सर्व युगलियां में उत्पत्ति पावै गति २ की मनुष्य तिर्यंच।

नवमां देवलोक से सर्वार्थ सिद्धतांई का देवता में उत्पत्ति पावै १ मनुष्य गति की।

पृथ्वी अप्प बनस्पतिकाय में उत्पत्ति पावै ३ गति की (नारकी टली)।

गर्भज मनुष्य तिर्यंच में उत्पत्ति ४ च्यारूं ही गति की।

सिद्धां में १ मनुष्य गति की।

॥ इति उत्पत्ति द्वारम् ॥

२१ इकवीसमूं स्थिति द्वार।

नारकी की स्थिति—

१ पहली नारकी की स्थिति जघन्य १० हजार वर्षकी उत्कृष्टी १ सागर की।

२ दूसरी नारकी की जघन्य १ सागर की उत्कृष्टि ३ सागर की।

३ तीसरी नारकी की जघन्य ३ सागर उत्क्रष्टी ७ सात सागरकी ।

४ चौथी नारकी की जघन्य ७ सागर की उत्क्रष्टी १० सागर की ।

५ पांचमी की जघन्य १० उत्क्रष्टी १७ सागर की ।

६ छट्ठी नारकी की जघन्य १७ उत्क्रष्टी २२ सागर सागरकी ।

७ सातमी नारकी की जघन्य २२ उत्कृष्टी ३३ सागर

भवनपति देवतांकी स्थिति—

दक्षिण दिशिका असुर कुमार की जघन्य १० हजार वर्ष की उत्कृष्टी १ सागरकी, यांकी देव्यां की जघन्य दश हजार वर्षकी उत्कृष्टी ३॥ पल्योपमकी ।

दक्षिण दिशिका ९ नौ निकायका देवतां की जघन्य १० हजार वर्षकी उत्कृष्टी १॥ पल्योपम की, यांकी देव्याकी जघन्य १० हजार वर्ष उत्कृष्टी पौण पल्योपम की ।

उत्तर दिशिका असुर कुमारकी जघन्य १० हजार वर्षकी उत्कृष्टी १ सागर जाझेरी यांकी देव्यां की जघन्य दश हजार वर्षकी उत्कृष्टी ४॥ साडा च्यार पल्योपम की ।

उत्तर दिशिका ९ नौ निकायका देवतांकी जघन्य १० हजार वर्षकी उत्कृष्टी देश उणीं दोय पल्योपमकी देव्यांकी ज० १० हजार वर्षकी। उत्कृष्टी देश उणां १ पल्य०।

वानव्यन्तर देवतां की स्थिति—

जघन्य १० हजार वर्षकी उत्कृष्टी १ पल्योपम की, यांकी देव्यांकी जघन्य दश हजार वर्षकी उत्कृष्टी आधा पल्योपमकी त्रिभूमका देवांकी भी इतनी ही।

जोतषी देवांकी स्थिति—

चन्द्रमांकी जघन्य पाव पल्योपमकी उत्कृष्टी १ पल्योपम १ एक लाख वर्ष अधिक, यांकी देव्यां की जघन्य पाव पल्योपम की उत्कृष्टी आधा पल्य ५० हजार वर्षकी, सूर्यकी जघन्य पाव पल्योपमकी उत्कृष्टी १ पल्योपम १ हजार वर्ष अधिक, यांकी देव्यांकी जघन्य पाव पल्यकी उत्कृष्टी आधी पल्य पांचसौ वर्ष अधिक। ग्रहांकी ज० पाव पल्यकी उ० १ पल्यकी यांकी देव्यांकी ज० पाव पल्य उत्कृष्टी ॥ आधी पल्योपमकी।

नक्षत्रांकी ज० पाव पल्य उ० ॥ आधी पल्यकी यांकी देव्यांकी ज० पाव पल्य, उत्कृष्टी पाव पल्य जाझेरी ।

तारांकी ज० पल्यको आठमूं भाग उ० पाव पल्यकी यांकी देव्यांकी ज० अधपाव पल्य उत्कृष्टी अधपाव जाझेरी ।

बैमानिक देवतां की स्थिति—

१ पहला देवलोक में ज० १ पल्योपम उत्कृष्टी २ सागर की, यांकी परिग्रहि देव्यांकी ज० १ पल्य उ० ७ पल्ल, अपरिग्रहि देव्यांकी ज० १ पल्य उ० ५० पल्योपमकी ।

२ दूसरा देवलोक में ज० १ पल्य जाझेरी उ० २ सागर जाझेरी, यांकी देव्यांकी ज० १ पल्य जाझेरी उ० परिग्रही की ९ पल्य की अपरिग्रही की ५५ पल्योपम की ।

३ तीसरा देवलोक में ज० २ सागर उ० ७ सागर की ।

४ चौथा देवलोक की ज० २ सागर जाझेरी उ० ७ सागर जाझेरी ।

५ पांचवां की ज० ७ सागर उ० १० सागर की ।

६ छट्ठा देवलोक का देवतां की ज० १० सागर उ० १४ सागर की ।

७ सातमां की ज० १४ उ० १७ सागर की ।

८ आठमां की ज० १७ उ० १८ सागर की ।

९ नवमां की ज० १८ उ० १९ सागर की ।

१० दशमां की ज० १९ उ० २० सागर की ।

११ इग्यारमां की ज० २० उ० २१ सागर की ।

१२ बारमां की ज० २१ उ० २२ सागर की ।

१३ पहिला ग्रैवेयक की ज० २२ उ० २३ ।

१४ दूसरा ग्रैवेयक की ज० २३ उ० २४ ।

१५ तीसरा ग्रैवेयक की ज० २४ उ० २५ ।

१६ चौथा ग्रैवेयक की ज० २५ उ० २६ ।

१७ पांचवां ग्रैवेयक की ज० २६ उ० २७ ।

१८ छट्ठा ग्रैवेयक की ज० २७ उ० २८ ।

१९ सातमां ग्रैवेयक की ज० २८ उ० २९ ।

२० आठमां ग्रैवेयक की ज० २९ उ० ३० ।

२१ नवमां ग्रैवेयक की ज० ३० उ० ३१ ।

२२ विजय, १ वैजयन्त, २ जयन्त ३ ।

२५ अपराजित, ४ ए च्यार अनुत्तर वैमानकी ज० ३१ उ० ३३ सागर ।

२६ सर्वार्थ सिद्धिका देवांकी ज० ३३ उ० ३३ सागर ।

नव लोकान्तिक देवतांकी स्थिति ८ सागरकी।

पांच स्थावरकी स्थिति जघन्य अन्तर मुहूर्त्त की उत्कृष्टि पृथ्वीकाय की २२ हजार वर्ष की, अप्पकाय की ७ हजार वर्ष की, तेउकायकी ३ दिन रातकी, वाउकाय की ३ हजार वर्ष की, वनस्पतिकाय की १० हजार वर्ष की।

तीन विकलेन्द्री की जघन्य अन्तर मुहूर्त्त की उत्कृष्टि बेइन्द्री की १२ वर्ष की, तेइन्द्री की ४९ दिन रातकी, चोइन्द्री की ६ महीना की। तिर्यंच पंचेन्द्री की जघन्य अन्तर मुहूर्त्त की उत्कृष्टि जलचर की १ क्रोड़ पूर्व की जलचर सन्नी की ३ पल्योपम की असन्नी की ८४ हजार वर्ष की, उरपुर असन्नी की १ क्रोड़ पूर्व की असन्नी की ५३ हजार वर्ष की, भुजपुर सन्नी की क्रोड़ पूर्व की असन्नी की ४२ हजार वर्ष की, खेचर सन्नी की पल्योपम के असंख्यातमूं भाग असन्नी की ७२ हजार वर्ष की। असन्नी मनुष्य की ज० उ० अन्तर मुहूर्त्त की सन्नी मनुष्य की स्थिति।

५ भरत ५ एरवत का मनुष्यां की पहिलो आरो लागतां ३ पल्यकी उतरतां २ पल्य की, दूसरो लागतां २ पल्य की उतरतां १ पल्य की, तीसरो लागतां १ पल्य की उतरतां क्रोड़ पूर्व की, चौथो आरो लागतां

क्रोड़ पूर्व को उतरतां १२५ वर्ष को पांचमूं लागतां १२५ वर्ष को उतरतां २० वर्ष को छट्ठो लागतां २० वर्ष को उतरतां १६ वर्ष को। उत्सर्पिणी काल में इमहिज चढ़ती कहणो।

पांच महाविदेह खेतां को जघन्य अन्तर मुहूर्त्त उत्कृष्ट १ युगलियां की स्थिति।

युगलियां की स्थिति—

५ हेमवय ५ अरणवयकां को जघन्य देश ऊंणी एक, पल्य को उत्कृष्ट १ पल्य को।

५ हरिवास ५ रम्यकवासकां को जघन्य देश ऊंणी दोय पल्य को उत्कृष्ट २ पल्य को।

५ देवकुरु ५ उत्तर कुरुकां को जघन्य देश ऊंणी तीन पल्य को उत्कृष्ट ३ पल्य को।

५६ अन्तर द्वीप का युगलियां को पल्योपम को असंख्यातमूं भाग को।

एक एक सिद्धां को आदि नहीं अन्त नहीं एक एक को आदि छै पण अन्त नहीं।

॥ इति स्थिति द्वारम् ॥

२२ बाइसमूं समोह्या असमोह्या द्वार।

समोह्यातो समुद्घात फोड़ी ताणावेजो करी मरै, असमोह्या विना समुद्घाते गोली का भड़ाकावत् मरै।

२४ दंडकां का जीव दोनूं प्रकार का मरण करै। सिद्धां में मरण नहीं।

॥ इति समोह्या असमोह्या द्वारम् ॥

२३ मूं चवन द्वार।

६ नारकी आठमां देवलोक तांई का देवता पृथ्वी अप्प वनस्पतिकाय ३ विकलेन्द्री असन्नीमनुष्य में चवन दोय गति को मनुष्य तिर्यञ्च को।

नवमां देवलोक में सर्वार्थ सिद्ध तांई का देवता में चवन १ मनुष्य को सातमी नारकी में तथा तेउ वायु में चवन १ तिर्यंच गति को।

गर्भज मनुष्य तिर्यञ्च, असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्री में चवन च्यारूं ही गति को युगलिया में चवन १ देव गति को सिद्धां में चवन पावे नहीं।

॥ इति चवन द्वारम् ॥

२४ मूं गतागति द्वार।

पहली से छट्ठी नारकी तांई गति २ दंडक आगति २ दण्डकां को मनुष्य, तिर्यञ्च पंचेन्द्री।

सातमीं नारकी की आगति २ दण्डक को मनुष्य, तिर्यञ्च पंचेन्द्री को, गत एक तिर्यञ्च की जाणवी।

भवनपति वानव्यंतर जोतषी पहिला दूजा देवलोक तथा पहिला कल्विषिक देवतां की आगत २ दण्डकां की (मनुष्य, तिर्यंच की) गति ५ दण्डकां की (तिर्यंच मनुष्य तिर्यंच पृथ्वी अप्प वनस्पति की) ।

तीजा देवलोक से आठवां देवलोक तांई गतागत २ दण्डकां की (मनुष्य तिर्यंच) नवमां देवलोक से सर्वार्थ सिद्धि तांई गतागत १ मनुष्य की ।

पृथ्वी अप्प वनस्पतिकाय की आगत २३ दण्डकां की (नारकी टली) गति १० दण्डकां की ५ स्थावर ३ विकलेन्द्री मनुष्य ९ तिर्यंच एवं १० की ।

तेउ वाउकाय में आगत १० दण्डकां की उपरवत् गति ९ दण्डकां की मनुष्य टल्यो ३ विकलेन्द्री में १० की आगत १० की ऊपरवत् ।

असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्री में आगति १० दण्डकां की ऊपरवत् गति २२ दण्डकां की जोतषी वैमानिक टल्यो ।

सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्री में आगति २४ की गति २४

असन्नी मनुष्य में आगत ८ दण्डकां की, पृथ्वी अप्प वनस्पति ३ विकलेन्द्री मनुष्य तिर्यंच एवं ८ अने गति १० दण्डकां की ऊपरवत् ।

गर्भेज मनुष्य में आगति २२ दंडकां की तेउ वाउ टल्यो, गति २४ दंडकां की, ३० अकर्म भूमि का युगलियां में आगति २ दंडकां की मनुष्य तिर्यञ्च गति १३ दंडकां की १० तो भवनपति का बानव्यन्तर ११ जोतषी १२ वैमानिक १३ एवं।

५६ अन्तर द्वीप का युगलिया में आगति २ दंडकां की ऊपरवत् गति ११ दण्डकां की १० तो भवनपति का १ बानव्यन्तर को ११।

सिद्धा में आगति मनुष्य की गति नहीं।

॥ इति गतागत द्वारम् ॥

२५ मूं प्राण द्वार।

७ नारकी सर्व देवता गर्भेज मनुष्य तिर्यञ्च में प्राण १० दशूं ही पावै, स्थावर में प्राण ४ पावै स्पर्श इन्द्री बल १ काया २ श्वासोश्वास ३ आउखो ४ एवं।

बेइन्द्री में पावै ६ तेइन्द्री में पावै ७ चौइन्द्री में पावै ८ प्राण।

असन्नी मनुष्य में पावै ७।

असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्री में १ मन टल्यो।

१३ में गुणठाणे पावै ५ पांच इन्द्रियां का टल्या।

१४ में गुणठाणे पावै १ आउखो बलप्राण सिद्धां में प्राण पावै नहीं ।

॥ इति प्राण द्वारम् ॥

२६ मूं योग द्वार ।

नारकी देवता मनुष्य सन्नी तिर्यंच युगलिया में जोग पावै ३ मन बचन काय का ।

पांच स्थावर असन्नी मनुष्य में १ काया पावै ।

तीन विकलेन्द्री असन्नी पंचेन्द्री में जोग पावै २ बचन काया ।

वीतला मनुष्य अयोगी होय सिद्धां में जोग पावै नहीं ।

॥ इति लघुदण्डकम् ॥



॥ अथ बावन बोल को थोकड़ो ॥

१ पहिले बोले ८ आत्मा में कर्मां री करता किती ? रोकता किती ? तोड़ता किती आत्मा ? करता तो ३ तीन आत्मा—कषाय, जोग, दर्शन। रोकता २ दोय आत्मा—दर्शन, चारित्र। तोड़ता एक जोग आत्मा।

२ दूजे बोले ८ आत्मा में द्रव्य जीव कीती ? भाव जीव कीती ?

१ द्रव्य जीव एक द्रव्य आत्मा।

७ भाव जीव सात आत्मा।

३ तीजे बोले आठ आत्मा में उदय भाव कीती ? यावत परिणामी भाव कीती आत्मा ?

३ उदय भाव तीन—कषाय, जोग, दर्शन।

२ उपशम भाव दोय—दर्शन चारित्र।

६ क्षायक क्षयोपशम छव आत्मा द्रव्य कषाय टली।

८ परिणामिक भाव आठ आत्मा।

४ चौथे बोले आठ आत्मा में सास्वती कीती ? असास्वती कीती ?

१ सास्वती तो एक द्रव्य आत्मा।

७ असास्वती सात आत्मा।

५ में बोले आठ आत्मा में सावद्य केती ? निर्वद्य केती ?

१ द्रव्य आत्मा तो सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं ।

१ कषाय आत्मा सावद्य छै ।

२ जोग तथा दर्शन आत्मा सावद्य निर्वद्य दोनूं छै।

४ ज्ञान, चारित्र, वीर्य, उपयोग, ए च्यार आत्मा निर्वद्य छै ।

६ छठे बोले आठ आत्मा में जाणे किसी ? देखे किसी ? सरधे किसी आत्मा ।

जाणें तो ज्ञान तथा उपयोग आत्मा ।

देखे उपयोग आत्मा ।

सरधे दर्शन आत्मा ।

कला जाणे उपयोग आत्मा, करे जोग आत्मा, कर्म रोके चारित्र आत्मा, तोड़े जोग आत्मा, शक्ति वीर्य आत्मा की ।

७ सातमें बोले उदय का ३३ (तेतीस) बोलां में सावद्य केता निर्वद्य केता ?

१६ सोले बोल तो सावद्य निर्वद्य दोनूँ नहीं ते कहे छै च्यार गति ४, छव काय १०, असन्नी २१, अन्नाणी १२, संसारता १३, असिद्ध १४, अकेवली १५, छद्मस्थ १६ ।

३ तीन भली लेश्या निर्वद्य छै।

१२ बारे सावद्य छै, तीन माठी लेश्या ३, च्यार कषाय ७, तीन वेद १०, मिथ्याती ११, अव्रती १२।

२ आहारता, संजोगी, ए दोय सावद्य निर्वद्य दोनूं ही छै।

८ आठमें बोले जीव पदार्थ किसे भाव? यावत मोक्ष पदार्थ किसे भाव?

१ जीव पदार्थ भाव पांचो ही पावे।

४ अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध, ए च्यार पदार्थ भाव

१ एक परिणामिक।

१ आस्रव पदार्थ भाव दोय उदय परिणामिक।

१ संवर पदार्थ भाव च्यार उदय वरजीनें।

१ निर्जरा पदार्थ भाव तीन—क्षायक, क्षयोपशम, परिणामिक।

१ मोक्ष भाव दोय—क्षायक, परिणामिक।

९ नवमें बोले—उदयका ३३ (तेतीस) बोल किसे किसे कर्म का उदय से तथा किसी आत्मा? १३ तेरा बोल तो नाम कर्म के उदय से, तिणमें च्यार गति, ४, छव काय, १०, तीन भली लेश्या १३।

१२ बारे बोल मोहनीय कर्म के उदय से, च्यार कषाय, ४, तीन वेद, ७, तीन माठी लेश्या, १० मिथ्याती, ११ अव्रती एवं ।

२ दोय बोल ज्ञानावरणी कर्म के उदय से— असन्नी अज्ञाणी ।

२ आहारता, संजोगी, ए दोय बोल मोहनीय, नाम, कर्मना उदय से ।

२ छद्मस्थ, अकेवली, ए दोय बोल ज्ञानावरणी, दर्शणावरणी, अंतराय, यां तीन कर्म का उदयसे

२ संसारता, असिद्धता, ए दोय बोल, च्यार अघातिक कर्म का उदय से, हिवे आत्मा कहे छै ।

१७ सतरे बोल तो अनेरो आत्मा—

च्यार गति ४, छव काय १० अव्रती ११, असन्नी १२, अज्ञाणी १३, संसारता १४, असिद्ध १५, अकेवली १६ छद्मस्थ १७ ।

८ आठ बोल जोग आत्मा—

छव लेश्या ६, आहारता ७, संजोगी ८ ।

४ च्यार कषाय कषाय आत्मा ।

३ तीन वेद कोई कषाय कहे कोई अनेरो कहे ।

१ मिथ्याती दर्शन आत्मा ।

१० दसमें बोले जीव ने जीव जाणें यावत मोक्षने मोक्ष

जाणै ते किसे भाव ?—चायक, चयोपशम, परि-
णामिक, ए तीन भाव ।

११ इग्यारमें बोले जीवने जीव जाणै, यावत मोक्षने
मोक्ष जाणै, ते किसो आत्मा ? उपयोग अने ज्ञान
आत्मा ।

१२ बारमें बोले जीव पदार्थ केती आत्मा ? यावत
मोक्ष पदार्थ केती आत्मा । जीव में आत्मा
पावे आठौं ही । अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध, आत्मा
नहीं । आस्रव तीन आत्मा-कषाय, जोग दर्शन ।
संवर २ दोय आत्मा-दर्शन, तथा चारित्र ।
निर्जरा ५ पांच आत्मा द्रव्य, कषाय, चारित्र,
टलो । मोक्ष पदार्थ अनेरो आत्मा ।

१३ तेरमें बोले—छव में नव में कोण ?
उदय छव में कोण, नव में कोण ?—छवमें पुद्गल,
नव में च्यार—अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध । उप-
शम छव में कोण नव में कोण ?—छव में पुद्गल,
नव में तीन अजीव, पाप बन्ध । चायक छव
में कोण ? नव में कोण ?—छव में पुद्गल, नव में
च्यार—अजीव, पुन्य, पाप बन्ध । चयोपशम छव
में कोण ? नव में कोण ? छव में पुद्गल, नव में
तीन—अजीव, पाप, वन्ध । परिणामिक छव

में कोण ? नव में कोण ?—छव में छव, नव में नव ।

१४ चौदमें बोले उदय निपन्न छव में कोण ? नव में कोण ?—यावत परिणामिक निपन्न छव में नव में कोण ?—

उदय निपन्न छव में कोण ? नव में कोण ?—छव में जीव, नव में जीव, आस्रव । उपशम निपन्न छव में कोण ? नव में कोण ?—छव में जीव, नव में जीव, संवर । क्षायक निपन्न छव में कोण ? नव में कोण ?—छव में जीव, नव में ४ जीव संवर, निर्जरा मोक्ष । क्षयोपशम निपन्न छव में कोण ? नव में कोण—छव में जीव, नव में ३ जीव, संवर; निर्जरा ।

परिणामिक निपन्न छव में कोण ? नव में कोण ? छव में छव, नव में नव ।

१५ पंदरमें बोले आठ कर्म नों उदय, छव में, नव में कोण ?—ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय, अन्तराय ए च्यार कर्मनों उदय तो छव में पुद्गल, नव में तीन:—अजीव, पाप, बन्ध । वेदनी नाम गोत, आयु ए च्यार कर्म नों उदय छव में पुद्गल, नव में च्यार अजीव, पुन्य, पाप, बंध ।

१६ सोलमें बोले मोहनीय कर्म नों उपशम, छव में कोण ? नव में कोण ? छव में पुद्गल, नव में तीन, अजीव, पाप, बंध। बाकी सात कर्म नों उपशम होवे नहीं।

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय, अन्तराय, ए च्यार कर्म नों चायक, छव में कोण ? नव में कोण ?—छव में पुद्गल, नवमें तीन—अजीव, पाप, बंध।

वेदनी नाम गोत ए तीन कर्म नों चायक, छव में कोण ? नव में कोण ?—छव में पुद्गल, नव में च्यार—अजीव, पुन्य, पाप, बंध।

अयुंष को चायक छव में कोण ? नव में कोण ? छव में पुद्गल, नव में तीन—अजीव, पुन्य, बंध।

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय, अन्तराय ए च्यार कर्म नों चयोपशम, छव में कोण ? नव में कोण ? छव में पुद्गल, नव में तीन—अजीव, पाप, बंध। बाकी च्यार कर्म रो चयोपशम होवे नहीं।

१७ सतरमें बोले आठ कर्म ना निष्पन्न नों विगत। छव कर्म नों उदय निपन्न, छव में कोण ? नव में कोण ?—छव में जीव, नव में जीव।

मोहनीय, नाम, ए दोय कर्म नों उदय निपन्न, छव में जीव, नव में जीव, आस्रव।

सात कर्म नों तो उपशम निपन्न होवे नहीं, एक मोहनीय कर्म नों उपशम निप्पन्न होवे, ते छव में जीव, नव में जीव संवर।

ज्ञानावरणी, दर्शणावरणी, अन्तराय, यां तीन कर्म रो क्षायक निप्पन्न छव में जीव, नव में जीव निर्जरा। एक मोहनीय कर्म रो क्षायक निप्पन्न छव में जीव, नव में जीव, संबर, निर्जरा। बाकी च्यार अघातिक कर्म को छव में जीव, नव में जीव, मोक्ष। च्यार अघातिक कर्म रो तो क्षयोपशम निप्पन्न होवे नहीं। ज्ञानावरणी; दर्शनावरणी, अन्तराय; यां तीन कर्म क्षयोपशम निप्पन्न तो छव जीव नव में जीव, निर्जरा। मोहनीय कर्म क्षयोपशम निप्पन्न छव में जीव, नव में जीव संबर, निर्जरा।

१८ अठारमें बोले आठ कर्म नों बंध आदि सत्ता, किसे किसे गुणठाणे—

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय, नाम; गोत ए पांच कर्म नों बंध पहिला गुण ठाणां से दसमां गुणठाणां तांई।

मोहनीय कर्म नों बंध पहिला गुण ठाणां से नवमां गुण ठाणां तांई।

आयु कर्म नों बंध पहिला गुण ठाणां से सातमां तांई। तीजो गुण ठाणों टालो।

वेदनी कर्म नों बंध तेरमां गुण ठाणां तांई। ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय ए तीन कर्म नों उदय अने उदय निष्पन्न नी सत्ता बारमां गुणठाणां तांई।

वेदनी, नाम, गोत्र, आयुष ए च्यार कर्म नों उदय अने उदय निष्पन्न नी सत्ता चौदमां गुण ठाणां तांई।

मोहनीय कर्म नों उदय निष्पन्न पहिला गुण ठाणां से दशमा गुणठाणां तांई। अने सत्ता इग्यारमां गुणठाणां तांई।

१९ उगणीसमें बोले चौदे गुणठाणां को उदय उपशम चायक चयोपशम निष्पन्न कहै छै, ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय, ए तीन कर्म नों उदय निष्पन्न तो पहिला से बारमां तांई।

दर्शन मोहनीय नों उदय निष्पन्न पहिला से सातमां तांई।

चारित्र मोहनीय नों उदय निष्पन्न पहिला से

दशमां तांई ।

वेदनी, नाम, गोत्र, आयुष, ए च्यार कर्म नों उदय निष्पन्न पहिला से चौदमां तांई ।

सात कर्म नों तो उपशम निष्पन्न होवे नहीं, एक मोहनीय कर्म नों होय । तिण में दर्शन मोहनीय नों उपशम निष्पन्न तो चौथा से इग्यामां तांई । चारित्र मोहनीय को इग्यारमें गुण ठाणे हो । ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय ए तीन कर्म नों क्षायक निष्पन्न तेरमें चौदमें गुणठाणे तथा श्री सिद्ध भगवान में । दर्शन मोहनीय को क्षायक निष्पन्न चौथा गुण ठाणां से चौदमा तांई । अने चारित्र मोहणी को बारमा से चौदमा तांई तथा श्री सिद्ध भगवान मांहि ।

वेदनी, नाम, गोत्र, आयु ए च्यार कर्म नों क्षायक निष्पन्न गुणठाणां में पावे नहीं, श्री सिद्ध भगवान में पावै ।

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय ए तीन कर्म नों क्षयोपशम निपन्न तो पहिला से बारमा गुणठाणां तांई ।

दर्शन मोहनीय को क्षयोपशम निपन्न पहिला से सातमा गुणठाणां तांई ।

चारित्र मोहनीय नों क्षयोपशम निपन्न पहिला से दशमा गुणठाणां तांई।

च्यार अघाति कर्म नों क्षयोपशम निपन्न होवे नहीं।

२० बीसमें बोले आठ कर्मामें पुन्य कितना पाप कितना तथा पुन्य कितना से लागे पाप कितना से लागे ?—

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय, अन्तराय ए च्यार कर्म तो एकान्त पाप छे।

वेदनी, नाम, गोत्र, आयु ए च्यार कर्म पुन्य पाप दोनूँ ही छे।

मोहनीय कर्म से तो पाप लागे अने नाम कर्म से पुन्य लागे बाकी छव कर्म से पुन्य पाप दोनूँ नहीं लागे।

२१ इकवीसमें बोले आस्रव ना बीस भेद तथा संवर ना बीस भेद किसे किसे गुणठाणें कितना कितना पावे ?

आस्रव के २० बीस भेदों की विगत।

पहिले तथा तीजे गुणठाणें तो बीस पावे, दूजे चौथे पांचमें गुणठाणे १९ उगणीस पावे

मिथ्यात टल्यो। छठे गुणठाणें १८ अठारे पावै, मिथ्यात्व तथा अव्रत आस्रव टल्यो। सातमा से दशमा गुणठाणां तांई ५ पांच आस्रव पावै, कषाय, जोग, मन, बचन, काया ए पांच जाणवा। इग्यारमें बारमें तेरमें च्यार पावे कषाय टली। चौदमें आस्रव पावे नहीं। हिवे संवर के बीस बोलां को बिगत—पहिला से चौथा गुणठाणां तांई तो संवर पावे नहीं, पांचमें गुणठाणें एक समकिते संवर पावे सम्पूर्ण व्रत ते संवर पावै नहीं।

देश व्रत पावें ते लेखव्यो नहीं।

छट्ठे गुणठाणें २ (दोय) पावे समकिते, व्रत ते सातमा सें दशमा गुणठाणां तांई १५ (पंद्रह) संवर पावें। अकषाय, अजोग, मन, बचन, काया, ए पांच टल्या।

चौदमें गुणठाणें २० बीसूं ही संवर पावें।

२२ बाईसमें बोले चौदा गुणठाणां किसो भाव किसी आत्मा ?

पहिलो दूजो तीजो गुणठाणों तो भाव दोय—क्षयोपशम, परिणामिक, आत्मादर्शन। चौथो

गुणठाणों भाव च्यार—उदय वरजीने, आत्मा दर्शन।

पांचमूं गुणठाणों भाव दोय—क्षयोपशम, परिणामिक, आत्मा देश चारित्र।

छट्ठा सै दशमा गुणठाणां तांई भाव दोय—क्षयोपशम परिणामिक, आत्मा चारित्र। इग्यारमूं गुणठाणों भाव दोय—उपशम परिणामिक, आत्मा उपशम चारित्र।

बारमूं गुणठाणों भाव दोय—क्षायक परिणामिक, आत्मा क्षायक चारित्र।

तेरमूं गुणठाणों भाव दोय—क्षायक परिणामिक, आत्मा उपयोग।

चउदमों गुणठाणों भाव परिणामिक, आत्मा अनेरी।

२३ तेवीसमें बोले धर्म अधर्म किस्यो भाव किसी आत्मा?

धर्म भाव ४ (च्यार) उदय टाली, आत्मा तीन दर्शन, चारित्र, जोग। अधर्म भाव दोय उदय परिणामिक, आत्मा ३ तीन, कषाय, जोग, दर्शन।

२४ चोवीसमें बोले दया हिन्सा किस्यो भाव किसी आत्मा।

दया भाव ४ (च्यार) उदय बरजीने आत्मा २ (दोय) चारित्र, जोग।

हिन्सा भाव २ (दोय) उदय परिणामी आत्मा जोग, छवमें नवमें का बोल कहना।

२५ पच्चीसमें बोले शुभ जोग अशुभ जोग किस्यो भाव किसो आत्मा?

शुभ जोग तो भाव च्यार—उपशम, बरजीने, आत्मा जोग।

अशुभ जोग भाव दोय—उदय परिणामी, आत्मा जोग। छवमें नवमें का बोल कहणा।

२६ छवबीसमें बोले व्रत अव्रत किस्यो भाव किसो आत्मा?

व्रत भाव ४ (च्यार) उदय बरजीने, आत्मा, चारित्र। अव्रत भाव २ (दोय) उदय परिणामि आत्मा अनेरी।

२७ सत्ताबीसमें बोले पंच महाव्रत पंच सुमति तीन गुप्त किसो भाव किसो आत्मा?

पञ्च महाव्रत तीन गुप्त तो भाव ४ (च्यार) उदय बरजी, आत्मा चारित्र।

पांच सुमति भाव तीन—चायक, चयोपशम् परिणामिक आत्मा, जोग।

२८ अठावीसमें बोले १२ (बारे) वृत किसो भाव किसी आत्मा ?

भाव क्षयोपशम परिणामी आत्मा देसचारित्र।

२९ उणतीसमें बोले समकित मिथ्यात्व किसो भाव आत्मा ?

समकित भाव च्यार—उदय; बरजीने; आत्मा दर्शन। मिथ्यात्व भाव उदय परिणामी; आत्मा दर्शन।

३० तीसमें बोले ज्ञान अज्ञान किसो भाव किसी आत्मा—

ज्ञान भाव ३ (तीन) क्षायक क्षयोपशम परिणामी आत्मा, उपयोग; ज्ञान। अज्ञान भाव २ (दोय) क्षयोपशम परिणामिक आत्मा उपयोग।

३१ इकत्तीसमें बोले द्रव्यजीव भावजीव किसि भाव किसी आत्मा।

द्रव्य जीव भाव एक परिणामिक; आत्मा द्रव्य। भाव जीव भाव पांचों ही, आत्मा द्रव्य बरजीने सात। छव में नव में का बोल कहणा।

३२ बत्तीसमें बोले अठारे पाप ठाणां रो उदय उपशम क्षायक क्षयोपशम छव में कोण नव में कोण ?

छव में पुद्गल; नव में तीन अजीव; पाप बंध।

३३ तेतीसमें बोले अठारे पाप ठाणा रो उदय उप-
शम क्षायक क्षयोपशम निष्पन्न छव में कोण नव में कोण।

उदय निष्पन्न छव में जीव नव में जीव आस्रव।

उपशम निष्पन्न छव में जीव नव में जीव संबर। सतरे (१७) को तो क्षायक निष्पन्न छव में जीव नव में जीव संबर; एक मिथ्या दर्शन सल्य को छव में जीव नव में जीव संबर निर्जरा क्षयोपशम निष्पन्न छव में जीव नव में जीव संबर निर्जरा।

३४ चौतीसमें बोले बारह वृत को द्रव्य खेत्र काल
भाव राखे तेहनो विगत।

पहिला वृत से आठमां वृत तांई तो द्रव्य थकी आधार राखे ते द्रव्य उपरान्त त्याग, खेत्रथी सर्व खेत्रमें, काल थको जाव जीव, भावथको राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुणथको संबर निर्जरा। नव में वृत द्रव्य खेत्र उपर परिमाणे कालथको एक महुरत भाव थो राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुणथको संबर निर्जरा। दशमूं वृत द्रव्य खेत्र भाव गुण तो ऊपर परिमाणे काल-

थकी राखे जितनी काल। इग्यारमों व्रत की द्रव्य खेत्र भाव गुणता ऊपर परिमाणे कालथकी अहो रात्रि परिमाण।

बारमूं व्रत की द्रव्य थकी साधूजी ने कल्पै ते चौदह प्रकार नो द्रव्य खेत्र थकी कल्पै ते खेत्र में कालथकी कल्पे ते कालमें भावथकी राग द्वेष रहित गुणथकी संवर निर्जरा।

३५ पैंतीसमें बोले नव पदार्थ में निज गुण कितना परगुण कितना ?

निज गुण तो पांच। जीव, आस्रव, संवर निर्जरा मोक्ष।

परगुण ४ च्यार। अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध।

३६ छत्तीसमें बोले दर्शन मोहनीय कर्म की उदय उपशम क्षायक क्षयोपशम कितना गुणठाणां पावे।

दर्शन मोहनीय की उदय निष्पन्न पहिला गुण ठाणां से सातमा तांई चारित्र मोहनीय की उदय निष्पन्न पहिला से दशमां तांई।

चारित्र मोहनीय की उपशम निष्पन्न एक इग्यारमें हो गुणठाणे।

दर्शन मोहनीय की उपशम निष्पन्न चौथा से इग्यारमें गुणठाणां तांई।

दर्शन मोहनीय को चायक निष्पन्न चौथा से चौदमें गुणठाणें तथा सिद्धां में।

चारित्र मोहनीय को चायक निष्पन्न बारमें तेरमें चौदमें गुणठाणें।

दर्शन मोहनीय को चयोपशम निष्पन्न पहिला से सातमां गुणठाणां तांई।

चारित्र मोहनीय को चयोपशम निष्पन्न पहिला से दशमां गुणठाणें तांई।

३७ सैंतीसमें बोले आठ आतमां में मूल गुण कितनी उत्तर गुण कितनी ?

मूल गुण एक चारित्र आत्मा, उत्तर गुण एक जोग आत्मा। बाकी दोनूं नहीं।

३८ अड़तीसमें बोले आठ आत्मा किसे भाव किसी आत्मा ?

आत्मा तो आप आपरी द्रव्य आत्मा तो भाव एक परिणामी, कषाय आत्मा भाव दोय उदय परिणामी, जोग आत्मा भाव च्यार उपशम बरजी ने उपयोग ज्ञान वीर्य ए तीन आत्मा भाव तीन चायक चयोपशम परिणामिक दर्शन आत्मा भाव पांचों ही।

चारित्र आतमां भाव च्यार उदय बरजी।

३९ गुणचालीसमें बोले आठ आत्मा छव में कोण नव में कोण ?

द्रव्य आत्मा छव में जीव नव में जीव, कषाय आत्मा छव में जीव नव में जीव आस्रव। जोग आत्मा छव में जीव नव में जीव आस्रव निर्जरा। उपयोग, ज्ञान, वीर्य ये तीन आत्मा छव में जीव नव में जीव निर्जरा।

दर्शन आत्मा छव में जीव नव में जीव आस्रव संवर निर्जरा।

चारित्र, आत्मा, छवमें जीव नवमें जीव संवर।

४० चालीसमें बोले आस्रव का (वीस) २० बोल किसो भाव किसी आत्मा ?

भाव तो उदय परिणामिक बीसूं ही बोल। मिथ्याती दर्शन आत्मा, अव्रत प्रमाद अनेरी आत्मा। कषाय कषाय आत्मा बाकी सोले आस्रव जोग आत्मा।

४१ एकचालीसमें बोले संवर ना २० (वीस) बोल किसो भाव किसी आत्मा।

अकषाय संवर भाव तीन उपशम क्षायक परिणामिक, आत्मा अनेरी।

अजोग मन वचन काया ए च्यार संवर भाव

एक परिणामिक आत्मा अनेरी। सम्यक तै संवर भाव ४ (च्यार) उदय वरजी ने, आत्मा दर्शन। अप्रमाद संवर भाव च्यार उदय-वरजी आत्मा अनेरी। बाकी १३ (तेरा) संवर का बोल भाव ४ (च्यार) उदय वरजी ने आत्मा चारित्र।

४२ बयालीसमें बोले पन्द्रह जोग किसो भाव किसी आत्मा, जीव, अजीव तथा रूपी अरूपी की विगत।

भाव की विगत।

सत्यमन जोग सत्य भाषा व्यवहार मन व्यव-हार भाषा, औदारिक ए पांच जोग भाव च्यार उपशम वरजी ने।

औदारिक को मिश्र, कार्मण ए दोय जोग भाव तीन उदय क्षायक परिणामिक।

असत्य मन जोग, मिश्र मन जोग, असत्य भाषा, मिश्र भाषा वैक्रिय नो मिश्र आहारिक नूं मिश्र ए छव जोग भाव दोय उदय परिणामिक, आहारिक वैक्रै ए दोय जोग भाव ३ उदय क्षयोपशम परि-णामिक।

सावद्य निर्वद्य कितना ।

असत्य मन जोग असत्य भाषा मिश्र मन जोग मिश्र भाषा, आहारिक नूं मिश्र, वैक्रिय नूं मिश्र ए छव जोग तो सावद्य छै बाकी नव जोग सावद्य निर्वद्य दोनूं छै।

पन्द्रह जोग जीव के अजीव द्रव्य अजीव भावे जीव।

पन्द्रह जोग रूपी के अरूपी द्रव्य रूपी भावे अरूपी।

४३ तयांलीसमें बोले पांच इन्द्रियां की पूछा पांच इन्द्री जीव के अजीव? द्रव्ये अजीव भावे जीव। पांच इन्द्री रूपी के अरूपी? द्रव्ये रूपी भावे अरूपी। पांच इन्द्रियां में कामी कितनी भोगी कितनी? कामी तो दोय श्रुत इन्द्री, चक्षु इन्द्री, अने भोगी बाकी तीन इन्द्रियां। पांच इन्द्रियां में जेती कितनी अजेती कितनी? एक स्पर्श इन्द्री तो जेती बाकी च्यार इन्द्रियां अजेती।

द्रव्यथकी इन्द्री कितनी भावथी कितनी? द्रव्यथी तो आठ ते कहे छे दोय कान, दोय आंख,

नांक, जीह्वा, स्पर्श। भावथी पांच श्रुत चक्षु घ्राण रस स्पर्श एवं छव में कोण नव में कोण ? भाव इन्द्री छव में जीव नव में जीव निर्जरा ते किण-न्याय दर्शनावरणी कर्म क्षय उपशम थयां थी जीव इन्द्रीय पर्यो पाम्यो इण न्याय।

४४ चमालीसमें बोले जीव परिणामीरा १० बोल किसो भाव किसी आत्मा ?

गतिपरिणामी भाव दोय, उदय परिणामी, आत्मा अनेरी। कषाय परिणामी भाव उदय परिणामिक आत्मा कषाय बेद परिणामी भावं उदय परिणामी आत्मा काषाय तथा अनेरी। जोग परिणामी लेशपरणामी भाव च्यार उपशम बरजी ने आत्मा योग। इन्द्रिय परिणामिक भाव दोय, क्षयोपशम परिणामी, आत्मा उपयोग। ज्ञान परि-णामिक उपयोग परिणामिक भाव तीन क्षायक क्षयोपशम परिणामी आत्मा आप आपरी दर्शन परिणामी भाव पांचो ही, आत्मा दर्शन। चारित्र परिणामी भाव च्यार उदय बरजी ने आत्मा, चारित्र।

४५ पैंतालीसमें बोले जीव परिणामीरा १० (दश) बोल छव में कोण नव में कोण।

गति परिणामी छवमें जीव नवमें जीव जाणवो वेद परिणामी कषाय परिणामी छव में जीव नव में जीव आस्रव। योग लेश परिणामी छव में जीव नव में जीव आस्रव निर्जरा। दर्शन परिणामी छव में जीव नव में जीव आस्रव संवर निर्जरा। इन्द्रिय उपयोग ज्ञान परिणामी छव में जीव नव में जीव निर्जरा। चारित्र परिणामी छव में जीव नव में जीव संवर।

४६ छयालीसमें बोले चौदह गुणठाणां वाला में शरीर कितना पावे।

पहिला से पांच गुणठाणां तांई तो शरीर ४ च्यार पावे आहारिक टल्यो, छठे गुणठाणे शरीर पावे पांचों ही, सातमां गुणठाणां से चौदमा गुणठाणां तांई शरीर पावे ३ (तीन) औदारिक तेजस कार्मण। पांच शरीर चौ स्पर्शी के आठ स्पर्शी ? च्यार शरीर तो आठ स्पर्शी छे कार्मण चौ स्पर्शी छे।

पांच शरीर जीव के अजीव ? अजीव छे।

४७ सातचालीसमें बोले २४ (चौवीस) दण्डक में लेश्या कितनी पावे।

सात नारकी १ तेउ २ वायु ३ वेइन्द्री ४

तेइन्द्री ५ चौइन्द्री ६ असन्नी मनुष्य ७ असन्नी तिर्यंच ८ यांमें तो ३ माठी लेश्या पावे।

पृथ्वीकाय १ अप्पकाय १ वनस्पतिकाय १ भवनपतिका १० वानव्यन्तर १ यां चौदह दण्डकां में लेश्या पावे ४ पद्म शुक्ल वरजी ने। जोतषी अने पहिला दूजा देवलोक का देवता में लेश्या पावे १ तेजू। तीजा से पांचवां तांई पद्म। छट्ठा देवलोक से सरवार्थ सिद्ध तांई पावे १ शुक्ल सन्नी मनुष्य सन्नी तिर्यञ्च में लेश्या पावे छव। सर्व युगलियां में ४ (च्यार) पद्म शुक्ल टली।

४८ अड़चालीसमें बोले अजीव नां चौदह भेद ऊंचा नीचा तिरछा लोक में कितना ?

ऊंचो लोक अने अढ़ाई द्वीप बारे १० पावे। धर्मास्ति अधर्मास्ति आकाशास्ति को खंध अने काल ए च्यार टल्या।

नीचो लोक अढ़ाई द्वीप में ११ (इग्यारे) पावे. काल और बध्यो। ऊंची दिशि में ११ (इग्यारे) पावे नीची दिशि में १० पावे।

४९ अगुणचासमें बोले (च्यार) गति ४ (पांच) जाति ६, काय १५ चौदह भेद जीव का २९,

चौबीस दण्डक एवं ५३ सूक्ष्म ५४ बादर ५५ त्रस ५६ स्थावर ५७ पर्याप्तो ५८ अपर्याप्तो ५९ ए गुणसठ बोल किसो भाव किसो आत्मा ?

भाव उदय परिणामी, आत्मा अनेरी, छव में कोण नव में कोण ? छव में जीव नव में जीव। तथा सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं।

५० पचासमें बोले २२ (बाईस) परीषह किसे किसे कर्म के उदय तथा छव में कोण नव में कोण ?

११ इग्यारे परीषह तो वेदनी कर्म ना उदय से।

२ दोय ज्ञानावरणी कर्म ना उदय से।

८ आठ मोहनीय कर्म ना उदय से।

१ अन्तराय कर्म का उदय से।

छव में जीव नव में जीव निर्जरा।

५१ इक्यावनमें बोले तेवीस पदवी किसो भाव किसो आत्मा ?

१९ उगणीस पदवी तो भाव २ (दोय) उदय परिणामिक आत्मा अनेरी।

१ केवली महाराज की पदवी भाव दोय क्षायक परिणामिक आत्मा उपयोग।

१ साधुजी महाराज की पदवी भाव ४ (च्यार) उदय वरजी आत्मा चारित्र।

१ श्रावक की पदवी भाव २ (दोय) क्षयोपशम परिणामिक आत्मा देश चारित्र।

१ समदृष्टि की पदवी भाव ४ (च्यार) उदय बरजी आत्मा दर्शन।

उगणीस पदवी तो छव में जीव नव में जीव समदृष्टि की अने केवली की पदवी छव में जीव नव में जीव निर्जरा। साधु श्रावक की पदवी छव में जीव नव में जीव संवर।

५२ बावनमें बोलि नव तत्व का ११५ (एकसह पन्द्रह) बोल की।

जीव कितना—जीव तो ७० सत्तर तेहनी विगत जीव का १४, आस्रव का २०, संवर का २०, निर्जरा का १२, मोक्ष का ४, एवं ७०।

अजीव ४५ तेहमें अजीव का १४, पुन्य का ९; (नव) पाप का १८ (अठार) बंध का ४ (च्यार) एवं ४५।

सावद्य कितना निर्वद्य कितना?

निर्वद्य तो ३६, तिण में निर्जरा का १२ संवर का २०, मोक्ष का ४, ए छवतीस।

सावद्य १६ तिणमें आस्रव का १६ (मन:वचन काया योग:ए च्यार टल्या)।

श्री जयाचार्य कृत—

भ्रम विध्वंसन की हुण्डी।

मिथ्यात्वि क्रियाऽधिकारः।

१ बाल तपस्वी ने सुपात्र दान, दया, शीलादि करी मोक्षमार्ग नों देश थकी आराधक कह्यो।

(साख सूत्र भगवती श० ८ उ० १०)

२ प्रथम गुणठाणा नो धणी सुमुख नामे गाथापति, सुदत्त नामा अणगार ने सुपात्र दान देई परित संसार करी मनुष्य नो आउखो बांध्यो।

(साख सूत्र सुखविपाक अ० १)

३ मेघकुमार को जीव मिथ्याती थको हाथी के भव में सुसला री दया पाली परित संसार कीधो।

(साख सूत्र ज्ञाता अ० १)

४ गोशाला नो श्रावक सकडालपुत्र, भगवान ने तिण प्रदक्षिणा देई वंदना कीधी।

(उपाशक दशांग अ० ७)

५ मिथ्याती ने भली करणी लेखे सुव्रती कह्यो छै।

(साख सूत्र उत्तराध्ययन अ० ७ गा० २०)

६ क्रियावादी सम्यग्दृष्टि (मनुष्य तिर्यंच) एक वैमानिक टाल और आऊषो न बांधे ।

(साख सूत्र भगवती ३० उ० १)

७ मिथ्याती मास २ खमण तप करै तथा सुई नी अग्र पै आवै तेतलाज अन्न नो पारणो करै, पिण सम्यग्दृष्टि ना चारित्र धर्म नी सोलमी कला पिण नावै तेहनो न्याय ।

(उत्तराध्ययन अ० ६ गा० ४४)

८ मिथ्याती मास २ खमण तप करै, पिण माया थी अनन्त संसार रुलै ।

(सूयगडांग श्रुतस्कन्ध १ अ० २ उ० १ गा० ६)

६ जीव अजीव जाणे नहीं तेहना पच्चखाण दुपच्चखाण कह्या तेहनो न्याय ।

(भगवती श० ७ उ० २)

१० भगवंत दीक्षा लियां पहली, २ वर्ष झाझा (अधिका) घर में विरक्त पणे रह्या तथा काचो पाणी न भोगव्यो ।

(प्रथम आचाराङ्ग अ० ६ उ० १ गा० ११)

११ जे तत्त्व ना अजाण मिथ्याती, त्यांरो अशुद्ध प्राक्रम छै ते संसार नो कारण छै । पिण निर्जरा नो कारण नथी (पिण शुद्ध प्राक्रम तो निर्जरा

नोहिज कारण छै, संसार नो कारण नथी।

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० ८ गा० २३)

(क) सम्यग्दृष्टि नो शुद्ध प्राक्रम छै, ते सर्व निर्जरा नो कारण पिण संसार नो कारण नथी (पिण अशुद्ध प्राक्रम तो संसार नोहिज कारण, निर्जरा नो कारण नथी।

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० ८ गा० २४)

१२ भगवत दीख्या लेतां इम कह्यो—आज थी सर्वथा प्रकारे मोने (मुझ ने) पाप करवो कल्पै नहीं। इम कही सामायक चारित्र आदर्यो।

(अचाराङ्ग श्रु० २ अ० १५)

१३ एक वेला रा कर्म बाकी रह्यां अनुतर विमाण में जाई उपजे।

(भगवती श० १४ उ० ७)

१४ प्रथम गुणस्थान नी शुद्ध करणी छै, ते आज्ञा मांय छै। तेहनो न्याय।

१५ प्रथम गुणस्थान ने निर्वद्य कर्म नो क्षयोपशम कह्यो।

(समवायांग समवाय १४)

१६ अप्रमादी साधु ने अणारम्भी कह्या।

(भगवती श० १ उ० १)

१७ असोच्चाकेवली अधिकारे इम कह्यो—तपस्यादिक थी समदृष्ट पामै ।

(भगवती श० ६.उ०.३१)

१८ सूरियाभ ना अभियोगिया देवता भगवान ने वांद्यां तिवारे भगवान कह्यो—ए वन्दना रूप तुम्हारो पुराणो आचार छै १ ए तुम्हारो जीत आचार छै २ ए तुम्हारो कार्य छै ३ ए वंदना करवा योग्य छै ४ ए तुम्हारो आचरण छै ५ ए वंदना नी म्हारी आज्ञा छै ६ ।

(रायप्रसेणी देवताधिकार)

१९ खन्धक सन्यासी, गोतम ने पूछ्यो, हे गोतम ! तुम्हारा धर्माचार्य महावीर ने वांदां यावत् सेवा करां। तिवारे गोतम कह्यो, हे देवानुप्रिय ! जिम सुख होवे तिम करो पिण विलम्ब मत करो ।

(भगवती श० २ उ० १)

(क) दीक्षा नी आज्ञा पर भगवत पार्श्वनाथ 'अहं सुहं' पाठ कह्यो ।

(पुप्फ चूलिया)

२० भगवत श्री महावीर, खन्धक ने पड़िमा बहवानी आज्ञा दीधी ।

(भगवती श० २ उ० १)

२१ तामली तापसनी अनित्य चिन्तवना ।

(भगवती श० ३ उ० १)

२२ सोमल ऋषिनी शुद्ध चिन्तवना ।

(पुष्फयोपांग अ० ३)

२३ छद्मस्थ भगवान श्रीमहावीर नी अनित्य चिन्तवना ।

(भगवती श० १५)

२४ अनित्य चिन्तवना ने धर्म ध्यान को भेद कह्यो ।

(उववाई)

२५ च्यार प्रकारे देवायु बांधै—सराग संजम पाली १ श्रावक पणो पाली २ बाल तप करी ३ अकाम निर्जरा करी ४ तथा च्यार प्रकारे मनुष्यायु बांधे—प्रकृति भद्रिक १ प्रकृति विनीत २ दया परिणाम ३ अमत्सर भाव ।

(भगवती श० ८ उ० ६)

२६ गोशाले के शिष्यां के च्यार प्रकार नो तप कह्यो—उग्र तप १ घोर तप २ रस परित्याग ३ जीभ्या इन्द्री वश कीधी ।

(ठाणांगठाणे ४ उ० २)

२७ अन्यदर्शणी पिण सत्य वचन ने आदर्यो ।

(प्रश्न व्याकरण संवरद्धार २)

२८ वाण व्यन्तर ना देवता देवी वनखण्ड ने विषे बैसे, सूवे जाव क्रीड़ा करे। पूर्व भवे भला प्राक्रम

फोडव्या तेहना फल भोगवै ।

(जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति)

२९ मिथ्याती प्रकृति भद्रादि गुण थी वाणव्यन्तर देवता थाय ।

(उववाई प्रश्न ७)

दानाऽधिकारः ।

१ असंयती ने दीधां पुन्य पाप को न्याय ।

२ आणन्द श्रावक इह विधि अभिग्रह लीधो—जे हूं आज थकी अन्य तीर्थी ने अन्य तीर्थी ना देव ने तथा अन्य तीर्थी ना ग्रह्या अरिहन्त ना चैत्य साधु भ्रष्ट थया । ए तीना प्रति वांदूं नहीं, नमस्कार करूं नहीं, अशनादिक देऊं नहीं, देवाऊं नहीं, बिना बतलायां एक बार तथा घणी वार बोलाऊं नहीं, तथा अशनादिक च्यार आहार देऊं नहीं । अनेरा पास थी दिराऊं नहीं । पिण एतलो आगार—राजा ने आदेशे आगार १ घणा कुटुम्ब ने समुदाय ना आदेशे आगार २ कोई एक बलवन्त ने परवश पणे आगार ३ देवता ने परवश पणे आगार ४ कुटुम्ब में बड़ेरो ते गुरु कहिये

तेहने आदेशे आगार ५ अटवी कान्तार ने विषे आगार ६ ए छव छण्डी आगार राख्या तो पोता री कचाई जाणी ने राख्या।

(उपाशक दशांग अ० १)

३ तथा रूप जे असंयती ने फासू अफासू सूझतो असूझतो अशनादिक दीधां एकान्त पाप निर्जरा, नथी।

(भगवती श० ८ उ० ६)

४ जे साधु कष्ट उपना एम विचारे। जे अरिहन्त भगवन्त निरोगी काया ना धणी, पोता ना कर्म खपावा ने उदेरी ने तप करे। तो हूं लोच ब्रह्मचर्यादिक अनेक रोगादिक नी वेदना, किम न सहूं। एतले मुझ ने वेदना सम भावे न सहतां, एकान्त पाप कर्म हुवे तो वेदना समभावे सहतां, एकान्त निर्जरा हुवे।

(ठाणांगठाणे ४ उ० ३)

५ साधु नी हेला निन्दा करतो अशनादि देवे तिहां "पड़िलाभित्ता" पाठ कह्यो।

(भगवती श० ५ उ० ६)

(क) तथा साधु ने वंदना नमस्कार करतो थको

अशनादिक देवे तिहां पिण 'पड़िलाभित्ता"
पाठ कह्यो ।

(भगवती श० ५ उ० ६)

६ पोट्टिला आर्या महासती ने अशनादिक दीधा तिहां "पडिलाभे" पाठ कह्यो । ते माटे "पडिलाभेइ" नाम देवा नों छै पिण साधु असाधु जाणवा रो नहीं ।

(ज्ञाता अध्ययन १४)

७ साधु ने अशनादिक बहिरावे तिहां "दलएज्जा" पाठ कह्यों छै । ते माटे "दलएज्जा" कहो भावे "पडिलाभेज्जा" कहो दोनों एक अर्थ छै ।

(आचारांग श्रु० २ अ० १ उ० ७)

८ सुदर्शन सेठ शुकदेव सन्यासी ने अशनादिक आप्यो तिहां "पडिलाभमाणे" पाठ कह्यो ।

(ज्ञाता अ० ५)

९ 'पडिलाभ' नाम देवा नोहिज छै ।

(सूयगडांग श्रु० २ अ० ५ गा० ३३)

१० आर्द्र मुनि ने विप्रां कह्यो—जो बे हजार कहतां दो हजार ब्राह्मण जिमावे ते महा पुन्य स्कन्ध उपार्जी देवता हुइ । एहवो हमारे वेद में कह्यो छै । तिवारे आर्द्र मुनि बोल्या, हे विप्रों ! जे

मांस ना गृद्धी घर २ने विषे मार्जार नी परै भ्रमण करणहार एहवा वे हजार कुपात्र ब्राह्मणां ने नित्य जिमाड़े ते जिमाड़नहार पुरुष ते ब्राह्मणां सहित बहु वेदना छै जेहने विषे एहवी महा असह्य वेदना युक्त नरक ने विषे जाइं। अने दया रूप प्रधान धर्म नी निन्दाना करणहार हिंसादिक पञ्च आस्रव नी प्रशंसाना करणहार एहवो जो एक पिण दुःशील-वन्त निर्व्रती ब्राह्मण जिमाड़े ते महा अन्धकारयुक्त नरक में जाइं। तो जे एहवा घणा कुपात्र ब्राह्मणा ने जिमाड़े तेहनो स्यूं कहिवो। अने तमें कहो छो जे जिमाड़णहार देवता हुइं तो हमें कहां छां जे एहवा दातार ने असुरादिक अधम देवता नी पिण प्राप्ति नहीं, तो जे उत्तम वैमाणिक देवता नी गति नी आशा एकान्त निराशा छै।

(सूयगडांग श्रु० २ अ० ६ गा० ४३, ४४, ४५)

११ भृगु ने पुत्रां कह्यो, वेद भण्यां त्राण शरण न हुवै तथा ब्राह्मण जिमायां तमतमा जाय। (तमतमा ते अंधारा में अंधारो) एहवी नर्क।

(उत्तराध्ययन अ० १४ गा० १२)

१२ श्रावक पिण विप्र जिमाड़े तेहनो न्याय च्यार प्रकारे नर्कायु वांधे तिणेकरी ओलखायो।

(भगवती शतक ८ उ० ६)

(क) बलि श्रावक पिण विप्र जिमाड़े तिण ऊपर बालमर्ण थी अनंता नर्क ना भाव । तेहनो न्याय ।

(भगवती श० २ उ० १)

१३ जे सावद्य दान प्रशंसे तेहने छःकाय नो वध नो बंछणहार कह्यो । अने वर्त्तमान काले निषेधे त्यांने अन्तराय नो पाड़णहार कह्यो । ते माटे साधु ने वर्त्तमान में मौन राखिवे कही ।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० ११ गा० २०, २१)

१४ दान देवै लेवै, इसो वर्त्तमान देखी गुण दूषण कहणो नहीं ।

(सूयगडांग श्रु० २ अ० ५ गा० ३३)

१५ नन्दण मणिहारो दानशालादिक नो घणो आरम्भ करी मरीने पोतारी बावड़ी मेंज डेडको थयो ।

(ज्ञाता अ० १३)

१६ भगवान दश प्रकार ना दान प्ररूप्या । (सावद्य निर्वद्य ओलखणा)

(ठाणाङ्ग ठाणे १०)

१७ दश प्रकार नो धर्म कह्यो (सावद्य निर्वद्य ओलखणा) अने दश प्रकार ना स्थविर कह्या लौकिक लोकोत्तर विहुं जाणवा ।

(ठाणाङ्ग ठाणे १०)

१८ नव विधि पुण्य कह्यो (सावद्य निर्वद्य ओलखणा)

(ठाणाङ्ग ठाणे ६)

१९ च्यार प्रकार ना मेह तिमहिज च्यार प्रकार ना पुरुष, कुपात्र ने कुक्षेत्र जिसा कह्या।

(ठाणाङ्ग ठाणे ४ उ० ४)

२० शकडालपुत्र गोशाला प्रते कह्यो—हे गोशाला! तूं मांहरा धर्माचार्य श्री महावीर ना गुणकीर्तन कस्या। ते माटे देऊं छूं तुमने पीढ, फलग, सिज्यादि। पिण धर्म तप ने अर्थे नहीं।

(उपाशकदशा अ० ७)

२१ मृगालोढा प्रति देखने गौतम, भगवान ने पूछ्यो—हे भगवन्त! इण पूर्व भवे कांई कुपात्र दान दीधा? कांई कुशीलादि सेव्या? अने कांई मांसादि भोगव्या? तेहना फल ए नर्क समान दुःख भोगवे छै। तो जोवोनी कुपात्र दान ने चोड़े भारी कुकर्म कह्यो।

(दुःखविपाक अ० १)

२२ ब्राह्मणां ने पापकारी क्षेत्र कह्या।

(उत्तराध्ययन अ० १२ गा० १४)

२३ पन्द्रह कर्मादान ने व्यापार कह्या।

(उपाशकदशा अ० १)

२४ भात पाणी थी पोष्यां धर्माधर्म नो न्याय।

(उपाशकदशा अ० १)

२५ तुंगिया नगरी ना श्रावकां नो उघाड़ा बारणा रो न्याय।

(भगवती श० २ उ० ५ टीका में)

२६ श्रावक ना त्याग ते व्रत अने आगार ते अव्रत।

(उववाई प्रश्न २० तथा सूयगडाँग श्रु० २ अ० २)

२७ दश प्रकार ना शस्त्र कह्या तिणमें अव्रतने भाव शस्त्र कह्यो।

(ठाणाङ्ग ठाणे १०)

२८ जे श्रावक देशथकी निवर्त्यौ अने देशथकी पच्चखाण कीधा तिणे करी देवता थाय। पिण अव्रत थी देवता न हुवे।

(भगवती श० १ उ० ८)

२९ साधु ने सामायक में वहिरायां सामायक न भांगी तेहनो न्याय।

(भगवती श० ८ उ० ५)

३० श्रावक जिमावे तिण ऊपर महावीर पार्श्वनाथ ना साधु नो न्याय मिले नहीं।

(उत्तराध्ययन अ० २३ गा० १७)

३१ असोच्चा केवली, अन्यलिंगी थकां पोते तो दीख्या

न देवै। पिण अनेरा पासे दीख्या लेवा नो उपदेश करै।

(भगवती श० ६ उ० ३१)

३२ अभिग्रहधारी अने परिहार विशुद्ध चारितियो कारण पड्यां अनेरा साधु ने अशनादि देवै।

(बृहत्कल्प उ० ४ बोल २७)

३३ गृहस्थादिक ने देवो साधु संसार भ्रमण नो हेतु जाणी छोड्यो।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० ६ गा० २३)

३४ गृहस्थी ने दान दियां अने देतां ने अनुमोद्यां चौमासी प्रायश्चित कह्यो।

(निशीथ उ० १५ बोल ७४-७५)

३५ आणन्द ने संथारा में पिण गृहस्थ कह्यो।

(उपासकदशा अ० १)

३६ गृहस्थीनी व्यावच कियां, करायां, बलि अनुमोद्यां २८ मो अणाचार कह्यो।

(दशवैकालिक अ० ३ गा० ६)

३७ इग्यारमी पड़िमा में पिण प्रेम बंधण तूट्यो नथी।

(दशा श्रुतस्कन्ध अ० ६)

३८ पड़िमाधारी रे कल्प ऊपर अम्बड़ सन्यासी ना कल्प नो न्याय।

(उववाई प्रश्न १४)

३९ अनेरा सन्यासी नो कल्प ।

(उववाई प्रश्न १२)

४० वर्णं नाग नतुओ संग्राम में गयो तिहां एहवो अभिग्रह धार्यो—कल्पै मुझने जे पूर्वे हणै तेहने हणवो । जे न हणै तेहने न हणवो ।

(भगवती श० ७ उ० ६)

४१ जे एकेक अन्यतीर्थी थकी गृहस्थ श्रावक देश व्रते करी प्रधान अने सर्व श्रावक थकी साधु सर्व व्रते करी प्रधान ।

(उत्तराध्ययन अ० ५ गा० २०)

४२ श्रावक नी आत्मा अधिकरण कही छै। अधिकरण ते छवकाय नो शस्त्र जाणवो ।

(भगवती श० ७ उ० १)

(क) भरतजी के घोड़े ने ऋषि की उपमा दीधी। तिमहिज श्रावक ने 'समण भुया' कह्यो पिण ते देशथकी उपमा जाणवी ।

(जम्बू द्वीप प्रज्ञप्ति)

४३ च्यार व्यापार कह्या—मन, वचन, काया और उपकरण । ए च्यारू व्यापार सन्नी पंचेन्द्रियरे कह्या। ए च्यारूं भूंडा व्यापार पिण १६ दण्डक सन्नी पंचेन्द्रियरे कह्या । अने ए च्यारूं भला व्यापार तो संयती मनुष्यांरेइज कह्या ।

(ठाणाङ्ग ठाणे ४ उ० १)

अनुकम्पाऽधिकारः ।

१ असंयती जीवां रो जीवणो वांछणो घणे ठामे वर्ज्यो ते साख रूप बोल ।

२ पोताना कर्म खपावा तथा अनेरा (आर्य खेत्र ना मनुष्य) ने तारिवा निमित भगवान धर्म कहे । पिण असंयती जीवा ने बचावा अर्थे नहीं ।

(सूयगडांग श्रु० २ अ० ६ गा० १७-१८)

३ पोताना पाप टालवा भणी नेमनाथ भगवान पाछा फिरया ।

(उत्तराध्ययन अ० २२ गा० १८-१६)

४ मेघकुमार नो जीव हाथी ने भवे सुसलानी अनुकम्पा कीधी, सुसला ने प्राण नामे करी बोलायो ।

(ज्ञाता अ० १)

(क) तथा मढाई निग्रन्थ ने छः नामे करी बोलायो ।

(भगवती श० २ उ० १)

५ पड़िमाधारी नो कल्प 'वहाय गहाय' पाठ नो अर्थ ।

(दशाश्रुतस्कन्ध अ० ७)

६ रागद्वेष आणी 'मार तथा मत मार' इम कहिवो वर्ज्यो ।

(सूयगडांग श्रु० २ अ० ५ गा० ३०)

७ गृहस्थां ने मांहो मांही लड़ता देखी—एहने हण

तथा एहने मत हणा एहवो मन में पिण विचार न करै।

(आचारांग श्रु० २ अ० २ उ० १)

८ गृहस्थी ने, साधु 'अग्नि प्रज्वाल तथा बुझाव' इम न कहै।

(आचारांग श्रु० २ अ० २ उ० १)

९ दश प्रकार नी वांछा कही।

(ठाणांग ठाणे १०)

१० असंयम जीवितव्य बांछणो बर्ज्यौ।

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० १० गा० २४)

११ असंयम जीवणो मरणो बांछणो बर्ज्यौ।

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० १३ गा० २३)

१२ साधु असंयम जीवितव्य ने पूठ देई विचरै।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० १५ गा० १०)

१३ असंयम जीवणो बांछणो बर्ज्यौ।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० ३ उ० ४ गा० १५)

१४ असंयम जीवणो बांछे तिणने बाल अज्ञानी कह्यो।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० ५ उ० १ गा० ३)

१५ साधु आपणो आत्मा ने असंयम जीवितव्य को अर्थी न करै।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० १० गा० ३)

१६ असंयम जीवणो बांछणो वर्ज्यौ।

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० २ उ० २ गा० १६)

१७ संयम जीवितव्य बधारवो कह्यो ।

(उत्तराध्ययन अ० ४ उ० ७)

१८ संयम जीवितव्य दुर्लभ कह्यो ।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० २ उ० २ गा० १)

१६ मिथिला नगरी बलती देखी, नमीराजर्षि साहमो न जोयो। वलि कह्यो म्हारे राग द्वेष करवा माटे बाहलो दुबाहलो एक पिण नहीं । ए मिथिलापुरी बलतां थकां मांहरो किञ्चित मात्र पिण बले नथी। मैं तो (संयम में सुख से जीवूं अने सुख से वसूं छूं ।

(उत्तराध्ययन अ० ६ गा० १२-१३-१४-१५)

२० देवता, मनुष्य, तिर्यञ्च ए तीनां नूं माहीं मांही विग्रह देखी अमुक नी जय होवो अने अमुक नी अजय होवो एहवो वचन साधु ने बोलणो नहीं ।

(दशवैकालिक अ० ७ गा० ५०)

२१ वायरो, वर्षा, सीत. तावड़ो, राज विरोध रहित, सुभिक्ष पणो, उपद्रव रहित पणो, ए सात बोल हुवो इम साधु ने कहिवो नहीं ।

(दशवैकालिक अ० ७ गा० ५१)

२२ समुद्रपाली चोर ने मरतो देखी वैराग्य पामी चारित्र लीधो पिण चोरनो अनुकम्पा करि छोडायो नथी ।

(उत्तराध्ययन अ० २१ गा० ६)

२३ जे साधु पोतानी अनुकम्पा करै पिण अनेरा नी अनुकम्पा न करै ।

(ठाणांग ठाणे ४ उ० ४)

२४ अन्यतीर्थी तथा गृहस्थ मार्ग भूलाने साधु मार्ग बतावे तो चौमासी प्रायश्चित आवे ।

(निशीथ उ० १३ बोल २५)

२५ हिंसादिक अकार्य करता देखी, धर्मउपदेश देई समझावणो तथा अणबोल्यो रहे तथा उठी एकान्त जाणवो कह्यो ।

(ठाणांग ठा० ३ उ० ३)

२६ साधु अनेरा जीवां ने भय उपजावे, तो प्रायश्चित कह्यो ।

(निशीथ उ० ११ बोल ६४)

२७ गृहस्थ नी रक्षा निमित्त मन्त्रादिक कियां बलि-अनुमोद्यां चौमासी प्रायश्चित कह्यो ।

(निशीथ उ० १३ बोल १४)

२८ चुलणी पिया, पोषा में माता ने बचायिवा उठ्यो तो व्रत नियम भांग्या कह्या ।

(उपाशक दशा अ० ३)

२९ नावा में पाणी आवतो देखी साधु ने गृहस्थ प्रते बतावणो नहीं ।

(अचाराङ्ग श्रु० २ अ० ३ उ० १)

३० साधु अनुकम्पा आणी त्रस जीव ने बांधे बंधाव तथा बांधते प्रते भलो जाणै तथा बंधिया जीवां ने अनुकम्पा आणी छोड़ै, छुड़ावै छोड़ते ने भलो जाणै तो प्रायश्चित कह्यो।

(निशीथ उ० १२ वोल १-२)

३१ साधु कुतूहल निमित्त त्रस जीव ने बांधे बंधावे अने छोड़े छुड़ावे तो प्रायश्चित कह्यो।

(निशीथ उ० १७ वोल १-२)

३२ जे साधु पच्चखाण भांगे अने भांगता ने अनुमोदे तो दण्ड कह्यो।

(निशीथ उ० १२ वाल ३-४

३३ गृहस्थ साधु नी अनुकम्पा आणी तैलादि मर्दन करे तिहां 'कोलुण वडियाए' पाठ कह्यो।

(आचारांग श्रु० २ अ० २ उ० १)

३४ हरिणगवेषी सुलसां नी अनुकम्पा कीधी।

(अन्तगढ़ वर्ग ३ अ० ८)

३५ कृष्णजी डोकरानी अनुकम्पा करी ईंट उपाड़ी।

(अन्तगढ़ वर्ग ३ अ० ८)

३६ हरिकेशी नी अनुकम्पा आणी यक्ष विप्रां ने ऊंधा पाड़्या।

(उत्तराध्ययन अ० १२ गा० ८ से २५ तांई)

३७ धारणी राणी गर्भनी अनुकम्पा आणी मन गमता अशनादिक खाया ।

(ज्ञाता अ० १)

३८ अभयकुमार नीं अनुकम्पा आणी देवता मेह बरसायो ।

(ज्ञाता अ० १)

३९ जिन ऋषि करुणा आणी रयणा देवी रे साहमो जोयो ।

(ज्ञाता अ० ९)

४० प्रथम आस्रव द्वार ने करुणा रहित कह्यो ।

(प्रश्न व्याकरण अ० १)

४१ करुणा सहित जिन ऋषि ने रयणा देवी दया रहित परिणामे करि हण्यो ।

(ज्ञाता अ० ९)

४२ सूर्याभ देवतारो नाटक रूप भक्ति कही ।

(राय प्रसेणी)

४३ यक्षे छात्रां ने ऊंधा पाड्या ते हरिकेशीनो व्यावच कही ।

(उत्तराध्ययन अं० १२ गा० ३२)

४४ भगवान शीतल तेजू लब्धि करी गोशाले ने बचायो तिहां 'अणुकम्पणट्ठाए' पाठ कह्यो ।

(भगवती श० १५)

लब्धि अधिकारः ।

१ वैक्रिय तथा तेजस लब्धि फोड्यां जघन्य ३ उत्कृष्टी ५ क्रिया कही ।

(पन्नवणा पद ३६)

२ आहारिक लब्धि फोड्यां जघन्य ३ उत्कृष्टी ५ क्रिया कही ।

(पन्नवणा पद ३६)

३ आहारिक लब्धि फोड़े तिणने प्रमाद आश्री अधिकरण कह्यो ।

(भगवती श० १६ उ० १)

४ जंघाचारण अथवा विद्याचारण लब्धि फोड़ी बिना आलोयां मरे, तो विराधक कह्यो ।

(भगवती श० २० उ० ६)

५ वैक्रिय लब्धि फोड़े तिणने मायी कह्यो अने आलोयां विना मरे. तो विराधक कह्यो ।

(भगवती श० ३ उ० ४)

६ सात प्रकारे छद्मस्थ तथा सात प्रकारे केवली जाणीजे ।

(ठाणांग ठाणै ७)

७ अम्बड सन्यासी वैक्रिय लब्धि फोड़ी, सौ घरां

मारयो कीधो ते लोकां ने विस्मय उपजायवा भणी ।

(उववाई प्रश्न १४)

८ साधु अनेरा ने विस्मय उपजावे तो चौमासी प्रायश्चित कह्यो ।

(निशीथ उ० ११)

प्रायश्चिताऽधिकारः ।

१ सीहो अणगार मोटे २ शब्दे रोयो ।

(भगवती श० १५)

२ अइमुत्ते साधु पाणी में पाली तराई ।

(भगवती श० ५ उ० ४)

३ रहनेमी, राजमती ने विषय रूप वचन बोल्यो ।

(उत्तराध्ययन अ० २२ गा० ३८)

४ धर्मघोषना साधां नागश्री ब्राह्मणी ने बाजार में हेली निन्दी ।

(ज्ञाता अ० १६)

५ सेलक ऋषि ने उसन्नो पासत्थो कह्यो ।

(ज्ञाता अ० ५)

६ गोशाला नो जीव विमलवाहन राजा ने सुमंगल नामे अणगार, तेजू लब्धिइं करी हणस्ये।

(भगवती श० १५)

७ खंधक नामे अणगार संथारो कीधो तिहां 'आलो-इय पडिक्कन्ते' पाठ कह्यो।

(भगवती श० २ उ० १)

८ तिसक मुनिने छेहड़े तिहां 'आलोइय पडिक्कन्ते' पाठ कह्यो।

(भगवती श० ३ उ० १)

९ कार्तिक सेठने छेहड़े तिहां 'आलोइय पडिक्कन्ते' पाठ कह्यो।

(भगवती श० १८ उ० २)

१० कषाय कुशील नियण्ठा नो वर्णन।

(भगवती श० २५ उ० ६)

११ दृष्टिवाद नो धणी पिण वचन खलावे।

(दशवैकालिक अ० ८ गा० ५०)

१२ अनुत्तर विमाण ना देवता उदीर्ण मोह नथी, अने क्षीण मोह नथी, उपशांत मोह छे।

(भगवती श० ५ उ० ४)

१३ हाथी अने कुंथुआ के अपच्चखाण की क्रिया समान कही।

(भगवती श० ७ उ० ८)

१४ सर्व भवी जीव मोक्ष जास्ये ।

(भगवती श० १२ उ० २)

१५ पुद्गलास्तिकाय में ८ स्पर्श कह्या ।

(भगवती श० १२ उ० ५)

गोशालाऽधिकारः ।

१ भगवन्त गौतम ने कह्यो—हे गौतम ! गोशाले मोने कह्यो तुम्हें मांहरा धर्माचार्य अने हूं आपरो धर्मान्तेवासी शिष्य । तिवारे में अङ्गीकार कीधुं ।

(भगवती श० १५)

२ सर्वानुभूति, सुनक्षत्र मुनि गोशाला ने कह्यो—हे गोशाला ! तोने भगवान मूंड्यो । तोने भगवान् प्रवर्या दीधी । तोने शिष्य कियो । तोने सिखायो अने तोने बहुश्रुति कियो । तूं भगवान सूँ दूज मिथ्यात्व पडिवज्जे छै ?

(भगवती श० १५)

३ भगवान पिण कह्यो—हे गोशाला ! मैं तोनें प्रवर्या दीधी ।

(भगवती श० १५)

४ गोशाला ने कुशिष्य कह्यो ।

(भगवती श० १५)

गुणवर्णनाऽधिकारः ।

१ गणधरां भगवान ना गुण किया ।

(आचारांग श्रु० १ अ० ६ उ० ४ गाथा ८)

२ भगवान, साधा नां अनेक गुण किया ।

(उववाई प्रश्न २१)

३ कौणक ने माता पिता नो विनीत कह्यो ।

(उववाई)

४ श्रावकां ने धर्म ना करणहार कह्या ।

(उववाई प्रश्न २०)

५ गौतमा ना गुण कह्या ।

(भगवती श० १ उ० १)

लेश्याऽधिकारः ।

१ छद्मस्थ तीर्थङ्कर में कषाय कुशील नियण्ठो कह्यो ।

(भगवती श० २५ उ० ६

२ कषाय कुशील नियण्ठा में छः लेश्या कही ।

(भगवती श० २५ उ० ६)

३ सामायक चारित्र छेदोपस्थापनीय चारित्र में छः लेश्या पावे ।

(भगवती श० २५ उ० ७)

४ छः लेश्या ना लक्षण ।

(आवश्यक अ० ४)

५ च्यार ज्ञानवाला साधु में पिण कृष्ण लेश्या कही छै ।

(पन्नवणा पद १७ उ० ३)

६ कृष्ण, नील अने कापोत लेश्या में च्यार ज्ञान नी भजना कही ।

(भगवती श० ८ उ० २)

७ कृष्णादिक तीन लेश्या प्रमादी साधु में हुवै ।

(भगवती श० १ उ० १)

८ तेजू पद्म लेश्या सरागी में हुवै ।

(भगवती श० १ उ० २)

९ संयती में पिण कृष्ण लेश्या हुवै ।

(पन्नवणा पद १७ उ० १)

वैयावृत्ति अधिकारः ।

---

१ यक्षे छात्रां ने ऊंधा पाड्या ते हरकेशी नी व्यावच कही ।

(उत्तराध्ययन अ० १२ गा० ३२)

२ सूर्याभ देव नी नाटक रूप भक्ति कही ।

(राय प्रसेणी)

३ भगवान ना अङ्गोपाङ्ग ना हाड भक्तिइं करी देवता ग्रहण करे।

(जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति)

४ बीस बोल करी तीर्थङ्कर गोत्र बंधे।

(ज्ञाता अ० ८)

५ साता दियां साता हुवे इम कहे ते आर्य मार्ग थी अलगो। समाधि मार्ग थी न्यारो। जिन धर्म री हेलणा रो करणहार। अल्प सुखां रे अर्थे घणा सुखां रो हारणहार। ए असत्य पत्त अण छांडवे करी मोत्त नहीं। लोह वाणिया नी परे घणो भूरसी।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० ३ उ० ४ गा० ६-७)

६ पांच स्थानके करी श्रमण निग्रन्थ ने महा निर्जरा हुवे। तिहां कुल गण संघ साधर्मी साधु ने कह्या।

(ठाणांग ठाणे ५ उ० १)

७ दश प्रकार नी व्यावच साधुरेइज कही।

(ठाणांग ठाणे १०)

८ पुनः दश प्रकार नी व्यावच साधुरेइज कही।

(उववाई)

९ साधु ना समुदाय ने गण संघ कह्यो।

(भगवती श० ८ उ० ८)

१० सावद्य व्यावच पर भिक्षुगणिराज कृत वार्तिका कहै छै ।

११ साधु नी अर्श छेदे तिण वैद्य ने क्रिया कही ।

(भगवती श० १६ उ० ३)

१२ साधु अन्य तीर्थी तथा गृहस्थ पासे अर्श छेदावै तथा कोई अनेरा साधुनो अर्श छेदतां अनुमोदै तो मासिक प्रायश्चित आवै ।

(निशीथ उ० १५ बोल ३१)

१३ साधु रो गूमड़ो गृहस्थ छेदै तो साधु ने मने करी अनुमोदनो नहीं तथा वचन अने काया करी करावै नहीं ।

(आचारांग श्रु० २ अ० १३)

विनयाऽधिकारः ।

१ दोय प्रकार नो विनय मूल धर्म कह्यो साधु ना पञ्च महाव्रत ते साधु नो विनयमूल धर्म अने श्रावक ना १२ व्रत तथा ११ पड़िमा ते श्रावक नो विनयमूल धर्म ।

(ज्ञाता अ० ५)

२ पांडुराजा अने पांच पाण्डव माता कुन्तां सहित नारद से विप्रदक्षिणा देई वन्दना नमस्कार कियो। घणो विनय कियो।

(ज्ञाता अ० १६)

३ जिम पांडु नारद नो विनय कियो तिमहिज कृष्ण पिण नारद नो विनय कियो।

(ज्ञाता अ० १६)

४ साधु गृहस्थादिक ने वांदतो थको अशनादिक जाचै नहीं।

(दशवैकालिक अ० ५ उ० २ गा० २६)

५ अम्बड़ ने चेला धर्माचार्य कह्यो नमोत्थुणं गुण्यो।

(उववाई अ० १३)

६ धर्माचार्य साधु ने कह्या।

(राय प्रसेणी)

७ भरत चक्रवर्ती चक्र रत्न ने नमस्कार कियो।

(जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति)

८ तीर्थङ्कर जन्म्या ते द्रव्य तीर्थङ्कर ने इन्द्र नमोत्थुणं गुण नमस्कार करै।

(जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति)

९ इन्द्र एहवूं कह्यो जे तीर्थङ्कर नी जन्म महिमा करूं ते म्हारो जीत आचार छै पिण ये महिमा धर्म हेतु करूं इम नथी कह्यो।

(जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति)

१० तीर्थङ्कर नी माता ने इन्द्र प्रदक्षिणा देई नमस्कार करै ।

(जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति)

११ अरिहन्तादिक पांच पदांनेंज नमस्कार करवो कह्यो ।

(चन्द्र प्रज्ञप्ति गा० २)

१२ सर्वानुभूति अणगार गोशाले ने श्रमण माहण नो हिज विनय करवा कह्यो ।

(भगवती श० १५)

१३ अठारह पाप सूं निवर्ते तेहने माहण कह्यो ।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० १६)

१४ माहण नाम साधुरोहिज कह्यो ।

(सूयगडांग श्रु० २ अ० १)

१५ त्रस स्थावर त्रिविधे २ न हणे तेहने माहण कह्यो तथा और भी अनेक लक्षण माहणना बताया ।

(उत्तराध्ययन अ० २५ गां० १६ से २६ तांई).

१६ समण माहण सर्व अतिथि नो नाम कह्यो ।

(अनुयोग द्वार)

१७ श्रावक ने एतला नामे करी बोलाणो कह्यो— हे श्रावक ! हे उपाशक ! हे धार्मिक ! हे धर्म-प्रिय ! एहवा नामा करी बोलावणो कह्यो ।

(अचाराङ्ग श्रु० २ अ० ४ उ० १।

पुण्याऽधिकारः ।

१ परलोक ने अर्थे तप नहीं करवो ।

(दशवैकालिक अ० ६ गा० ४)

२ गाढ़ा पुण्य न करे तो मरणान्ते पश्चाताप करे ।

(उत्तराध्ययन अ० १३ गा० २१)

३ पुण्यपद सांभली भरत चक्रवर्ती दीक्षा लीधी ।

(उत्तराध्ययन अ० १८ गा० ३४)

४ अकृतपुण्य ना धणी धर्म सांभली प्रमाद करे ते संसार में भ्रमण करे ।

(प्रश्न व्याकरण अ० ५)

५ यश नो हेतु तप संयम कह्यो ।

(उत्तराध्ययन अ० ३ गा० १३)

६ आत्मा ने अयश अर्थात् असंयम करी जीव नरक में उपजे ।

(भगवती श० ४१ उ० १)

७ नरक ना हेतु ने नरक कही ।

(उत्तराध्ययन अ० ६ गा० ८)

८ मृग सरिसा अज्ञानी ने मृग कह्यो ।

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० ५)

आस्रवाऽधिकारः ।

१ पञ्च आस्रव द्वार कह्या ।

(ठाणाँग ठा० ५ तथा समवायाङ्ग स० ५)

(क) तथा मिथ्यादृष्टि ने अरूपी कही ।

(भगवती श० १२ उ० ५)

२ पञ्च आस्रव ने कृष्ण लेश्या ना लक्षण कह्या ।

(उत्तराध्ययन अ० ३४ गा० २१-२२)

३ सम्यक् अने मिथ्यात्व ने जीव क्रिया कही ।

(ठाणाँग ठा० २ उ० १)

४ दश प्रकार नो मिथ्यात्व कह्यो ।

(ठाणाँग ठाणे १०)

५ अठारह पाप में वर्तें तेहिज जीव अनें तेहिज जीवात्मा कही ।

(भगवती श० १७ उ० २)

६ जीव अजीव परिणामी रा दश २ भेद कह्या ।

(ठाणाँग ठा० १०)

७ कषाय, जोग, दर्शन ए आत्मा कही ।

(भगवती श० १२ उ० १०)

८ उदय निष्पन्न रा तेतीस बोलां ने जीव कह्या ।

(अनुयोग द्वार)

९ उत्थानादिक ने अरूपी कह्या ।

(भगवती श० १२ उ० ५)

१० क्रोधादिक ने भाव संयोगी कह्या।

(अनुयोग द्वार)

११ क्रोधादिक ने भाव लाभ कह्यो।

(अनुयोग द्वार)

१२ अकुशल मनने रूंधवो कह्यो।

(उववाई)

१३ माठा भाव थी ज्ञानादिक खपे।

(अनुयोग द्वार)

१४ आस्रव ने, मिथ्या दर्शनादिक ने जीवरा परिणाम कह्या

(ठाणांग ठा० ६)

सम्वराऽधिकारः।

१ पंच सम्बर द्वार प्ररूप्यां।

(ठाणाङ्ग ठा० ५ उ० २ तथा समवायाङ्ग स० ५)

२ जीव रा ज्ञानादिक छव लक्षण कह्या।

(उत्तराध्ययन अ० २८ गा० ११-१२)

३ चारित्र ने जीव गुण परिणाम कह्या।

(अनुयोग द्वार)

४ सम्वर ने आत्मा कही।

(भगवती श० १ उ० ६)

५ अठारह पाप ना विरमण ने अरूपी कह्यो ।

(भगवती श० १२ उ० ५)

६ अठारह पाप ना विरमण ने जीव द्रव्य कह्यो ।

(भगवती श० १८ उ० ४)



जीव भेदाऽधिकारः ।

१ विशिष्ट अवधि रहित ने असंज्ञीभूत कह्यो ।

(पन्नवणा पद १५ उ० १)

२ नन्हा बालक तथा बालिका ने असंज्ञीभूत कह्या ।

(पन्नवणा पद ११)

३ आठ सूक्ष्म कह्या ।

(दशवैकालिक अ० ८ गा० १५)

४ तेउ वाउ ने त्रस कह्या ।

(जीवाभिगम प्रश्न १)

५ सम्मूर्च्छिम मनुष्य ने पर्याप्ता अपर्याप्ता बिहुं नामे करी बोलाव्यो ।

(अनुयोग द्वार)

६ असुर कुमार ने उपजती वेलां बे वेद कह्या ।

(भगवती श० १३ उ० २)



आज्ञाऽधिकारः ।

१ वीतराग ना पग थकी जीव मुवां ईर्यावहि क्रिया कही ।

(भगवती श० १८ उ० ८)

२ सम्यक् मानता ने असम्यक् पिण सम्यक् हुइ ।

(आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ५ उ० ५)

(क) तीन उदक ना लेप लगावे तिणने सबलो दोष कह्यो ।

(दशाश्रुतस्कन्ध अ० २)

३ पांच मोटी नदी एक मास में बे वार अथवा तीन वार उतरवो कल्पे नहीं ।

(बृहत्कल्प उ० ४)

४ साधु ने नदी उतरवो कह्यो ।

(आचाराङ्ग श्रु० २ अ० ३ उ० २)

५ पाणी में डूबती थकी साध्वी ने साधु बाहिर काढे तो आज्ञा उलंघे नहीं ।

(बृहत्कल्प उ० ६)

६ रात्रि में सिझायदिक ने अर्थे बाहिर जावणो कल्पे ।

(बृहत्कल्प उ० १)

—:—

शीतल आहाराऽधिकारः ।

१ ठण्डो आहार भोगवणो कह्यो ।

(उत्तराध्ययन अ० ८ गा० १२)

२ भगवन्त ठण्डो आहार लीधो कह्यो ।

(आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ६ उ० ४)

३ धन्ने अणगार न्हाखितो आहार लियो ।

(अनुत्तर उववाई)

४ अरस निरस तथा शीतलादिक आहार भोगवो । साधु ने ते पच्चक्खाण करिवो ।

(प्रश्न व्याकरण अ० १६)

सूत्र पठनाऽधिकारः ।

१ साधु ने दूजा सूत्र भणवा री आज्ञा दीधी

(प्रश्न व्याकरण अ० ७)

२ साधु सूत्र भणे तिण री मर्यादा कही ।

(व्यवहार उ० १०)

३ अन्य तीर्थी ने तथा गृहस्थी ने साधु सूत्र रूप वांचणी देवै तथा देता ने अनुमोदै तो प्रायश्चित कह्यो ।

(निशीथ उ० १९)

४ आचार्य उपाध्याय नी अवदोधी वांचणी ग्रहै, तो प्रायश्चित कह्यो।

(निशीथ उ० १६)

५ तीन जणा वांचणी देवा अयोग्य कह्या।

(ठाणाङ्ग ठा० ३ उ० ४)

६ श्रावकां ने अर्थ रा जाण कह्या।

(उववाई प्रश्न २०)

७ निग्रन्थ ना प्रवचन ने सिद्धान्त कह्या।

(सूयगडांग श्रु० २ अ० २)

८ साधुने इज शुद्ध धर्म ना प्ररूपणहार कह्या।

(सूयगडाङ्ग श्रु० १ अ० ११ गा० २४)

९ अभाजन ने सूत्र सिखावे त्याने अरिहन्त नी आज्ञा ना उलङ्घनहार कह्या।

(सूर्य प्रज्ञप्ति पाहु० २०)

१० अर्थ ने पिण 'सूत्र धर्म' कह्यो।

(ठाणाङ्ग ठा० २ उ० १)

११ सूत्र आश्री तीन प्रत्यनीक कह्या।

(भगवती श० ८ उ० ८)

१२ पंचेन्द्रिय ना उपयोग ने श्रुत कह्यो।

(पन्नवणा पद २३ उ० २)

१३ भावश्रुत ना १० नाम पर्यायवाची कह्या।

(अनुयोग द्वार)

निरवद्य क्रियाऽधिकार ।

१ अठारह पाप सूं निवर्त्यां कल्याणकारी कर्म बंधे ।

(भगवती श० ७ उ० १०)

२ वन्दना करता नीच गोत्र खपावे ।

(उत्तराध्ययन अ० २६ बोल १०)

३ धर्मकथा सूं शुभ कर्म बन्धे ।

(उत्तराध्ययन अ० २६ बोल २३)

४ व्यावच्च कियां तीर्थंकर गोत्र बंधे ।

(उत्तराध्ययन अ० २६ बोल ४३)

५ तीन प्रकार शुभ दीर्घायु बंधे ।

(भगवती श० ५ उ० ६)

६ दश प्रकार कल्याणकारी कर्म बंधे ।

(ठाणाङ्ग ठाणे १०)

७ अठारह पाप सेयां कर्कश वेदनीय कर्म बंधे अने
१८ पाप सूं निवर्त्यां अकर्कश वेदनीय कर्म बंधे ।

(भगवती श० ७ उ० ६)

८ बीस बोलां करी तीर्थंङ्कर गोत्र बन्धे ।

(ज्ञाता अ० ८)

९ प्राण, भूत, जीव, सत्व ने दुःख न दियां साता
वेदनी कर्म बन्धे ।

(भगवती श० ७ उ० ६)

१० आठ कर्म निपजावा नी करणी जुदी २ कही।

(भगवती श० ८ उ० ६)

११ धर्म रुचि अणगार ने तुम्बो परठवा नी आज्ञा दीधी।

(ज्ञाता अ० १६)

१२ भगवान साधां ने गोशाले सूं चर्चा करने की आज्ञा दीधी तथा सर्वानुभूति ने विनीत कह्यो।

(भगवती श० १५)

१३ गुरु नीं आज्ञा आराधे तिण ने विनीत कह्यो।

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० २)

—:—

निग्रन्थाहाराऽधिकार।

१ साधु प्राशुक आहार भोगवे तो ७ कर्म ढीला पाड़े।

(भगवती श० १ उ० ६)

२ ज्ञान दर्शन चारित्र वहवा ने अर्थे साधु आहार करे।

(ज्ञाता अ० २)

३ साधु मोक्ष ने अर्थे आहार करे।

(ज्ञाता अ० १८)

४ साधु जयणा सूँ आहार करै तो पाप कर्म बंधै नहीं ।

(दशवैकालिक अ० ४ गा० ८)

५ साधु ना आहार नी वृत्ति असावद्य कही ।

(दशवैकालिक अ० ५ उ० १ गा० ६२)

६ निर्दोष आहार ना लेवणहार तथा देवणहार दोनों शुद्ध गति में जावे ।

(दशवैकालिक अ० ५ उ० १ गा० १००)

७ छव स्थानकें करी साधु आहार करे तो आज्ञा उलंघे नहीं ।

(ठाणाङ्ग ठा० ६)

निर्ग्रन्थ निद्राऽधिकार ।

१ साधु रे यत्नाइं करी सोवतां पाप बन्धै नहीं ।

(दशवैकालिक अ० ४ गा० ८)

२ 'सुत्ते' नाम निद्रावन्त नो छै ।

(दशवैकालिक अ० ४)

३ कांइक सुतो कांइक जागतो स्वप्न देखै ।

(भगवती श० १६ उ० ६)

४ अभिग्रह धारी साधु तीजी पोरसी में निद्रा सूवे ।

(उत्तराध्ययन अ० २६ गा० १८)

५ पाणी ने किनारे निद्रादिक कार्य करना कल्पै नहीं।

(वृहत्कल्प उ० १ बोल १६)

६ अन्तर घर में निद्रा लेणी कल्पै नहीं।

(वृहत्कल्प उ० ३ बोल २१)

७ साधु ने भाव निद्राइं करी जागतो कह्यो।

(आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ३ उ० १)

—:—

एकाकि साधु-अधिकारः।

१ ग्रामादिक का घणा निकाल पैसार हुवै तिहां घणा आगमना जाण बहुश्रुति ने पिण एकाकि पणे न कल्पै।

(व्यवहार उ० ६)

२ ग्रामादिक तथा सरायादिक ने विषै घणा निकाल पैसार हुवै तिहां अगडसुया ते निशीथ ना अजाण त्यांने एकाकि पणे न कल्पै।

(व्यवहार उ० ६)

३ ग्रामादिक ना जुदा २ निकाल हुवै तिहां साधु साध्वी ने भेलो रहिवो कल्पै।

(वृहत्कल्प उ० १ बोल ११)

४ एकलो रहै तिण में आठ दोष कह्या ।

(आचारांग श्रु० १ अ० ५ उ० १)

५ सूत्र अने वय करी अव्यक्त तेह ने एकाकि पणो कल्पै नहीं । तथा सूत्र अने वय करी व्यक्त छै तिण ने पिण गुरु नी आज्ञा सूं एकाकि पणो कल्पै पिण आज्ञा विना कल्पै नहीं ।

(अचाराङ्ग श्रु० १ अ० ५ उ० ४)

६ आठ गुणसहित ने एकल पड़िमा योग्य कह्यो श्रद्धा में सैंठो १ देव डिगायो डिगै नहीं २ सत्य-वादी ३ मेधावी (मर्यादावान) ४ वहुस्सुये (नवमा पूर्वनो तीन वत्थु नो जाण) ५ शक्तिवान ६ कलहकारी नहीं ७ धैर्यवन्त ८ उत्साह वीर्यवन्त ।

(ठाणांग ठाणै० ८)

७ साधु अने श्रावक बिहुं ने धर्मना करणहार कह्या वलि साधु अने श्रावक ने 'सुव्वया' कह्या ।

(उववाई प्रश्न २०-२१)

८ घणा साधां में पिण विकाले तथा रात्रि में एकला ने दिशा न जाणो ।

(वृहत्कल्प उ० १ वोल ४७)

९ जे ज्ञानादिक ने अर्थे गुरुवादिक नी सेवा करै तो गच्छ मध्यवर्ती साधु निपुण सखाइयो वांछे ।

(उत्तराध्ययन अ० ३२)

१० राग द्वेष ने अभावे एकलो ऊभो रहै पिण भिख्यारथां ने उलङ्घी न जाय।

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० ३३)

११ रागद्वेष ने अभावे एकलो कह्यो।

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० १०)

१२ जे हूं रागद्वेष ने अभावे ज्ञानादि सहित एकलो विचरस्यूं इम विचारी दीक्षा लेवे।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० ४ उ० १ गा० १)

१३ घर छांडी रागद्वेष ने अभावे एकलो विचरै।

(उत्तराध्ययन अ० १५ गा० १६)

१४ तीन मनोरथ में चिन्तवे जे किवारे हूं एकलो थई दशविधि यति धर्म धारी विचरस्यूं तेह नो न्याय।

१५ गुरु कह्यो—हे शिष्य! तोने एकलपणो म होज्यो।

(आचारांग श्रु० १ अ० ५ उ० ४)

उच्चार पासवणाऽधिकारः।

१ बड़ी नीति या लघु नीति परठी ने वस्त्रे करी पूंछे नहीं तथा पूंछता ने अनुमोदे नहीं, तो प्रायश्चित कह्यो।

(निशीथ उ० ४ बोल ३७)

२ उच्चार-पासवण परठी काष्टादिके करी पूंछ्यां प्रायश्चित ।

(निशीथ उ० ४ बोल १३८)

३ उच्चार पासवण परठी ने शुचि न लेवै अथवा तठेई उच्चार ऊपर शुचि लेवे अथवा अति दूर जाई शुचि लेवै तो प्रायश्चित आवै ।

(निशीथ उ० ४ बोल १३६ से १४१)

४ दिवसे तथा रात्रि तथा विकाले मोला ना पात्रे तथा अनेरा साधु ने पात्रे उच्चार पासवण परठवी सूर्य रो ताप न पहुंचे तिहां न्हाखे तो दण्ड आवै ।

(निशीथ उ० ३ बोल ८२)

५ धन्नो सार्थवाह विजय चोर साथे एकान्ते जाई उच्चार पासवण परठ्यो कह्यो ।

(ज्ञाता अ० २)

कवितोऽधिकारः ।

१ तीर्थङ्कर ना जेतला साधु हुई ते ४ बुद्धिई करी तेतला पइन्ना करै ।

(नन्दी-पञ्चज्ञान वर्णन)

२ मतिज्ञान ना दोय भेद १ श्रुत निश्रित २ अश्रुत निश्रित। तिहां जे सूत्र विना ही ४ बुद्धिइं करी सूत्र सूं मिलतो अर्थ ग्रहण करै, सूत्र विना ही बुद्धि फैलावे ते अश्रुत निश्रित मतिज्ञान नो भेद कह्यो छै। वली कह्यो पूर्व्वे दीठो नहीं सुण्यो नहीं ते अर्थ तत्काल ग्रहण करै ते उत्पात नी बुद्धि अश्रुत निश्रित मतिज्ञान नो भेद कह्यो।

(साख सूत्र नन्दी)

३ जे भारत रामायणादिक मिथ्या दृष्टि ना कीधा ते मिथ्या दृष्टि रे मिथ्यात्व पणे ग्रह्या अने सम्यग्दृष्टि रे सम्यक्त पणे ग्रह्या।

(साख सूत्र नन्दी)

४ च्यार प्रकार ना काव्य कह्या १ गद्यबन्ध २ पद्य-बन्ध ३ कथाकरी ४ गायवेकरी।

(ठाणांग ठा० ४ उ० ४)

५ गाथाइं करी वाणी करी, वाणी कथी एहवुं कह्यो।

(उत्तराध्ययन अ० १३ गा० १२)

६ बाजा रै लारै ताल मेलो गायां दण्ड कह्यो।

(निशीथ उ० १७ बोल १४०)



अल्पपाप बहु निर्जराऽधिकारः ।

१ जे श्रावक साधु ने सचित अने असूझतो देवे, तो अल्प पाप बहु निर्जरा हुवै तेह नो न्याय ।

(भगवती श० ८ उ० ६)

२ साधु ने अप्राशुक अणेषणीक आहार दीधां अल्पायुष बान्धै ।

(भगवती श० ५ उ० ६)

३ साधु रे अशुद्ध आहार अभक्ष कह्यो ।

(भगवती श० १८ उ० १०)

४ श्रावक ने प्राशुक एषणीक ना देवणहार कह्या ।

(उववाई प्रश्न २०)

५ आनन्द श्रावक कह्यो कल्पै मुझ ने श्रमण निग्रन्थ ने प्राशुक एषणीक अशनादिक देवो ।

(उपासक दशा अ० १)

(क) आधा कर्मी अने असूझतो आहार ए निर्वद्य छै एहवो मन में धारै तथा प्ररूपै ते बिना आलोयां मरै तो विराधक कह्यो ।

(भगवती श० ५ उ० ६)

(ख) जे श्रावक प्राशुक एषणीक अशनादिक साधुने देई समाधि उपजावे, तो पाछो समाधिपावै ।

(भगवती श० ७ उ० १)

६ शुद्ध व्यवहार करी ने आधाकर्मी लियो निर्दोष जाणी ने तो पाप न लागे।

(सूयगडांग श्रु० २ उ० ५ गा० ८-६)

(क) वीतराग जोयर चाले तेहथो कुक्कुटादिक ना अण्डादिक जीव हणीजे तेह ने पिण पाप न लागे। पुण्य नी क्रिया लागे शुद्ध उपयोग माटे।

(भगवती श० १८ उ० ८)

(ख) साधु ईर्याइ करी चालतां जीव हणीजे तो तेह ने पिण पाप न लागे। हणवारो कामी नहीं ते माटे।

(आचाराङ्ग श्रु० १ अ० ४ उ० ५)

७ अल्प (नहीं) वर्षा में भगवान विहार कीधो।

(भगवती श० १५)

८ अल्प प्राणी बीज छे जिहां ते स्थानके साधु ने आहार करवो।

(उत्तराध्ययन अ० १ गा० ३५)

६ अल्प प्राण बीजादिक होवे तिण स्थान के शुद्ध करी आहार करवो।

(आचाराङ्ग श्रु० २ अ० १ उ० १)

१० साधु रे अर्थे कियो उपाश्रयो भोगवे तो महा-सावद्य क्रिया लागे। दोय पक्ष रो सेवणहार कह्यो

अने गृहस्थ पोता रे अर्थे कीधो उपाश्रयो साधु भोगावे तो एक शुद्ध पक्ष रो सेवणहार कह्यो अने अल्प सावद्य क्रिया कही ।

(आचाराङ्ग श्रु० २ अ० २ उ० २)

—:—

कपाटाऽधिकारः ।

१ किमाड़ सहित स्थानक मन करी ने पिण वांछणो नहीं ।

(उत्तराध्ययन अ० ३५)

२ थोड़ो उघाड्यो पिण किमाड़ घणो उघाड्यो हुवे तेह ने पिण "मिच्छामि दुक्कडं" देवे ।

(आवश्यक अ० ४)

३ जागां न मिलै तो सूना घरने विषे रह्यो साधु किमाड़ जड़े उघाड़े नहीं ।

(सूयगडांग श्रु० १ अ० २ उ० २ गा० १३)

४ कण्टक बोंदिया ते कांटा नी साखा करी बारणो ढक्यो हुवे तो धणी नी आज्ञा मांगी ने पूंजकर द्वार उघाड़णो ।

(आचाराङ्ग श्रु० २ अ० १ उ० ५)

५ एहवो स्थानक साधु ने रहिवो नहीं जे उपाश्रय माहीं लघु नीति तथा बड़ी नीति परठण री

जागा न हुवे अने गृहस्थ बारला किमाड़ जड़ता हुवे तिवारे रात्रि ने विषे अबाधा पीड़तां किमाड़ खोलना पड़े ते खुला देखि मांहे तस्कर आवै बतायां न बतायां अवगुण उपजता कह्या सर्व दोष में प्रथम दोष किमाड़ खोलने को कह्यो तिण कारण साधु ने किमाड़ खोलनो पड़े एहवे स्थानके रहिवो नहीं ।

(आचारांग श्रु० २ अ० २ उ० २)

६ साध्वी ने उघाड़े बारने रहिवो नहीं किमाड़ न हुवे तो पोता नी पछेवड़ी बांधी ने रहिवो. पिण उघाड़े बारने रहिवो नहीं कल्पै शीलादि निमते किमाड़ जड़वो अने साधु ने उघाड़े बारने रहिवो कल्पै।

(वृहत्कल्प उ० १)

॥ इति सम्पूर्णम् ॥




ओसवाल प्रेस।
१६, सीनागोग स्ट्रीट
कलकत्ता।